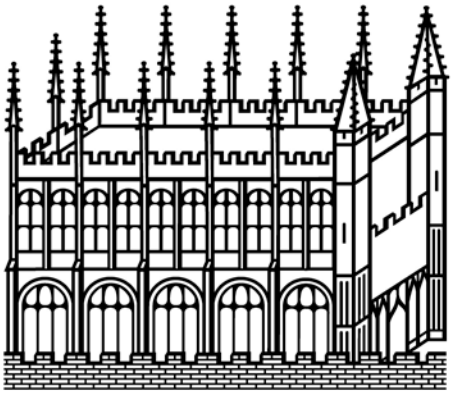

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.66. Hindi Hit 5

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

(تقدمة.

Rājatarāṅgiṇī.

Rajneet

राजनीतिभाषा

راج نیت

जिसको

आगरे के रहनेवाले श्री लल्लूजी लाल कवि सहस्र अवदीच गुजराती ब्राह्मण ने संस्कृत हितोपदेश का आशय लेकर ब्रजभाषा बोली में बनाया

जिसमें

पांच भांति की कथा मित्रलाभ अर्थात् प्रीति कराने की रीति सुहृद्भेद अर्थात् स्नेह छुड़ाने की भाँति विग्रह अर्थात् युद्ध कराने की चाल संधि अर्थात् मिलाप कराने की युक्ति लब्ध प्रनाश अर्थात् वस्तु पाकर उस के खो देने का फल।

बर्णीत है॥

दूसरी बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

दिसम्बर सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से लगाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती देंगे। जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छपे रखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम पत्र भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	विष्णु पुराण भाषा
महाभारत	अलेहदा भी हैं	रामायण सटीक मय	लिंग पुराण
१- पहिले हिस्से में	१- आदिपर्व्व	मानसदीपिका कोष	ब्रह्मोत्तर खण्ड
आदि पर्व्व सभा पर्व्व बन पर्व्व	२- सभापर्व्व	आदि	रस ऋषि
२- दूसरे हिस्से में	३- बनपर्व्व	तथा जिल्द बंधी	रस चंद्रोदय व सुदामा च०
विराट पर्व्व उद्योग	४- बिराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	श्री अनुराग रस
पर्व्व भीष्म पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	कृष्ण गीतावली
द्रोण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृ-	नाटक
३- तीसरे हिस्से में	७- द्रोण पर्व्व	त सातों काण्ड	प्रबोध चन्द्रोदय
कर्ण पर्व्व शल्य प-	८- कर्ण पर्व्व	१- बालकाण्ड	रामाभिषेक
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	९- शल्य पर्व्व व	२- अयोध्याकाण्ड	आनंद रघुनंदन
क पर्व्व स्त्री शोशिक प-	गदा पर्व्व सौप्तिक	३- आरण्य काण्ड	वेदान्त
र्व्व विशोक पर्व्व	पर्व्व मय योशिक	४- किष्किन्धा काण्ड	योग वाशिष्ठ
शान्ति पर्व्व राज	व विशोक व स्त्री पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड	आनंद भक्त वर्षिणी
धर्म्म आपद् धर्म्म	१०- शान्ति पर्व्व	६- लङ्का काण्ड	सांख्य तत्व कौमुदी
मोक्ष धर्म्म ४- चौथे	राजधर्म्म व आपद्	७- उत्तर काण्ड	काव्य
हिस्से में शान्ति पर्व्व	धर्म्म व मोक्ष धर्म्म	रामायण शब्दार्थ को	सूरसागर
दान धर्म्म अश्वमेध	व दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	कृष्ण सागर
आश्रमवासिक मुशल	११- अश्वमेध आश्र-	रामायण मानसदीपि-	विश्राम सागर
पर्व्व महाप्रस्थान स्व-	मवासिक मुशल	रामायण कवितावली	प्रेम सागर
र्गारोहण पर्व्व हरि	पर्व्व महाप्रस्थान स्व-	रामायण गीतावली	ब्रजविलास बड़ा व छोटा
वंश पर्व्व रामायण	र्गारोहण	सटीक	कृष्ण प्रिया
रामविलास	१२- हरिवंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा-	विनय मुक्तावली
		विनय पत्रिका बा-	ब्रजभूषण

भूमिका

प्रकट होय कि एक समय श्री युत महाराजाधिराज गुरु[illegible]ा-
हक ज्ञानगिलक्रस्त प्रतापी की आज्ञा से श्री लल्लूजीलालकवि
सहस्र अवदीच गुजराती ब्राह्मण आगरेवाले ने श्री नारायण।
पण्डित रचित संस्कृत हितोपदेश की नीति कथा का आशय।
लेकर ब्रज भाषा में राजनीति नाम ग्रन्थ बनाय महाराजाधिराज
सकल गुण निधि लार्ड मिराटो तेजस्वी के राज्य में गुण ज्ञाता।
उपकारी कप्तान् जान विलियम् टेलर नक्षत्री की आज्ञा से और
श्री मान् स्यायुत डाक्टर विलियम् हराटर साहिब की सहायता
और लेफ्टिनेराट एब्रहाम लाकिट रतीवन्त की अनुमति से निज
यन्त्रालय में छपवाया उसी को श्री युत महाशय विद्वच्छिरोमणि
हाल साहब ने इङ्गलण्डीय विद्या रसिकों को ब्रजभाषा के उद्धा-
रार्थ इङ्गलंडीय भाषा में कठिन शब्दों का कोष और परिभाषा।
सहित रचना कर प्रयागराज के मिशन यन्त्रालय में मुद्रित कराया
अब श्री युत विद्या गुण ग्राहक विद्वद्वृन्द शिरोमणि महाराजा
धिराज कौलिन् ब्रौनिङ्ग साहब एम० ए० अवधदेशीय डेरेक्टर।
वीरेश ने इङ्गलण्डीय विद्यानुरागियों को ब्रजभाषा में अधिक।
श्रम और उद्धार कराने के निमित्त कोष को घटाय बढ़ाय हिन्दी
भाषा में ही रचना कर मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रित
कराया निश्चय है कि अवधदेशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों
को राजनीति और संसारीय व्यवहारों में अति उपयोगी हो॥

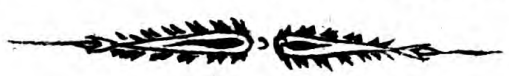

श्रीयुत हाल साहब कृत परिभाषा

१ शम्भु – शिवजी का नाम है ।

२ सहस्र अवदीच – ये गुजराती ब्राह्मणों का उपनाम है कि इन लोगों ने सहस्र अर्थात् हज़ार पुरुषाओं से सरस्वती नदी के पश्चिमोत्तर देशों को परित्याग कर गुजरात का निवास अङ्गीकार किया ।

३ कीन या कीनो अर्थात् कियो या करयो ।

४ भगवान् हरि वा बिष्णु ।

श्रीगणेशायनमः

राजनीति

दोहा

राज मुरख सुखदात जग त दुख दाहक गुणईश
पूरण अभिलाषा करौ शम्भू सुतजगदीश ॥

काहूसमय श्री नारायण पण्डित ने नीति शास्त्रनि तें कथानि का संग्रह करि संस्कृत में एक ग्रंथ बनाय वाको नाम हितोपदेश धर्यो। सो अब श्रीयुत महाराजाधिराज पारक्ष सुजान सब गुणवान भागवान कृपानिधान मारक्विस वलिस्ली गवर्नर जनरल महावली के राज में श्री श्री महाराज गुणवान अति जान जान गिलक्रस्त प्रतापी की आज्ञा सों सम्वत १८५८ में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वारे ने वाको आशय लै ब्रज भाषा करि नाम राजनीति धर्यो॥

दोहा

पंडित हैं ते जानिहैं कथा प्रसंग प्रवीन ॥ ॥
मूरख मन में मानिहैं लाल कहा यह कीन ॥

अरु सम्वत १८६५ मोहिं श्री महाराजानि के राज सकल गुणनिधान ज्ञानवान् जगत उजागर दया सागर प्रजापालक गिलवर्ट लार्ड मिन्टो तेजस्वी के राज्य मध्य अरु श्री निपट

गुण ज्ञाता महादाता उपकारी हितकारी कप्तान् जान विलियम टेलर् नक्षत्री की आज्ञा सों श्री श्रीमान् धीमान् दया युत डाक्तर् विलियम् हंटर् सहायक की सहायता तें अरु श्री बुद्धि वान् सुखदान् लिपटेन् एब्राहाम् लाकट् रती वंत के कहे सों वाही कवि ने राजनीति ग्रंथ छपवायो पाठशालाके विद्यार्थी साहिबनि के पढ़वे कों ॥

दोहा

ब्रजभाषा भाषत सकल सुरवाणीसमतूल ॥ ॥
ताहि बखानतु सकल कविजानि महा रस मूल

या राजनीति के पढ़े सुनेतें मनुष्य ब्रजभाषा में निपुरा होंय अरु जितेक संसार के व्योहार की बातें हैं तिन माँहिं प्रबीरा॥

प्रथम वा ग्रंथ में ऐसें लिखयो है कि जे चतुर हैं ते आपकों अजर अमर समान जानि विद्या अरु धन की चिंता करतु हैं। अरु जैसें काहू की चोटी काल गहे होय ऐसो समझ वे धर्म करतु हैं। पुनि ऐसें कह्यो है कि सब पदार्थनि में विद्या रूपी पदार्थ उत्तम है क्योंकि अहार की देनवारी पुराय मार्ग की दिखावनहारी अरु सदा चतुराई की दाता है जाको भागी भाग न ले सके अरु मोल नाहीं क्षय नाहीं। यह गुप्त धन है याकों चोर ठग राजा छल करि न ले सकै। विद्या देति है नम्रता नम्रता पाये भयो सुपात्र सुपात्र भये मिलतु है धन धन मिले करतु है धर्म धर्म तें सुखी रहतु है। अरु जैसें नदी नीर कों समुद्र लौं पहुंचावे तैसें विद्या हू नर कों राजा तक ले जाय। आगे जैसो वाको कपार में लिख्यो होय तैसो फल मिलै। शास्त्र विद्या औ शास्त्र विद्या ये दोऊ जगत में

उच्चपद की दैनवारी हैं। पर वृद्ध अवस्था में शास्त्र विद्या कौं देखि लोग हँसतु हैं अरु शास्त्र विद्या तें अधिक प्रतिष्ठा होतु है। नातें बाल अवस्था तें लै वृद्ध अवस्था लौं शास्त्र संग्रह। करनौं मनुष्य कौं उचित है क्योंकि जहां पण्डित प्रवेश करतु हैं तहां धनवान नाहीं जा सकतु। तासों बालकनि के नीति शास्त्र सिखवायवे कौं छल करि कथा कहतु हौं क्योंकि शास्त्र में प्रथम ही बालकनि कौ चित नाहीं लागतु। पुनि ऐसें हू कह्यौ है जो विद्या बाल अवस्था में सिखवाइये सो भूलति नाहीं जैसें माटी के कोरे पात्र में जो भरिये तादी कौ गुण लहै। याही तें पांच प्रकार की कथा करि कहतु हौं। पहिली मित्र लाभ कहैं प्रीति कराइबे की रीति। दूजी सुहृद्भेदक हैं स्नेह छुड़ायवे की भांति। तीजी विग्रह कहैं युद्ध करायवे की चालि। चौथी संधि कहैं मिलाप करायवे की युक्ति संग्राम तें पहिले होय कै पाछे। पांचवी लब्धप्रनाश कहैं एकबस्तु पाय करि हिरायदेनी।

ग्रंथ कथा प्रारम्भ

दोहा

कवि बासी गृह कूप कौ कथा अपार समंद॥ ॥
तैसी ये कछु कहतु हौं मति है जैसी मंद॥ ॥ ॥

श्री गंगा जू के तीर एक पटना नाम नगर। तहां सब गुण निधान महा जानपुणायवान सुदर्शन नाम राजा हो। वा ने एक दिन काहू पंडित तें दै श्लोक सुने। तिन कौ अर्थ यहु है कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै अरु गूढ़ अर्थनि कौं प्रकाशे। नातें सब की आँखि शास्त्र है। जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं सो आँधरो है। अरु तरुणापन धन प्रभुता

अविवेकता ये चारों एक एक अनर्थ की करनि हारी हैं। अरु जहां ये चारों होंय तहां न जानिये कहा होय। यह सुनि राजा आपने पुत्रनि की मूरखता देखि चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि ऐसे पुत्र भये कौन काम के। जे विद्या करि हीन अरु धर्म सों रहित ते पुत्र ऐसे जैसे कानी आँखि देखिवेकों तो नाहीं पर दूखनी आवे तो पीर करे। कह्यो है पुत्र ताही कों कहिये जाके जन्मे तें कुल की मर्य्याद होय। अरु यों तो संसार में मरकै को नाही उपजतुहै। पर सज्जन अरु विद्यावान जो पुत्र वंश में होतुहै सो पुरुष सिंह है। जैसे चन्द्रमातें आकाश शोभा पावतु है तैसें वा पुत्र सों कुल। जाको नाम गुरुजीन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यो गयो ताही की माता कों बाँझ कहतुहैं। अरु दान तप शूरता विद्या अर्थ लाभ में जिनको यश नाहीं भयो तिनकी माता ओं ने केवल जननवेही को दुःख पायो है पै पुत्र को सुख नाहीं देख्यो। कहतु हैं कि जिननि बड़े तीर्थनि में अति कठिन तप व्रत किये हैं तिनके सुत आज्ञा कारी धनवान पण्डित धर्मात्मा होतुहैं ये छह वस्तु संसार में सुखदायक हैं सदा धन की प्राप्ति शरीर आरोग्य स्त्री तें हित नारी मिठ बोली पुत्र आज्ञा कारी अरु विद्या तें लाभ॥

इतनों कहि पुनि राजा बोल्यो कि मेरे पुत्र गुणवान होंय तो भलो। यह सुनि कोऊ राज सभा में तें बोल्यो कि महाराज आयु कर्म वित्त विद्या अरु मरण ये पांच बात देह धारी कों गर्भही में सिरजी हैं। तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति जैसें श्री महादेव जू कों नग्न ता अरु श्रीभगवान कों सर्प पाख्या। तासों चिन्ता मति करो। जो तिहारे पुत्रनि

के कर्म में विद्या लिखी है तो विद्यावान होयगो। पुनि राजा कही यह तो सांच है पर मनुष्यकों परमेश्वरने हाथ अरु ज्ञान दयो है। सो विद्या साधन के अर्थ। जैसें एक चक्र को रथ न चले तैसें बिन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय। तातें उद्यम सदा करिये। कर्म कोई आसरो करि न बैठि रहिये। कह्यो है कि जैसें कुम्हार माटी लाय जो कछु धरयो चाहै सो करै तैसें नर हू आपने कर्म समान फल पावै कर्म तो जड़ है। वासों कछु न होय। उद्यम करना है। तासों करता कर्म कों पैदा करै भलो बुरो करता कर्म के संयोग तें होय। अरु केवल कर्म कोई आसरो करि बैठि रहनों कपूत को काम है। अरु जाके माता पिता सुत कों विद्या को उद्यम न करावें ते शत्रु जानिये। कह्यो है कि मूढ़ पुत्र पण्डितनि की सभा में शोभा न पावै जैसें हंसनि में बगुला न सोहै॥

आगे राजा नें यह बिचारि पण्डितनि को समाज करि कह्यो है पण्डितो तुम में कोऊ ऐसो पण्डित है जो मेरे पुत्रनि कों नीतिमार्ग को उपदेश दै नयो जन्म करै। कह्यो है जैसें काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय तैसें साधु की संगति में बुद्धि पाय मूरख हू पण्डित होय अरु नीच की संगति में नीच॥

दोहा

संगति कीजै साधु की हरै और की व्याधि॥
ओछी संगति नीच की आठौं पहर उपाधि॥

तहां राजा की बात सुनि विष्णु शर्मा वृद्ध ब्राह्मण सकल नीति शास्त्र को जान बृहस्पति समान बोल्यो कि महाराज राजकुमार तो पढ़ायबे योग्य हैं। अयोग्य कों विद्या न

दीजिये क्योंकि वह पढ़े तो सिद्ध न होय अरु जो सिद्ध होय तो अनीति विशेष करै। विद्या को गुण छांड़े औ गुण दृढ़ करि गांठि बांधे। तातें कुपात्र कौं न पढ़ाइये जैसें बिलाव कौं नवो नवो भोजन खवाइये तो हू बिलूरवे की घात न तजै। पुनि कोटि यतन करि बगुला कौं पढ़ाइये पर मुक्ता सो न पढ़ै। जो मुनि धर्म में निपुण होय तो हू माछरी मारवे की घात अधिक सीखै। महाराज तिहारे कुल में तो निगुणी बालक न होंय जो मनि मानिक की खानमें काच न उपजै। हम विद्या बेंचत नाहीं तुम तें कछु लेतु नाहीं। पर तुम्हारी प्रार्थना है यातें हौं तिहारे पुत्रनि कौं सहज स्वभाव ही छह महीना में नीति मार्ग में निपुण करि हौं॥

यह सुनि राजा वृद्ध ब्राह्मण विष्णु शर्मा तें बोल्यो अहो पुहुप की संगति तें देख्यो नान्हे कीट हू सज्जननि के माथे चढ़तु हैं। तातें तिहारि सत संग तें कहा न होय जैसे पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मानुष देवता करि पूजैं। पुनि उदयाचल पर्वत की वस्तु सूरज के उदे भये सर्व सूरज समानहीं तैसें सुसंग तें नीच कोहू प्रतिष्ठा होय॥

चौपाई

कीट भृंगि ऐसें उर अन्तर। मनस्वरूप करि देत निरन्तर॥
लोह हेम पारस के परसे॥॥ या जग में यह सरसे दरसे॥

दोहा

शेष गणेश व्यास मुनि कहतु न पावें पार॥॥
सो महिमा सत संग की कैसे कहै गंवार॥

तुम मेरे पुत्रनि कौं पण्डित करिबे योग्य हौ। ऐसे वा राजा ने बिनती करि ब्राह्मण कौं आपने पुत्र सौंपे। तब वह विप्र

राज पुत्रनि कौं लै एक ऊंचे मन्दिर में जाय बैठ्यो। कोऊ समें पाय कह्यो सुनौ महाराज कुमार॥

दोहा

काव्य शास्त्र आनन्द तें रसिकन के दिन जात॥
मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात॥॥

हौं मित्रलाभ की कथा कहतु हौं क्योंकि मित्रलाभ में लार बहुत है। एक दिन चित्र ग्रीव कपोत औ कछु आ हिरण्यरु मूसा ये परम मित्र हे। तिनके मिलन औ कर्म कहतु हौं कि जे असाध्य हैं निधनहैं पर बुद्धिवाननि तें उन सों प्रीतिहै तिन के काज ऐसे सिद्ध होतु हैं कि जैसें काग कछु आ हिरण्यमूसा के भये। यह सुनि राजकुमारनि कही यह कैसी कथा है। तहां विष्णु शर्म्मा कहतु है॥

गोदावरी नदी के तीर एक सेमल को रूख। तापै सबदिशा के पक्षी आय बिश्राम लेतु हैं। एक दिन प्रातही लघुपतनक नाम काग जाग्यो। वह एक काल रूप व्याधी कौं दूरतें आवतु देखि विचाय करि कहनि लाग्यो आज भोरही कौबेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देख्यो। सो न जानिये कहा होय। ऐसें बिचारि लघुपतनक काग उड़ि गयो। कह्यो है कि उतपात की ठाम पंडित चतुर न रहैं। मूरख भय सोग बैठ्यो सहै। इतेकमें व्याधी ने रूख तरे चांवर के कनिका डारि ता पर जाल पसार्यो। तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुम्ब समेत उड़त उड़त आय कह्यो। तिनमें तें एक पक्षी देखि बोल्यो इन चांवरनि कौं हौं चुग्यो चाहतु हौं। चित्र ग्रीव कही अरे या बनमें चांवर कहां तें आये। यह कछु कौतुक है। यातें ये मोकों नीके नाहीं लागतु। सुनौं जो तुम इन चांवरनि को लोभ

करिहौ तौ वैसें होयगी जैसें कंकरा के लोभ सों एक पथिक दहदल में फंसि बूढ़े बाघ को अहार भयो। यह सुनि पक्षियन कह्यो यह कैसी कथा है। तब चित्रग्रीव कपोत राज बोल्यो॥

हौं एक दिन बन में रह्यो। तहां यह देख्यो जु एक बूढ़ो बाघ पानी में न्हाय कुश हाथ में ले मारग में आय बैठ्यो। इतक में एक बटोही ब्राह्मण आय कह्यो। वा ने जब पंथ में नाहर बैठ्यो देख्यो तब भय खाय वहां हीं ठिठक्यो। याहि भयातुर देखि सिंह बोल्यो अहो देवता हौं जो गोल में बैठ्यो हौं सो पुण्य करनि के हेतु। अरु मो पास सोनां को कंकरा है। सो श्री कृष्णार्पन देतु हौं। तू ले। यह सुनि वा ने आपने मन में विचार्यो कि आज तो मेरो भाग जाग्यो दीसतु है। पर ऐसे संदेह में जैबो योग्य नाहीं क्योंकि बुरे तें भली बस्तु हू पाइये पै आगे दुख होय। जो अमृत में विष होय तो मारे ही मारे। पुनि ऐसेहू कह्यो है कि बिन कष्ट द्रव्य नाहीं आवतु अरु जहां कष्ट तहां फल है जैसें जहां माया तहां सांप अरु जहां पुष्प तहां कंटक। बिन दुख सहे सुख नाहीं यह बिचारि ब्राह्मण ने वा सों कही कहां है वह कंकना। वा नें हाथ पसारि दिखायो। तब विप्र कों लोभ आयो अरु बोल्यो अरे तू व्याधि को करनहारो। मैं तेरो विश्वास कैसें करौं। नाहर बोल्यो अहो एक तो मैं प्रातस्नान करि दाता होय बैठ्यो हौं। दूजे वृद्ध भयों तातें नख दांत अरु इन्द्रियन को बल हू नाहीं। अब मेरी प्रतीति क्यों न करै। कह्यो है यज्ञ वेद पाठ दान तप सत्य धीरज क्षमा निर्लोभ ये आठ प्रकार के धर्म कहे हैं ते पाखण्डी तें न होंय। हौं तो आपने अर्थ के लिये दियो चाहतु हौं। अरु बाघ मांस खातु है।

सो मेरे नाहीं। पर न जानतु है सो कहतु है जैसें कुटनी काहू कौं धर्म को उपदेश देतु तौहू लोकन मानें अरु ब्राह्मण हत्यारो हू मानिये। तातें तू सांचो है। मेरी देह बद्ध भई अरु या काया तें मैं बहुत पाप किये हैं। यह समझ सब पाप तज धर्म शास्त्र में पढ्यो अरु सुन्यों है। प्रानी कौं ऐसो चाहिये कि जैसो आपनो जीव प्यारो है तैसोही सब काहू को जानें। अरु चार प्रकार तें दान देतु हैं धर्मार्थ भयार्थ उपकारार्थ स्नेहार्थ। सो नाहिं। मैं केवल तोहि दुरवी जानि देतुहौं। श्रीकृष्ण चन्द्र ने हू राजा युधिष्ठिर तें कह्यो है कि। दान दरिद्री कौं दीजे तौ अधिक फल होय क्योंकि औषध। अरु पथ्य दुरवी कौं देतुहैं सुरवी कौं नाहीं। अरु जो देश काल पात्र देखि दान देतु हैं सो दान सात्विकी कहिये। तातें। ब्राह्मण तू सरोवर में न्हाय आओ सुच होय दान लै। वाकी बात सुनि लोभ को मार्यो ज्यों वह सरोवर में उतर्यो त्यों दों में फंस्यो। जब कीच तें पांव न काढ़ि सक्यो तब बाघ धीमें धीमें वाकी ओर चल्यो। ब्राह्मण कही अहो तुम काहे कौं आवतु हो। बाघ कही कि तू पानी में ठाढ़ो रह। तो पै। प्रयोग पढ़वाय कंकन दै स्वस्ति शब्द सुनौंगो। यह कहत कहत पास जाय वाकौं फंस्यो देखि नरहटी धरी। तब विप्र आपने मन में कहनि लाग्यो कि दुष्ट को धर्म शास्त्र वेद को पढ़ि बो कछु काम न आवे क्योंकि आपनो स्वभाव कोऊ नाहिं तजतु जैसें गाय को दूध स्वभाव ही तें मीठो होतु है कछु वाके खैबे पीबे तें नाहीं। अरु जाकी इन्द्री मन वश नाहीं ताकी क्रिया ऐसें जैसें हाथी को स्नान। उत न्हायो इति फेरि ज्यों की त्यों। तातें मैं भली न करी जो बाघ की प्रतीति करी। सब

आपने कुल व्यौहार तें चलतु हैं। जौ लौं यह विचार करै तौ लौं नाहर ने वाहि मारि भक्षणकियौ। तातें हौं कहतु हौं कि बिन बिचारे काम कबहू न करिये॥

कुंडलिया

बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताइ॥ ॥
काम बिगारै आपनो जगमें होत हंसाइ॥ ॥
जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै॥ ॥
खान पान सन्मान राग रंग मनहि न आवै
कहि गिरधर कबिराय दुःखकछुटरत न टारै
खटकत है जिय मांहिं कियौ जो बिना बिचारै

कह्यौ है पचायो अन्न पण्डित पुत्र पतिव्रतास्त्री सुभेवित राजा बिचार करि कहिवो अरु करिवो इन तें बिगार कबहू न उपजै। यह सुनि एक परेवा बोल्यो अहो या डोकरा की बातें आपदा में कहां लौं बिचारें। ऐसें संदेह करियै तौ भोजन करनौ हू न बनै कैांकि अन्न पानी में हू संदेह है। ऐसो। बिचार कर्यो करें तौ सुख सों जीवन हू न होय। कह्यौ है कि तृषावंत असंतोषी क्रोधी सदा संदेही जो औरके भरा की आश करै अति दयावंत ये छहौं सदा दुखी रहें। इतनी कहि वह परेवा चांवर चुगन उतर्यो। वाके माथ सब उतरे। तब चित्रग्रीव ने बिचार्यो कि इनकी लार जो होय सो। होय पर माथ छोडनौं उचित नाहीं। कह्यौ है मनुष्य अनेक शास्त्र पढ़े औरन कौं उपदेश देइ पर लोभ आय घेरै तब बुद्धि न चलै। आगे विनके साथ चित्रग्रीव हू उतर्यो। अरु जब वे परेवरू जाल में आये तब वाने जाल की जेवरी खेंची सब बझे। तद जाके कहे उतरे हे वाकी निन्दा कीरनि

लागे। ऐसें औरहू ठौर कह्यो है कि सभामेंसबनें आगो होयकाम करै जो संवरै तो सब कौं फल समान होय। औ बिगरै तो दोष वाही कौं देंदु जो आगे बढ़े। वाकी निन्दा मुनि चित्रगीव बोल्यो और याकौं दोष नाहीं। जब आपदा आवतु है तब मित्र हू शत्रु होतुहै जैसें बछरा के बांधिबे कौं गाय की जांघ ही आंम होतु है।

दोहा

बधिक बध्यो मृगबालातें रुधिरो दियो बताय॥
अति हित अनहित होतु है तुलसी दुरदिन पाय

यथा

ज्योतिष आगम जान सब भूत भविष्य वर्तमान॥
होन हार जब होतिहै उलटि जातु है ज्ञान॥ ॥

तातें बन्धु सो जो आपत्य में काम आवै औ बात कौ पछिताय वो कपूत कौ काम है। यातें धीरज करि छूटनि कौ उपाय करो। कह्यो है॥

कुंडलिया

बीती ताहि बिसार दै आगे की सुधि लै॥
जो बनि आवै सहज में ताही में चित दै॥
ताही में चित दै बात जोई बनि आवै॥॥
दुरजन हंसे न कोई चित्त में खेद न पावै॥
कहि गिरधर कबिराय यहै करिमन परतीती
आगें कौं सुख होय समझ बीती सो बीती॥

पुनि कह्यो है कि आपदा में धीरज सम्पदा में बिनय सभा में बचन चतुराई संग्राम में पराक्रम यश में रुचि पढ़िबे में। बिषय ये महत पुरुषन के स्वभाव हैं। अरु पुरुष कौं छह।

दोष सदा छोरे चाहिये निद्रा अधीरता भय क्रोध आलस्य शोग। इतनी कहि पुनि चित्रग्रीव बोल्यो अब सब एक मति होय चल करो या जाल कौं ले उड़ो। ऐसें कह्यो है थोरऊ मिलि एकौ करें तो बड़ो काम सिद्ध होय जैसें घास मिलाय जेवरी बटें तासों हाथी बांध्यो जाय। यह सुनि सब बल करि जाल ले उड़े अरु व्याधी ने दूर गये देखे तब मन में कह्यो अबहीं सब एक मति हैं उतरि हैं तब देख लैउंगो। यह जाल धरती में न गिरयो तद बधिक निराश होय बैठ्यो। तहांपरेवरू चित्रग्रीव सों कहन लागे अहो राजा व्याधी तो हमारे मांस की आश छोरि बैठ्यो। पर अब जाल सों कैसें कढ़ें। चित्रग्रीव कही अरे सुनों या संसार में माता पिता अरु मित्र ये तीनौं स्वभावही तें हित करतु हैं। तातें एक हमारो मित्र हिरण्यक नाम मूसा बिचित्र बन में गंडकी नदी के तीर रहतु है। तहां चलो तो वह हमारे बन्धन काटि है। ऐसें बिचारि ईंदुर के ढार कौं चले अरु ह्यां हिरण्यक हू आपने ढारपर बैठ्यो हो। सो परेवानि कौं आवतु देखि बिल में पैठि चुप ह्वै रह्यो। तब चित्रग्रीव कही मित्र बाहर आओ। मित्र को बोल पिछान बाहर आय बोल्यो मेरे आज बड़े भाग जो मित्र चित्रग्रीव ने सोपे कृपा करि आय दरशन दियो। अरु जाल में परेवरून कौं देखि कह्यो मित्र यह कहा है। उन कही बन्धु यह पूर्व जन्म को पाप है। जाके भाग में जैसो लिख्यो है ताकौं तैसो फल मिलतु है। अरु रोग शोग बन्धन सो दुःख आपने किये कर्म को फल है। कह्यो है॥

कवित्त

होत उदोत प्रभाकर जो दिश पश्चिम तो कछु धोखो नहीं है॥

फूले सरोज पहारनि मांहिं औ मेरु चले तौ चले कबही है ॥ ॥ ॥
पावक शीतल होत समें द्रुक मोतियराम बिचार कही है ॥
अंक मिटें न लिखे विधि के यह वेद पुरानानि मांहिं सही है

यह सुनि मूसा चित्रग्रीव के बन्धन काटनि लाग्यो। तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यो हितू पहिले मेरे संघा तीनके फंद काटो ता पाछे मेरे काटियो। डुंदुर कही पीतम ये बन्धन कठिन मेरे दांत कोमल। तातें पहिले तेरे बन्धन काटिता पाछे कटैंगे तो और को काटिहौं। चित्रग्रीव कही मित्र यह नायक को कर्म नाहीं जो आपने साथीन कों बन्धाय आप छूटे। यासों पहिले ये छूट लेंय तो हमारो छूटनो बने। पुनि मूसा बोल्यो भाई आपनी छोरि पराई बात कहनी यह नीति नाहीं कह्यो है कि दुरव पायके धन राखिये धन दे स्त्री की रक्षा कीजै अरु धन स्त्री जाय तो जान दीजै। पर आपनो राखिये क्यों कि धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पदार्थ प्राण के राखे रहें अरु गये जांय। बहुरि चित्रग्रीव कही मित्र नीति तो ऐसें ही है पै पण्डित होय सो शरणागत वत्सल चाहिये। कह्यो है पराये हेतु धन प्राण दीजे क्योंकि एक दिन तो शरीर को नाश होयगा तातें और के निमित्त आवे तो या सों कहा भलो है। यातें तू मेरे अनित्य शरीर राखिवे को यतन छांड़ि अरु नित्य अविनाशी जो यश ताके राखिवे कोउपाय कर। कह्यो है अनित्य देह तें नित्य यश पाइये अरु मलीनतेंनिर्मल बस्तु। तातें शरीर अरु यश में बड़ो अन्तर है। यह सुनिहिरण्यक संतोष करि बोल्यो हितू तोहि इन सेवकनि के सनेह तें त्रिलोकी को राज भूमिये। यह कहि उन सबही के बन्धन काटे अरु कही बन्धु तुम आपनी बुद्धि के दोष तें बंधे पर

अब मन में दुख जिन करो। कह्यो है कि पक्षी एक योजन तें भूमि पर्यो अन्न देखे पर जाल न देखे। नातें तिहारी मति कोऊ दोष नाहीं क्योंकि चन्द्र सूर्य्य हू ग्रह पीड़ा पावतु हैं अरु राजभुजंग हू बन्धन में परतु हैं। पण्डित निर्धन होतु हैं अरु क्षमय पाय पशु पक्षी नभचर जलचर हू पर सब होय दुख पावतु हैं। जो भावी में होय सो बिना भये नाहीं रहतु। ऐसें हिरण्यक ने चित्रग्रीव कौं समझाय मनोहर बचन सुनाय खवाय प्याय कुटुम्ब समेत बिदा कियो अरु आपहू बिल में गयो। तब लघुपतनक काग जो प्रातही व्याधी कौ देखि भाग्यो हो वाने ये समाचार पाय आपने मन मांहिं कहीकि संसार में मित्राई बड़ो पदार्थ है। देखो मित्र कौन ठौर काम आयो यह विचार रूखतें उड़ि मूषक के बार जाय बोल्यो अहो हिरण्यक तुम कौं मेरो प्रणाम है अरु तुम्हें बड़ो जानि मित्राई करनि आयो हौं। यह सुनि हिरण्यक बोल्यो अरे तू को है। इन कही हौं लघुपतनक नाम काग हौं। यह सुनि हिरण्यक हंसिकरि बोल्यो मोसों तोसों कैसी मित्रताई। अरे शत्रु सों मित्राई करनो विपत्ति को मूल है अरु हम तिहारे भक्ष्य तुम हमारे खान हारे। यातें जहां मित्राई बूझिये तहां कछु अनमिल संग न होय अरु जो होय तो वैसें होय जैसें स्यारने बंधायो हिरणाकों अरु छुड़ायो कागने। काग बोल्यो यह कैसी कथा है। तहां मूसा कहतु है॥

मगध देश में चम्पक नाम बन। वहां अनेक दिननें एक। चम्पाके रूख पर सुबुद्धि नाम काग अरु वाके तरे चित्रांगद। नाम हिरणा रहे उन दोऊन में अति प्रीति ही। तहां हिरणाकों एक दिन काहू स्यारने हृष्ट पुष्ट देखि आपने मनमें विचार्यो

कि यासों प्रीति करों तौ याको मांस खैवे कों मिलै। यह विचारी हिरणा के पास आय बोल्यो मित्र तुम कुशल तें हो। मृग कही माई तू को है। पुनि हरवे नें उन कही हौं क्षुद्र बुद्धि नाम स्यार हौं। या बन में मित्र करि हीन निरबंधु अकेलो बसतु हौं। आज निहारो दर्शन पायो मेरे जी में जो आयो अब निहारि पायनि तरि रहिहौं। ऐसें बातन लगाय वाके संग लाग्यो। सांझ भई तब कुरंग आपने आश्रम कौं चल्यो अरु वहऊ साथ है लियो। निदान चलतु चलतु वहां आये जहां मृग को मित्र काग हो। स्यार कौं देखि काग बोल्यो मित्र यह दूसरो निहारे साथ को है। मृग कही यह क्षुद्र बुद्धि नाम स्यार है। औ मोतें मित्रार्दु कियो चाहतु है। काग कही हिनूवेग परदेशी अनजान सों प्रीति न कीजिये। कह्यो है कि जाको शील स्वभाव आश्रम न जानिये तासों मित्रता न करिये। अरु नीति तौ यौंहै कि वाकों आपने घर में बासहू न दीजे नजानिये कैसो होय जैसें अनजाने बिलाव कों बास दै दीन गीध पक्षी मार्यो गयो। मृग बोल्यो यह कैसी कथा है तहां काग कहनु है॥

गंगा जू के तीर गृध्रकूट नाम पर्वत न। तहां एक पाकड़ की रूख। वाके खोड़र में एक अति बूढ़ो गीध रहै। तहां और पक्षी आपनो चुगि ल्यावें। तामें तें थोरो थोरो गीध कौं हू बांर दें जासों वह जीवै। अरु जब वे पक्षी चुगवे कौं जांय तब गीध उनके छौंनानि की रखवारी कियो करै। एक दिन दीर्घ कर्णी नाम बिलाव पक्षीन के शिशु खैवे कौं वा रूख पै चढ़्यो। वाकों देखि वे छौंना पुकारे। तब गीध ने उनकी पुकार सुनि खोड़र तें मृदु निकासि कह्यो अरे

यह को है। तब बिलाव गीध कौं देखि डरि आपने मन माहिं कहनि लाग्यो कि जो ह्यांतें भागि हौं तौ यह पाछै दौरि मोर गौ। यासों याके पास गयेही बनै यह बिचारि सरलस्वभाव होय गीध के पास आय दण्डवत् करि बोल्यो तुम बड़े ह्यो। गीध कही तू कोहै अरु इत क्यों आयो है। दूर रहिना नहीं अबही मारतु हौं। बिलाव कही स्वामी प्रथम मेरे आवन को कारण सुनि लेउ। ता पाछै जो मन मानै सो करियै गौ। मैंने ब्रह्मचर्य्य ब्रत पालन कियो है अरु चांद्रायण ब्रत को मेरे नियम है। अबहीं गंगा जू स्नान किये आवतु गैल में पक्षीन के मुखतें तिहारी बड़ाई सुनी कि तुम ज्ञान चरचा में निपुण हो। तातें तुम सों धर्म उपदेश सुनिवें कौं आयो हौं। अरु बिचार ऐसो है कि जो कोऊ दिन ऐसे साध की संगति में रहौं तौ पवित्र होउं। कह्यो है॥

दोहा

हियतें मिटै असाधुपन लहै अगाध विवेक
लाल जु संगति साधकी हरै उपाधि अनेक

मेरो तौ यह मनोरथ है। या पर मारयो चाहो तौ मारो। कह्यो है गृहस्थ कौं ऐसो चाहिये कि बैरी को बैरी हू आपने घर आवे तौहू वाकी पूजा करै जैसें वृक्ष कौं कोऊ काटनि आवे तौ वह वाहू पर छांह करै। यातें बूढ़े के घर बालकहू पाहुनो आवे तौ सेवा योग्य है। अवस्था को बिचार कछु नाहीं पाहुनो घर आवे ताकौं सबतें बड़ो करि मानिये यथा योग्य पूजा कीजै। जो और कछु घर में न होय तौ मीठे बचन तृण को बिछौना शीतल जल दे अग्नि हित के मिल बैठे। अरु इतनौ हू न करै तो जाके घर तें अतिथि निराश जाय वाको

धर्म ले जाय आपनो पाप दै जाय। यातें साधु निर्गुणहू पर दया करतु हैं जैसें चंद्रमा सब ठाम प्रकाश करै। गीध बोल्यो बिलाव कों मांसतें अधिक रुच होति है अरु ह्यां पक्षीन के शिशु रहत हैं। तातें तोसों हौं कछु कहि नाहीं सकतु। पर जो तू यहां रहै तो इन छौंनानितें कपट जिन कीजो। यह सुनि बिलाव ने। भूमि में हाथ छुवाय कान हाथ धरि कह्यो स्वामी मोतें ऐसी कबहूं न होय। धर्म शास्त्र पढ़ि सुनि मैं वैराग दशा गही है। अरु जीव हिंसा बड़ो अधर्म है। सब शास्त्रनि में बर्जित है। कह्यो है साधु कों ऐसो चाहिये कि परायो अपराध सहै सब कों पाले सो स्वर्गलोक पावै। या में संदेह नाहिं क्योंकि धर्म सदा सहाय होय अरु जाको मांस खाइये सो सो जीव ही सों जाय खानिवारे कों छिन एक जीभ ही को स्वाद। तातें आपनो सो जीव सब काहू को जानिये। कह्यो है जो वन के कन्द मूल फल फूल पात सों पेट भरै तो जीव हिंसा काहे कों करिये। ऐसें कहि प्रतीति बढ़ाय बिलाव गीध के समीप रह्यो। कोऊ समय पाय है चारि पक्षीनके छौंनानि कों पकरि ल्यायो। जब वे शिशु पुकारे तब गीध बोल्यो अहो दीरघ करण इन बालकनि कों तू काहे ल्यायो है। वानें कही स्वामी मेरे बालक मोतें बिछरे हैं। ताके हेतु इनतें दिन कटी करतु हौं। ऐसें कहि यद आपनो मनोरथ साध्यो तद बिलाव ह्वातें परायो। अरु पक्षिन आय आवने बालकनि के हाड़ चाम गीध के खोडुर समीप परे पाये। तब उननि जान्यो कि हमारे छौंना या पापी विश्वास घाती चंडार ने खाये। ऐसें समझि सबनि मिल गीध कों जीव सों मार्यो। तातें हौं कहुत हौं कि बिन जाने मित्रादू कबहू न करिये।

यह बात सुन स्यार क्रोध करि बोल्यो मित्र जा दिन तुम हिरण सों मित्राई करी ता दिन यह तिहारो कुल स्वभाव कहा जाननु हो जो मिल बैठ्यो। यातें आपनो परायो कहनो मूर्खनि कों काम है। पण्डित कों तो सब आपनेही हैं। जैसें मृग हमारो मित्र तैसें तुम हूं। अरु भलो बुरो तो व्यवहार हीतें जान्यों जात है। हिरणकही मित्र बिवाद क्यों करतु हो। जितेक मिल रहैं तितेकही भले। काग कही भाई तुम जानौं। इतेक में सब आपने आपने उदर की चिन्ता कों गये अरु सांझकों आय इकट्ठे भये। याही भांति वहां रहनि लागे कितेक दिन पाछे स्यारने हिरणा कों एक लौ पाय कह्यो मित्र हों तिहारे लिये आछो हर्यो कोमल यव कौ खेत देखि आयो हौं। जो मेरी बोल चलो तो दिखाऊं। या रीति कपट करि वाकों कुमारग में ल्याये। अरु बहू कुविसन को मार्यो लोभ करि वाके संग ही उठि धायो। ऐसें नित वाके संग जाय जाय खाय खाय आवे। एक दिन वा खेत के रखवारेने हिरणा कों आवतु देखि फांद रोप्यो। ज्यों ही यह चरबे कों पैठ्यो त्योंही बध्यो। तब मन में कहनि लाग्यो कि मित्र बिन मोहिं या संकट तें को निकारि है। अरु इत स्यार वाकों फंस्यो देखि नाचि नाचि मन में कहनि लाग्यो कि मेरे कपट को फल आज मिलैगो। जब रखवारो याको मांस भक्षण करैगो तो हाड़ चाम में जो मांस लपट्यो रहै गो सो हौं खाउंगो। यह तो या बिचार में नाचि कूद रह्यो हो। अरु मृग ने जान्यो यह मेरोई दुख देखि व्याकुल हो हाथ पांव पटकतु है। पर यह न जान्यो कि दान कों लोभी नटुवा की भांति कला करतु है। आगे स्यार की दशा देखि मृग कही भाई मेरे निमित्त तू एतो खेद क्यों

कानुहै। कह्यो है आपदा में काम आवै सो हित्त रणमें जूझै सो शूर दरिद्र में स्त्री की परीक्षा लीजिये दुःखमें बंधु जांचिये ऐसें सृग ने कह्यो। तद स्यार ने निकट जाय देख्यो कि यह तो कठिन बन्धन में पर्यो है। तातें मेरो मनोरथ शीघ्र सिद्ध होयगो। ऐसें बिचार बोल्यो भाई यह जाल तो तांत को है अरु मेरे आदित को उपास है। सो दांत करि कैसें काटों जो और ब्रत होय तो कुछु चिन्ता नाहीं पर रवि के ब्रत को यह बिचार है जो भंग होय तो सब पाछली काष्टा निरफल जाय। यातें आज तो यह बात है। काल्ह सकारे जो मोतें बनैगी सो करोंगो। ऐसें कहि वहां तें उसरि परे होय बैठ्यो। इतेक में निशा ब्यतीत भई अरु हां सुबुद्धि नाम काग जाग्यो। सो चिचाय करि कहन लाग्यो कि रात्रि मित्र मेरो नाहीं आयो अब कहूं खोजों। यह कहि हां तें चल्यो। आगे जाय देखे तो जाल में बझ रह्यो है। काग कही मित्र यह कहा है। जब कही हित तू मेरो कह्यो न मान्यो। ताही को यह फल है। पुनि काग कही वह तेरो नयो मित्र कहां है। इन कही वह मेरे मांस को लोभी ह्यां हीं होय गो। बहुरि काग कही भाई साध जन अपनो सो स्वभाव सब काहू को जानें। अरु दुष्ट को जातीय स्वभाव है जो वातें करे भलाई तातें वह करे बुराई कह्यो है दुष्ट बिन बुलाये आय पहिले पांय परे पाछे काना बाती करे। हित की रीति में प्रीति जनाय कपट कर कुमारग बतावे। अवसर पाय घात चलावे। जैसें माछर पीठ पाछे आय कान सों लागि समय पाय डंक मारे तैसें ही दुष्ट मनुष्य तातें हौं कहतु हौं कि बैरी को विश्वास कबहूं न कीजे। ऐसें हूं कह्यो है॥

कुंडलिया

बैरी बन्धु आ बानियां ज्वारी चोर लवार ॥
व्यभिचारी रोगी गिणी नगर नारि कौ यार ॥
नगर नारि कौ यार भूल परतीत न कीजे
मो सौ सौहैं खाय चित्त एकौ नहिं दीजे
कहि गिरधर कविराय घरै आवै अनधेरी
हितकी कहे बनाय जानिये पूरो बैरी ॥॥

इतेक बातें सुनि मृग लांबी सांस लै बोल्यो जे झूंठी बातें कहि और कौ बुरो करतु हैं तिन कौं भार पृथ्वी कैसें सहति है। ऐसें बतराय रहे हे। इतेक में रखवारो आवतु देख्यो। तब बायस ने कुरंगतें कही अब तू आंखि फिराय मृतक। होय रहि। जब मैं पुकारौं तब उठि भाजियो। यह सुनि उनि वैसेही करी। रखवारो आय हिरण कौं देखि बोल्यो यह। तो आपही मर रह्यो है। याहि कहा मारौं। आगे वाहि मर्यो जान बन्धन खोलके चाहे कि वाहि उठावे। त्यों हीं काग बोल्यो अरु हिरण उठि भाग्यो। तब रखवारे ने रिसाय के लौठिया घाली सो स्यार के मूंड़में लागी अरु लागत प्रमान ही मर्यो। ऐसे और हू ठौर कह्यो है कि तीन दिन तीन रात तीन पक्ष तीन मास तीन बर्ष में पुण्य अरु पाप को फल मिल रहतु है।

इतनी कथा सुनि लघुपतनक कागने हिरण्यक चूहासों कही मित्र जो कदाचित् मैं तुम्हें खाऊं तो पेट हू न भरै। यातें तुम से मित्र धरमात्मा साधु कौ बुरो काहे करिहौं क्योंकि चित्रग्रीव सहित सब पक्षी जब जाल में परे तब तुमनि। सहायता करि उनके जीव बचाये। कह्यो है कि आपने

कार्य सिद्ध करिबे कौं सज्जन तें मित्राई करिये तौ एक दिन काम आवै। तातें हौं तिहारो पठयो लियो चाहतु हौं कि कबहूं मेरे दुख में सहायता करिहो। या कारण आयो हौं। तुम और भांति जानो। पुनि मूषक बोल्यो कि चंचल सों मित्रता कबहूं न कीजै॥

दोहा

काग रु भैंसा का पुरुष आन भेड मंजार॥ ॥
इन पांचनि के विश्वास तें आपुनि जैये हार॥

यातें इन सबनि कौ विश्वास कबहू न करिये। वैरी मिल्यो रहै ताके हित पर न भूलिये। कह्यो है कि कैसोहू तातो पानी होय पर अग्नि कौं बिन बुझाये न रहै निबल सबल न होय। अनमिल बात कबहू न मिले जैसें पानी में गाड़ी अरु भूमि पर नाव न चले। पुनि ऐसे हू कह्यो कि स्त्री तें गर्भ की बात न कहिये। जो कहिये तौ बिरोध न करिये। करिये तौ जीवन कौ आश न राखिये। कोऊ ऐसें हू कहतु हैं।

कुंडलिया

साईं ये न बिरुदिये कवि पंडित गुरुयार
बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावन हार॥
यज्ञ करावन हार राजमंत्री जो होई॥ ॥
विप्र परोसी वैद आप कौं तपै रसोई॥ ॥
कहि गिरधर कविराय यहै केसी समुझाई
इन तेरह तें तरह दिये बनि आवै साईं॥

बहुरि काग कही प्रीतम जो तुम कह्यो सो सब मैं सुन्यौ पर मेरो यह विचार नाहीं जो तुम तें द्रोह करौं। अरु जो तुम मोसों प्रीति न करिहो तौ तिहारे द्वार पर उपास करि

करि आनातजोंगो। मोहि राम लक्ष्मण जूकी आन है क्योंकि असाध की मित्राई थोरेई दिनन में दूटै जैसें माटी को पात्र फूटि कै न जुरै। अरु साध की प्रीति ऐसे है जैसें सुवरण को पात्र। वेगा न फूटै और जौं फूटै तो फेरि संधै श्रौ किनेक सज्जन पुरुष नारियर की भांति रहतु हैं कि ऊपर तें तो कठिन अरु भीतर कोमल। पुनि दुष्ट जन की वेर कीसी रहन है कि ऊपर कोमल अरु भीतर कठोर। तातें सज्जन अरु दुष्टजन स्वभावही तें जान्यों जातु है। कछु रहन तें नाहीं। अरु पवित्र दाता शूर संकोची स्नेही निर्लोभी सत्य वक्ता साध होतु हैं असाधन होंय। यासों तुमहीं कही कि साध जन पाय को न प्रीति करै। या रूप की बातें सुनि हिरण्यक मूसा बिल तें बाहर निकसि बोल्यो कितेक बचन सुनि मैं अति सुख पायो। जैसें कोऊ लूक्ष को मार्यो स्नान करि चन्दन सब अंग पर चढ़ाय शीतल होतु है तैसें मेरो हियो ठंढो भयो। कह्यो है छह प्रकार तें प्रीति बढ़ति है लेवो देवो गुह्य कहिबो सुनिबो खेबो खवायबो। अरु ये स्नेह के दूषण हैं सदा मांगबो अप्रिय बचन कहिबो मिथ्या भाषबो चंचलता अरु जुआ सो तो में एकहू नाहीं। यासों हौं तेरी सुबिचार देखि प्रसन्न भयो। आजतें तू मेरो मित्र है। इतनी बात कहि काग को द्वार पर बैठाय मूसा बिलमें गयो अरु ह्यां तें कछु खेबे की सामग्री ल्याय खवाय आपहू वा के पास बैठ्यो। ऐसें वे दोऊ ह्यां रहिनि लागे। एक दिन काग कही भाई मूसा या ठौर तो अति कष्ट सों अहार जुरतु है। यासों वहां चलो जहां बहुत सुगो सुख तें खेबे कों मिलै। पुनि मूषक बोल्यो मित्र कह्यो है कि जो सयानो होय

सो अगलो पाँव धरि पाछलो पग उठावे। तातें प्रथम ठौर बिचारो ना पाछे ह्यां ते चलो। बायस कही बन्धु तुम नीकी ठाम बिचारी है कि दंडकारण्य बन में कर्पूर नाम सरोवर। तहां मंथरक नाम कछुआ मेरो मित्र है। सो बड़ो पंडित। धर्मात्मा है। कह्यो है औरन के धर्म उपदेश देनकों सब। पंडित हैं पर आप धर्म मारग में दृढ़ता राखें ते विरले। जन होतु हैं। तातें मित्र वह हम कौं भली भांति राखि रक्षा करि है। कह्यो है सुनो जा देश में आपनी बड़ाई मित्र विद्या की प्राप्ति सुसंग गुणा बिचार अरु नीरोग हू न होय तो वहां बसिबो उचित नाहीं। मूषक कही हित ह्यां मोकौं हू साथ ले चलो। ऐसें बतराय दोऊ कछुआ पै गये। इन्हें देख कच्छप बोल्यो मेरो मित्र लघुपतनक आयो। इतनों कहि आगू बढ़ि मिष्टाचार करि आदर सों पाय परवाल आसन पर बैठाय पूजा करनि लाग्यो। तब कौआ बोल्यो मित्र याकी पूजा विशेष करि करो। यह बड़ो धर्मात्मा हिरण्यक नाम मूसा सब चूहन को राजा है। याके गुण की स्तुति करि बे कौं मेरो मुख नाहीं। जो सहस्र मुखतें शेष नाग जू कहैतो कहि सकें। इतनी कहि चित्रग्रीव की सब कथा सुनाई। तब मंथरक नें वाकी पूजा करि पूंछ्यो आपु को बास कहां अरु ह्यां आवनो कैसें भयो। तब मूसा कहनि लाग्यो चम्पा नगरी में संन्यासियन को मठ। तामें दूरकरण नाम संन्यासी रहे। सो जो भिक्षा मांगि अन्न ल्यावे वह ऊंचे आरा में राखे। वा अनाज कौं हौं कूदि कूदि खाऊं। कितेक दिन पाछे वाको मित्र बीनाकरण नाम संन्यासी तहां आयो। दूरकरण वा सों बात करे अरु लकरी धरती में खरकावे।

तब बीना करण कही तू जो मेरी बात नीकै चित दै नाहीं। सुनतु सो तेरो मन कहां है। पुनि उनि कही गुरु भाई हौं। तो तेरी बात हियो दै सुनतु हौं पर यह निगुरी मूसा मेरी भिक्षा की अन्न सब खातु है मोहि दुख देतु है। बाहिलालच लाग्यो। भई याको कछु उपाय करौ। बीना करण बोल्यो याको कछु कारण है। ज्यों एक तरुण स्त्री ने वृद्ध पुरुष कौं आलिंगन चुम्बन करि जार कौं छिपायो त्यों यह मूसा हू बिन कारण नाहीं कूदतु। चूरा करण कही यह कैसी कथा है। पुनि बीना करण कहनि ल्याग्यो।

गौड़ देश में कौशांवी नाम नगरी। तामें चंदन दास एक बनियां। उन वृद्ध अवस्था में धन के मद सों लीलावती नाम और महाजन की बेटी ब्याही। सो काम की अधिकाई तें। थोरेई दिननि में यो बनवती भई। जब वह भर्त्तार वाके सुख कौं न पूछै तब वाहि अन खावनो लागै। जैसें विरहिन कौं चंद अरु घाम के तैसें कौ सूरज न सुहाय तैसें तरुण स्त्री कौं बूढ़ो स्वामी हू न भावै क्योंकि वृद्ध कौं दर्प कहां। कह्यो है ज्यों बालक कौं औषधि न रुचै त्यों वह हू वाहि नीकौ न लागै पर बुढ़रावातें अधिक प्रीति करै। पुनि ऐसेहू कह्यो है न डोकरा भोग कर सकै न छांडि सकै। चाटतु चूमतु रहै जैसे बिनादांत कौ कूकर हाड़ पाय न खाय न छांड़ै। जब वाकी इच्छा पूरण न भई तब वह बनियां की बेटी। लीलावती कुल की मर्य्याद छांडि धर्म कौ भय नारि लोकलाज तजि यौवन की अधिकाई सों एक और बनियां के पुत्र तें व्यभिचार करिनि लागी। अरु कामातुर है। पिता के घर बसै यात्रा कौं जाय भर्त्तार के आगे और

सों बतराय। कह्यो है जो नारी पति के साक्षात् और पुरुष सों बातें करै सो निस्संदेह परकीया होय कहतु हैं इतनी भांति सों परकीया होति है। बाल होय जाको पति वृद्ध होय कुरूप होय बिदेश होय अशक्त होय पास न रहै हित न करै असंतान होय। नारी इतनी भांति व्यभिचारिणी होति है। अरु मद पीवै कुसंग में बैठे पतिके औगुणाऔर सों भाषै घर घर डोलै अति। सोवै नित तन मांजै सदा शृंगार करति रहै रात्रि पर धाम बसै ये नारीन के दूषण हैं। अरु जिनके सयान नाहीं ढिठाई नाहीं और पुरुष सों न बोलै लाज बहुत ते स्त्रीपवित्र जानिये कहतु हैं नारी घृत समान अरु पुरुष अग्नि सम। नातें इन को संग भलो नाहीं। पुनि कह्यो है बाल अवस्था में पिता रक्षा करै तरुणाई में पति रखवारी करै वृद्धापन में पुत्र सावधानी तें राखै तो स्त्री को धर्म रहै। नातो नष्ट होय। आगे एक दिन वह लीलावती बनियां के पुत्र साथ आपने घर में आनन्द करि रही ही। या में वाको पति बाहर तें आयो। ताहि आवतु देखि बेगही खटिया तें उतरि सन्मुख धाय आलिंगन कियो। वाके देखिवे कों तो है आंखिहीं पर एक सों दीसतु न हों। अरु जासों दीसतु हो तापै चुम्बन को मिसकरि उनि मुख राख्यो और जार कों बाहर निकारि दियो। कह्यो है कि जो वृहस्पति तें विद्या पढ़े पर उत्पात की दांव वादू की बुद्धि स्थिर न रहै अरु कछू न बनि आवै सो नारी छिनही में उपाय करै। आगे लीलावती को आलिंगन करति देखि एक कुटनी ने कारण विचारि वाहि डांट्यो अरु कह्यो ऐसो काम फेर जिन कीजो। नातें मूसा के कूदवे को कारण में मान्यो कि वाके बिलसें माया है क्योंकि

धन विन बल नाहीं होतु । कह्यो है।

दोहा

कनक कनक तें सौगुणी मादकता अधिकाय ॥ ॥
वह खाये बौरातु है यह पाये बौराय ॥ ॥ ॥

ऐसें कहि संन्यासियन मिलके मेरे बिलतें सब धन काढ़ि लियो। ताके दुख तें हौं बलहीन भयो अरु मनमें उत्साह हू नाहीं रह्यो क्यों कि देह में जो बल हर्ष होतु है सो माया तें। अरु धनहीनतें कछु न बनै। कह्यो है धनहीन पुरुष संसार में मृतक समान हैं। जब द्रव्यहीन भयो तब निबलार्द तें मोपे चल्यो न जाय। पुनि चूड़ाकरण संन्यासी मोहिं देखि बोल्यो कि यह मूषक अब सीधो भयो। जैसें ग्रीष्म ऋतुमें नदी बल हीन होति है तैसो ह्वै गयो। कहतु हैं द्रव्यहीन की मति स्थिर न रहै। जाये धन सोई बुद्धिमान पंडित ज्ञानी दानी बली चतुर कुलीन गुणीहै। अरु पुत्र बिन घर शून्य विद्या बिन हृदय श्री दरिद्री कौं संसार सूनो लागतु है। पुनि देखो धन गये कैसो हू स्वरूप होय पर कुरूप है जातु है। ऐसी बातें वा गुसांई की सुनी तब मैंने आपने मन माहिं बिचार्यो कि अब हां रहनो योग्य नाहीं। कह्यो है ॥

दोहा

मंत्र मैथुन औषधी दान मान अपमान ॥ ॥ ॥
मर्म द्रव्य गृह छिद्रये प्रगट न लाल बखान ॥

जो कहियो तो मिथ्या अपनो गर्व्व गंवैये। जब देवता असंतुष्ट होतु है तब जो उद्यम करै सो निष्फल जाय। अहंकारी कौं है बात जैसें धतूरा को फूल। कैतो भूमि पर्यो कैतो महादेव के माथे चढ़े। तातें भिक्षा उपाय करि जीवो

योग्य नाहीं। कृपण तें मांगवो अरु मारिवो समान है॥

कवित्त

मान सनमान को पयान होतु पहले ही यद्यपि निपट गुणी गिरहू तें गरुवो॥
कहै कवि देव बारबार जस उच्चरतु चुटकी देतु लागे कुटकी ते करुवो॥॥
अतिही अजान बाहु तऊ तन थोरो दीसै मनमाहिं लसै जो हिंडोरे को सो मरुवो॥
तृणहूतें तूलहूतें फेनहूतें फूलहूतें मेरे जान सबही तें मांगिवो है हरुवो॥

पुनि चूड़ा करणातें बीणाकरणा कहिन लाग्यो कि पराधीन। भोजन द्रव्य दै मैथुन विद्या कर हीन प्रदेश को बास काया। रोगी पराये घर सोनो ऐसे मनुष्य को जीवन मरण समान है। कह्यो है लोभ तें चित्त डुले कष्ट पावे मरण होय स्वर्ग नरक जाय। जब वा गुसाईं ने ऐसे बोल कहे तब मैंने विचार्यो कि हौं लोभी असंतोषी आत्म द्रोही हौं जातें मेरी सम्पति गई। अरु संतोषी की सम्पति कबहू न जाय। जे संतोषकरि अघाने हैं तिनको जैसो सुख है तैसो असंतोषी को नाहिं। कह्यो है जिन तृष्णा न राखी काहू की सेवा न करी अधीन वचन। न मांग्यो विरह की पीर न सही अधीरता न की ऐसे पुरुषनि तें सो भोजन धन दूर रहतु है अरु संतोषी को हाथ की वस्तु को हू आदर नाहीं। ऐसें विचार कैहौं निरजन वन में आयो। तिहारो आश्रम स्वर्ग समान पायो। कहतु हैं यह संसार विषय को रुख है। या में है फल मीठे कहतु हैं एक तो काव्य रस दूजो साधको संग। इतेक बातें सुनि संथरक कछुआ बोल्यो मित्र धन में बड़ो दोष है। एक तो अनेक दुख पाय इकट्ठो कीजे दूजे प्राण तें हू यत्न करि राखिये ऐसो धन काहे को भलो। कह्यो है जे आपनो सुख छाँड़ि पराये लाये द्रव्य उपजाय राखें ते ऐसें जैसें मोटिया मोट ढोय मरे अरु भोग और ही

करे। ऐसें तौ सब धनवानही कहावें क्योंकि दान भोग में तौ नाहिं। यातें दरिद्री औ धनी समान पर धनवान कौं एक और दोष कि वाहि गये कौ शोच। सो निर्धन कौं नाहिं। पुनि कह्यौ है चारबात संसार में आय मनुष्य तें होनी कठिन हैं प्रियबचन सहित दान गर्व बिन ज्ञान क्षमा समेत शूरता त्याग लिये धन। यातें धर्म कौ संचय करिबे अति लोभ न करिये जैसें एक स्यार अधिक लालच करि मार्यौ गयौ। हिरण्यक बोल्यौ यह कैसी कथा है। कछु आ कहनि लाग्यौ॥

कल्याण कटक नगर में भैरव नाम व्याधी। सो एक दिन विंध्याचल के बन में गयौ हौ। सो ह्यां ने एक मृग मारि कांधे लिये आवतु हो। गैल में एक शूकर आवतु देखि याने लोभ करि वा पै बाण घाल्यौ। सो शर तौ वाके लाग्यौ पर मरतु मरतु वाने याकू कौं आय मार्यौ। इहिं बीच एक दीरघ रव नाम स्यार क्षुधित ह्वै आय कह्यौ अरु इन तीननि कौं ह्यां परे देखि चित आपने जी मांहि विचार्यौ कि अहा बहुत पायौ। याहि अनेक दिन लौं खाऊंगौ अरु आपनी काया पुष्ट करौंगौ। यह विचारि वह स्यार धनिक के पास जाय ज्यौं पहिले धनुष की जेह खानि लाग्यौ त्यौंहीं जेह टूटि छोर छूटि वाके कपाल में लाग्यौ अरु तत्काल प्राण देह तें निकार भाग्यौ। जम्बुक जीव सो गयौ। मांस सबह्यां हीं धर्यौ रह्यौ। यातें हौं कहतु हौं कि अति लोभ करि संचय न करिये। अरु जो धन पात्रन खाय न देय ताकौ द्रव्य जौ लौं जीवै तौलौं रहे। मेरे पर वाके धनजन के और ही गाहक होतु हैं। जीवतु भरदेखि देखि मन रंजन करै। मरे पै वाके काम कछु न आवे। यातें खाइये खुटाइये सोई आपनौ क्योंकि यामें स्वारथ परमारथ दोऊ रहतु हैं।

इतनी बात कहि पुनि कच्छप ने मूसा सों कह्यो कि अब तुम गये द्रव्य को शोच जिन करो क्योंकि जो वस्तु पाइबे योग्य न होय ताको यत्न पण्डित चतुर नाहीं करतु है। तातें मित्र तुम चिंता मत करो। कह्यो है कि विद्या पढ़े तें सब पण्डित नाहीं होतु हैं। जे कियावान तेई पण्डित हैं। जैसें रोगी को रोग औषध को नाम लिये न जाय खवाय तबहीं जाय तैसें बिन उद्यम बिचार किये धनहू न आवे। अन्धेरे के हाथ दीपक कहा करै। आपनी आरव की ज्योति बिन प्रकाश न करै। पुनि कह्यो है दांत केश नख नर स्थान छूटे तें शोभा न पावें। अरु सिंह शूर गज पान पण्डित गुणवान श्री योगी ये जहां तहां संचरें तहां तहां आदर बढ़ावें। कहतु हैं जैसें कुम्भामें दादुर सरोवर में कंवल आपहीं तें आवें तैसें उद्यम किये लक्ष्मी हू आवे। दुख सुख चक्र की भांति फिरतु है। अरु जे पुरुष साहसी शूर ज्ञानी उद्यमी हैं तिनकों दुख नहीं व्यापत। कह्यो है कि कैसो हू पण्डित गुणी तपस्वी शूर बन्धु धनवन्त होय पर लोभ किये अनादर ही पावे। गुणवान स्वभावहीतें बड़ो जैसें कंचन को आभूषण ज्यों कूकर के गरे बांधे तोहू सुहावनो लागे नातें हौं कहतु हौं कि धन को शोच न करियेक्योंकि जब माता के गर्भ में विधाता बास देतु है ताके प्रथम ही दूध स्तन में प्रगट करतु है श्री पाछे जन्म होतु है। ऐसो विचारिये।

दोहा

जिन तोते हरये किये श्याम काग हंस सेत ॥ ॥
मोर बिचित्र जुरंग किये सो चिन्ता करि देत ॥ ॥

अरु सुनो धन में सते दुख हैं उपजतु राखतु जातु श्री बढ़तु बढ़ेहू। धन सुख कबहू न देय। यातें ज्यों उपजे त्यों दीजे

खाइये। तोही भलो। नातो जैसें मांस कौं ऊपर राखे पक्षी खाय भूमि में स्यार कूकर पानी मांहिं कच्छ मच्छ माटी मांहिं कीरा कीरी खांय तैसें धन कौं चार भय राज भय अग्निभय चोर भय दुष्टभय। अरु ताहूमें यह बड़ो दोष कि माया के लोभ तें सेवक होय अधीनता करै पर भावी काहू सों नटरै। यासों प्रीतम तुम हमारो साथ अब जिन छांड़ो जन्म भर ह्यांहीं रहो। कह्यो है संतोष करि रहनों दान देनों क्रोध न करनों यह साधके लक्षण हैं। असाध तें न होंय। इतेकु सुनि लघुपतनक काग बोल्यो अहो मित्र मंथरक तुम कौं धन्य है अरु आश्रम के योग्य महन्त हो। आपदा में उद्धार लेतु हो ऐसें जैसें दहदल में परे हाथी कौं हाथी ही काढ़े। अरु संसार में तेई नर स्तुति करिवे योग्य हैं जे पराये दुख में सहायता करें जिनके द्वार तें शरणागत निराश न जाय याचक बिमुख न फिरै। इतनी कहिवे तीनों वा ठांव सुख सों खातु पीवतु क्रीड़ा करतु आनन्द सों रहनि लागे। एक दिन तहां चित्रांगद नाम मृग भोरही व्याधी कौ डरायो आयो। ताहि आवतु देखि मंथरक जल मांहिं पैठ्यो मूसा बिल में धस्यो काग रूख पर उड़ि बैठ्यो अरु वाने दूर लौं दृष्टि करि देख्यो कि याके पाछे और तो कोऊ नाहिं। यह अकेलोई आवतु है। तब काग बोल्यो भाई कछु भय नाहिं। सब निकरि बैठो। यह सुनि वेऊ निकसि आये औ तीनों मिलि बैठे। हिरण इनके पास आयो। तब मंथरक बोल्यो मित्र तुम कुशल क्षेम तें नीके आये। कह्यो है उत्तम पुरुषनि कौं यह धर्म है घर आये कौं पहिलें तो कुशलता पूंछे पुनि आदर करि बैठावे फेरि अति सनमान

करि भोजन कौं पूछै। यह उत्तम जनको व्यौहार है। इतनौं पूछि पुनि कह्यौ अहो मित्र इत आवन तिहारो कैसें भयो। मृग कही हौं व्याधी कौ डरायौ आयौ हौं। अरु तुमतें मिताई कियौ चाहतु हौं। हिरण्यक कही हम तुम तौ सहज ही मित्र हैं औ परम्परागय तुमतें हमतें मिताई चली आवति है। कह्यौ है जो आपदा में रारवै सो तौ सदाही कौ मित्र है। तुम इत आये सो भली कीनी। आपने घरतें ह्यां नीकी भांति रहिहो। यह बान सुनि कुरंग ने अहार कियौ अरु पानी पी रूख तरे विश्राम लियौ। पुनि मंथरक बोल्यौ मित्र तुम कह्यौ कि हौं व्याधी के डरतें आयौ। सो या निरजन बन में व्याधी कहां। हिरण कही कलिंगदेश कौ राजा रुक्माङ्गद सर्व दिशा जीत चंद्रभागा नदी के कांठे आय उतर्यौ है। अरु सकारे इत आय या कर्पूर सरोवर में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरि है। यह बात हौं धीमर के मुख तें सुनि आयौ हौं। तातें ह्यां रहनौं भलो नाहीं। कह्यौ है कष्ट आवतु देखि दूरतें टारिये। मैं तौ यह कह्यौ पर अब तिहारी बुद्धि में आवै सो करौ। मंथरक बोल्यौ हौं और सरोवर में जाऊं। तब काग औ मृगने कह्यौ कि पानी के जीव कौं पानी कौ बल। ऐसें है कि। जैसें राजा कौं आपने राज कौं। पुनि हिरण्यक मूसा बोलि उठ्यौ कि भाई तुम तौ बात को भेद न समझ ऐसो विचार करतु हौ जैसो एक बनियां के पुत्रने अजाने विचार कियौ अरु पाछे आपनी स्त्री कौं देखि दुख पायौ। मंथरक कही यह कैसी कथा है। तब मूसा कहतुहै॥

वीरपुर नगर वाकौं बीरसेन नाम राजा। ताके पुत्र भयौ जाकौ नाम नृसिंह बल धर्यौ। जब वह समर्थ भयौ तब राजा ने राज सुत कौं दयौ। आप हरिभजन करनि लाग्यौ। औ राजकुमार राज। एक दिन वह राजपुत्र देव दर्शन किये आवतु हो। वाने काहू बनियां की स्त्री तरुणी अति रूपवती गैल में देखी। वाकौ रूप चाहि यह काम कौ सतायौ निज मन्दिर मांहिं आयौ। अरु वह लावण्यवती हू राजकुमार कौं देखि कामातुर होय आपने धाम कौं गई। कह्यौ है स्त्रियन कै ना कोऊ प्रिय औ ना अप्रिय। जैसें बन मांहिं गैयां नये नये हरे हरे तृण चरें और मन सन्तुष्ट करें तैसें युवतीहू नवीन नवीन नर चाहैं। एनि राजकुमार ने एक दूती बुलाय वाकौं आपनी अवस्था जताय वाके निकट पठाई। वाने जाय राजपुत्र की अवस्था सुनाई। तब उनि कह्यौ हौं तौ पतिव्रता हौं। अरु नारी कौं ऐसौ कह्यौ है कि बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम न करै। यातें जो मेरौ भर्त्तार कहै गौ सो मैं करूंगी। कुटनी ने कह्यौ यह तें भली कही। हौं ऐसें ही करिहौं। इतनौं कहि दूती राजपुत्र पै आई अरु वाकौ संदेशौ कह्यौ। राज कुंवर कही यह कैसें है है। बहुरि कुटनी कह्यौ महाराज कछु चिन्ता जिन करौ। उपाय करिहौं। कह्यौ है जो कार्य्य उपाय तें होय सो बलतें न होय जैसे स्यारनि उद्यम करि गज कौं कीच मांहिं फंसाय कै मार्यौ। राज पुत्र कही यह कैसी कथा है। तब दूती कहतिहै॥

ब्रह्मारण्य वनमें एक कर्पूर तिलक नाम हाथी रहै। ताहि देखि सबजम्बुक मनौ करनि लागे कि काहू प्रकारतें या

राज को मारिये तो चौमासे भर खेवे कौं अहार मुकतो होय। यह सुनि विनमें तें एक वृद्ध स्यार बोल्यो या हाथी कौं हौं युक्ति करि मारि हौं। इतनी कहि वह बूढ़ो जम्बुक राज के निकट गयो अरु धूर्त्त ने मन माँहिं कपट करि वा सों यों कह्यो हे देव तुम मो पर कृपा करो। राज कही अरे तू कोहै अरु कहां तें आयो है। इन कही सब बनबासियन मिल मोहिं तुम पै पठायो है औ बिनती करि कह्यो है किया बनमें हमारो कोऊ राजा नाहिं। बनके राजा तुम हो सब गुण संयुक्त। कह्यो है जो कुलवन्त आचार मताप धर्म नीति संयुक्त होय ताकौं राजा करिये। अरु राजा नीको होय तो धन स्त्री को संचय करिये। कहतु हैं प्राणी कौं जैसो मेह को आधार तैसोई राजा को भरोसो है क्यौंकि राजा के भय तें सब धर्म रहैं। दुर्बल रोगी दरिद्री पति हू की पत्नी भूपाल के भयतें सेवा करै। यातें अब तुम विलम्ब जिन करो बेगा चलो। शुभ कर्म में ढील करनि योग्य नाहीं। यह कहि स्यार हाथी कौं ले चल्यो। अरु राजहू राजपद के लोभ को मार्यो वाके साथ है लियो। आगे आगे स्यार पाछे पाछे कुंजर ऐसें दोऊ चले। जा पैंड़े माँहिं बर्षा की दहदल है रही ही ताही गैल वह वाकौं ले चल्यो। आगे जाय हाथी दो में फस्यो। तब बोल्यो मित्र अब हौं कहा करौं। स्यार कही मेरी पूंछ पकरि चल्यो आव। यों सुनाय पुनि जब देख्यो यह या माँहिं फस्यो। तब इन कही तुम शोच जिन करो। हौं तिहारे निकारिवे कौं आपने सजाती भाइयन कौं टेरि ल्यावतु हौं। इतनी कहि सब जम्बुकनि बोलि ले आयो अरु काहूनि के मिस

दांतनि तें वाको चाम फारि फारि रवायो। राज चिचाय चिचाय कै मर्यो। दूतनौं कहि दूती बोली महाराज उपाय तें कहा न होय। यातें अब हौं कहौं सो तुम करो। प्रथम तौ। लावण्यवती के पति कौं चाकर राख्यो। पाछे जो हौं कहौं सो कीजो। यह सुनि राजकुमार ने लावण्यवती के भरतार चारुदंत कौं चाकर राख्यो। पुनि दूती ने राजपुत्र कौं सब छल छिद्र की बातें सिखवाय दई। तब उनि वाकी प्रतीति बढ़ाय वाहि सब काम में प्रधान कियो। एक दिन राजपुत्र ने चारुदन्त सौं कह्यो कि आज तें लै हौं एक मास लौं श्री भवानी जू कौ व्रत करिहौं। तुम काहू सौभाग्य वती स्त्री कौं ल्यावो। आज्ञा पाय चारुदन्त काहू असती स्वइच्छा चारणी कौं लै आयो। तदराजपुत्र ने पवित्र होय वाहि एकांत लै जाय पाँय पखाल भोजन करवाय केसर कपूर चन्दन सों चरचि बस्त्र आभरण पहिराय अति आदर मान तें बिदा कियो। तब गैल में जाय चारुदन्त ने लोभ करि वा नारी सों कह्यो कि या द्रव्य तें कछु मोहू कौं बांटि दे। उन कही मोहिं राजकुमार ने दयो है। मैं तोहिं क्यों बांटि दैहौं। निदान वाने धनन दियो। तद चारुदन्त ने आपने मन मांहिं बिचार्यो कि राजपुत्र तौ नित एक महीना लौं इतनौं धन देय गो। यातें आपनी स्त्री कौं क्यों न ल्याऊं जु इनेक द्रव्य मेंत मेंत आपने घर लै जाऊं। यों बिचारि वह निज घर आय लावण्यवती सों बोल्यो कि हे प्रिये राजकुमार इतनौं धन नित प्रति देय गो। जो तू जाय तौ वह सब धन आपने गेह मांहिं आवे। लावण्यवती बोली स्वामी हौं तिहारी आज्ञाकारी हौं। जो तुम कहो सो

मोहिं प्रमाण है। निदान लोभ के मारे वाने आपनी नारि राजपुत्र कौं आन दई। पुनि राजकुमार ने वाहि देखि मन में कही कि जाके मिलन की अभिलाषा ही सो तौ आय मिली। अब आपनौ मनोरथ कौं न पूरो करौं। यह समझि निरालो करि वाने आपने मन की आश पूजी अरु धन दै वाहि बिदा कियो। तब चारुदन्त बनियां निज मन्दिर में जाय स्त्री कौ शृंगार छिन्न भिन्न देखि आपनी करणी औ करतूत तें आपही पछतायो॥

दोहा

अर्थ न समझो बात कौ ग्रंथ न दीनो मन्न॥
नागरलोगा के देखते भयो भांड महाजन्न॥

इतनी कथा कथ फेरि मूसा बोल्यो अहो मित्र मंथरक जो तुम आपनी ठौर तें अनत जाय हो तो दुख पायहो। आगे ईदुर की बात न मान मंथरक भय को मार्यो सरोवर छांड़ि बनकौं चल्यो। अरु वे तीनौं हू वाके साथ है लये। आगे जातही एक व्याधी आयो। तिन कच्छप कौं पकरि बांध्यो। कहतु हैं जब आपदा आवै तब सुख में दुख बढ़ावै। कैसो हू बलवान बुद्धिवान होय पर आपदा तें न छूटै। पुनि ऐसें हू कह्यो है कि सम्पत में विपत संयोग में वियोग लाभ में हानि गुण में दोष ज्ञान में गिलान मान में अपमान हांसी में विषाद भलाई में बुराई ये सब समय पाय आपतें आप आय घटिति हैं। पर भय औ आपत्य है सो प्रीति की कसौटी हैं। याही में सज्जन अरु दुर्जन जान्यौं जातु है। औ यौं कहवे कौं तो सबही सबके मित्र हैं॥

दोहा

सुख में सज्जन बहुत है दुख में लीने छीन॥
सोना सज्जन कसन कौं विपत कसौटी कीन॥

आगे मंथरक कौं बध्यो देखि वे तीनौं चिन्ता करनि लागे। तद मूसा ने हिरण सों कह्यो मित्र तुम पंगु बनि बधिक के आगे है कढ़ो। जब यह बधिक मंथरक कौं त्यागि तिहारे पाछे भजिहै तब हौं याके बंधन काटि हौं। काग बोले बहुरि तुम परादयो। यह बात मूषक तें सुनि कुरंग ने त्यों हीं करी। बधिक ने देख्यो कि मृग लंगरातु जातु है। याहि दौरि के पकरि लेउं। यों बिचारि ब्याधी आपनो सरबसु जल के नीर रूख तरे राखि हिरण के पाछे दौर्‌यो। त्यों मूसा ने मंथरक कछुआ के बंधन काटे। वह नीर मांहिं गिर्‌यो। काग पुकार्‌यो भाई भाग्यो। परमेश्वर ने काज सुधार्‌यो। यह सुनतही मृग चौकरी मारि पराय्यो। ब्याधी निराश है उलट्यो फिर आय्यो। ह्यां देखे तो कछुआ हू नाहिं। तब कहनि लाग्यो कि मोहिं ऐसो करनो उचित न हो जो हाथ को छोंडि और कौं धाय्यो। कह्यो है सति लालच नीको नाहीं। जैसो मृग को लोभ कियो तैसो हाथ आयो कछुआ खोय दियो। ऐसें पछताय ब्याधी ह्यां तें गयो। ये चारों मित्र तहां सुख सों रहे। उनके मनोरथ पूरे भये॥

इतनी कथा कहि विष्णु शर्मा बोल्यो महाराज कुमार सुनो। या कथा के सुनतें सज्जन सों मित्रता होय मन में संतोष आवे घर मांहिं लक्ष्मी बाढ़े राजा राजनीति सों चलै प्रजा की रक्षा करै। यह मित्रलाभ प्रथम कथा कही।

यामें जाकी रुचि होय सो कबहूं ठगायो न जाय। सदा निर्मल बुद्धि तें संसार के सब काज साधै। वक्ता श्रोता कौ श्री महादेव जू कल्याण करैं॥

अथ द्वितीय कथा आरम्भ

राज कुमारनि विष्णु शर्मा सों कह्यौ अहो गुरुदेव मित्रलाभ की कथा तौ हमनि सुनी। अब कृपा करि दूजी सुहृद्भेद की कथा सुनाओ। तहां विष्णु शर्मा कहतु है कि महाराज कुमार पहिले एक बद्ध श्री बाघ सों स्यार नें प्रीति करवाई अरु पाछे बद्ध कौं मरवायो वाही बाघ सों। राज कुमारनि कही यह कैसी कथा है। तद विष्णु शर्मा कहनि लाग्यो॥

दक्षिण दिशा में सुवर्णा नाम नगरी। तहां एक बर्द्धमान नाम बनियां। सो बड़ो धनवंत हो। काहू दिन वाने एक और सेठ की सम्पत्ति देखि आपने मन में बिचार्यो कि काहू भांति और हू लक्ष्मी इकट्ठी करौं तौ भलो। कह्यौ है आपतें अधिक बल द्रव्य विद्या देखि काको मन मलीन न होय। अरु ऐसेंही आपनी सम्पत्ति को बड़वार देखि को न मन मांहिं अहंकार करै क्योंकि धनाढ्य कौं सब कोऊ मानै। पुनि ऐसें हू कह्यो है कि असाहसी श्री आलसीन कौं लक्ष्मी आपही त्यागति है। जैसें वृद्ध पुरुष कौं तरुणा स्त्री न चाहै तैसें विन्हें लक्ष्मी हू। अरु जे आलसी होंय संतोष करि घर मांहिं बैठ रहैं तिनकौं विधाता कबहू न बढ़ावै। कह्यो है भगवान असाहसी पुत्र हू काहू कौं न देय। बहुरि कहतु हैं कि अनपाई वस्तु कौ यत्न

कीजै तौ प्राप्त होय अरु वाकी चिंता न करिये तौ न मिलै। ऐसें विचारि बनियां पुनि मन में कहनि लाग्यौ कि जो धन पाय न खाय न उठावे वह धन कौन काम आवै। औ बल भये शत्रु कौं न मारिये तौ वाबल कौं ले कहा करिये। अरु विद्या पढ़ि धर्म न जानिये तौ वा विद्या तें कहा लाभ। पुनि शरीर पाय उपकार न होय अरु दुंदी न जीते तौ शरीर सों कहा अर्थ। कह्यौ है थोरो २ उद्यम करहू धन बाढ़े जैसें बूंद बूंद जल करि घट भरै। अरु बिन विद्या औ धन जो जन सांस लेतु है सो लुहार की धवनि समान जानिये। ऐसें शोच बिचारि करि बर्द्धमान बनियां नंदक औ संजीवक बर्द्ध रथ मांहिं जोनि बहुत धन द्रव्य लादि रथ पर चढ़ि काश्मीर की ओर चल्यौ। कह्यौ है सामर्थी कौं कहा भार व्यापारी कौं कहा बिदेश मीठो बोले ताहि कौन परायो। आगो अध्वर गैर में चलत दुर्ग नाम महा वन मांहिं संजीवक कौ पांव टूट्यो। पछार खाय बर्द्ध गिर्यौ। वाहि गिर्यौ देखि महाजन कहनि लाग्यौ कि कोऊ कितेक उपाय करि मेरो फल बिधाता के हाथ है। ऐसें बिचार बर्द्ध कौं वहांहीं छोरि बनियां आगो कौं चल्यौ। बर्द्ध ह्यां रह्यौ। कितेक दिवस मांहिं वह हरे हरे घास खाय निर्मल जल पी अति बलवान भयो। अरु एक समय परमानन्द करि दड़क्यौ। वा ठौर एक पिंगल नाम बाघ राज्यकरतु हो। पर वाहि काहू ने राजतिलक न दियो हो। कह्यौ है आपने बल करि सिंह मृगराज ही कहावै। सो नाहर वाही काल यमुना तीर नीर पीवनि गयो। ह्यां जाय संजीवक के दड़कवे कौ शब्द सुनि मनहीं मन भयमान ह्वै पानी बिन पिये ही आपनी ठाम आय बैठ्यो।

नहीं दमनक औ करटक है स्यार रहैं। सो यह चरित्र देखि दमनक ने करटक तें कह्यो कि मित्र तुम कछू देख्यो जु आनि यमुना तीर पै जाय बाघ बिन पानी पिये आपनी ठांव सुचित ह्वै आनि बैठ्यो। ताको कारण कहा। करटक कही बंधु मेरो तौ यह बिचार है कि जाकी सेवा न करिये ताकी बात पूंछे तें कहा प्रयोजन। कहतु हैं जा गांव न जानौं वाको पैंड़ो पूंछवे तें कहा काम। मोहिं तौ अब याकी सेवा करत हू लाज आवतु है। पर अहार के लोभतें करतु हौं। कह्यो है जे सेवा करि धन चाहतु हैं ते आपनो शरीर पराये हाथ बेचतु हैं। अरु जे और के हेतु भूख प्यास घाम शीत वर्षा सहतु हैं तिनकी तपस्या में संवाट जानिये क्योंकि पराधीन परवश को जीवन मृतक समान है। कहतु हैं॥

कवित्त

देनो भलो सुपथ्य कुपथ्य पैन दूनों भलो सूनो भलो भौंन पै न खल साथ करिये॥
संतन को लघु संग जड़ को गुरुत्व छांड़ि साधु को सहजश्री अ साधु कृपा डरिये।
थोरिये सराफ़ी नफ़ा बहुत जुवा को छांड़ि परिके कुसंग आपबलसों सपरिये
हारि मानि लीजे पै न रारि कीजे नीचनि सों सरबस दीजे पै न परबश परिये॥

मृतक कौन कौं कहतु हैं कि जा सेवक कौं ठाकुर न चाहै। अरु कहै इतनें उत जा बोलै जिन ठाढ़ो रह ऐसें अवज्ञा करि वाको मान मर्दन करै तौ हू सूरख धनके हेतु पराधीन रहै। जैसें वेश्या पर पुरुष के निमित्त शृंगार करै तैसें सूरखहू पढ़ि गुनि पराधो आधीन होय। यातें मेरे जान सेवक के समान सूरख जगत में कोऊ नाहिं। दमनक कही मित्र तुम अब बात जिन कहो। कह्यो है बड़ो जगत करि भलो ठाकुर मेलै जासों मन कामना पूरण होय। छत्र चमर गज अश्व

आदि सब लक्ष्मी के पदार्थ मिलैं। जौ न सेइये तौ कहां सो पाइये। तातें सेवा अवश्य करिये। बहुरि करटक कही हितू जो तुम कह्यौ तासों हमें कहा प्रयोजन। कह्यौ है बिन समझे बूझे काहू के बीच परे सो मरै जैसें एक बनचर मर्‌यौ। दमनक कही यह कैसी कथा है। तहां करटक कहतु है॥

मगध देश में सुभदत्त नाम कायस्थ। तिन धर्मारण्य बन में क्रीड़ा की ठौर बनावन कौ आरम्भ कियौ। तहां कोऊ बढ़ई काठ चीरतु चीरतु वा मांहिं लकरी की कील दै काहू काम कौं गयौ। अरु एक बन कौ बानर चपलाई करतु करतु कालवश वाही काठ पर कील पकरि आय बैठ्यौ। अरु वाके अंडकोष वा काठ की संधि मांहिं लटकि परे। ज्यौं उनि चंचलता सों युक्ति करि कील काढ़ी त्यौं काढ़त प्रमाण अंडकोष चपे औ मर्‌यौ। तातें हौं कहतु हौं कि बिन स्वारथ चेष्टा न करिये। दमनक कही मित्र जो प्रधान होय सो सब काम करै। सेवक कौं ऐसो बिचारनो योग्य नाहीं। करटक बोल्यौ भाई अपनो काम छोरि और के काम में परनो उचित नाहीं। अरु जौ परै तौ वैसें होय जैसें पराये काज में परि बिचारो गदहा मार्‌यौ गयौ। दमनक कही यह कैसी कथा है। तद करटक कहतु है॥

वाराणसी नगरी मांहिं कोऊ कर्पूरपाट नाम धोबी रहै। सो तरुण स्त्री व्याह ल्यायौ। वाके साथ एक दिन रात कौं क्रीड़ा करि सुखनींद मांहिं सोवतु हो। वाके घरमें चोर पैठे। अरु ताके अंगना में एक गदहा औ कूकर हो। सो गदहा चोरनि कौं देखि कूकर तें बोल्यौ अरे यह तेरो काम है कि ठाकुर कौं जगाय दै। उनि कही अरे मेरो अकाज जिन कर। तू

जानत नाहिं जु यह मोहिं रखवे कौं नाहिं देतु। सुन कह्यौ है जब लौं ठाकुर पै आपदा न परै तब लौं सेवक कौ आदरहू न करै। पुनि गर्दभ कही सुनरे बावरे जो काम परे मांगै सो कैसो चाकर। उनि कही जो काज परे सेवक कौं चाहै सो। कैसो ठाकुर। सेवक औ पुत्र समान है। इन कौ पोषण भरण करनौ स्वामी कौं उचित है। गदहा बोल्यो अरे तू तौ पापी है जो स्वामी कौ काज नहीं करतु। अरु मेरो नाम स्वामि भक्त है। तातें जासें स्वामी जागि है सो उपाय करिहौं। बहुरि स्वान कही रे खरज कौं पीठि दै सेदये अगिन आवो धरि तापिये अरु स्वामी सों आगो पाछे शुद्ध भाव रहिये। पर यह स्वामी वैसो नाहिं। अरु जो तू मेर काज मांहिं पांय धरैगो तौ मेरो मौन तोहि लागिहै। वाकी बात सुनि गदहा ह्वां तें उसरि धुबिया के निकट जाय कान सों मुंह लाय रेंक्यो। तब वा रजक ने नींद सों चौंकि क्रोध कर गदहा कौं लुहांगियन मार्यो। वा मारतें वह मर्यो॥

तातें हौं कहतु हौं कि और के अधिकार मांहिं कबहू न पीरये हमारो काम तौ यहहै कि अहार खोजनौ। पै आज हमें वाहू कौ शोच नाहीं क्योंकि काल्ह कौ मांस बहुत ध रयो है। वातें हम अनेक दिन पेट भरि काटिहैं। दमनक कही जो तू अहार ही के लये सेवा करतु है तौ यह भलो नाहिं राजा की सेवा करनौं सो तौ स्वारथ परमारथके निमित्त कि जाकी सेवा तें मित्र साधनि कौ उपकार करिये औ शत्रु दुष्टनि कौ मारिये। यह मन में वासना रहनि है। केवल उदर भरन के हेतु नाहीं सेवत। कह्यौ है संसार में जाके आसेर अनेक लोग जीवें ताही कौ जीवन सुफल है।

सब सेवक समान न होंय। सेवक २ में हू बड़ो अन्तर है जैसे एक पांच कौड़ी कौं हू अँकरो श्री एक लारवनि ते हू न पाइये। कहतु हैं घोड़ा हाथी काठ पाथर कपरा स्त्री पुरुष अन्न दून के मोल मोल में बड़ो भेद है। देखो कूकर थोरोई मांस हाड़ ते लपट्यो पावै तो वाही मांहिं संतोष करि रहै। अरु सिंह आगे स्यार ढाढ़ो रहै तो हू वह वाहि छाँड़ि गज कौं ही मारै नातें हौं कहतु हौं कि जे बड़े हैं ते बड़ोई काम करतु हैं। पुनि कूकर पूंछ हिलावै पेट दिखावै तब टूका पावै। अरु हाथी स्थान बंध्यो के तो यतन उपाय करि घने आदर सों अहार को ग्रास लेय। कह्यो है जगत मांहिं ज्ञान पराक्रम यश अहंकार सहित एक घरी जीनों हू भलो। अरु मान रहित काग की भांति विष्टा खाय अनेक दिन जियो तो कहा। जो आपनोही पेट पालि जियो तो वा मनुष्य श्री पशु में कहा अंतर है। पुनि करटक कही कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहिं। बहुरि दमनक कही भाई समय पाय मंत्री ह्वै वे कौ यत्न करिये। बड़ो पाथर कष्ट करि उठाइये पै गिराइये सहज में। श्री आपनी प्रतिष्ठा राखिवे कौं उपाय सदा करिये। पुनि करटक कही बन्धु तुम कछु जानतु हौ कि सिंह आज काहे डर्यो। दमनक बोल्यो भाई या में कहा जानवो है। पण्डित बिन कहे ही जाने अरु कहे तें तो पशु हू पिछाने। पर जाकौं जो भावै सो भलो। मेरे जान तो राजा की सेवा मांहिं रहिये श्री जब राजा पुकारै ह्यां कोऊ है तब कहिये महाराज कहा आज्ञा होनि है दास बैठ्यो है। वा भांति यद पुकारै तद याही रीति ऊतर देइ। अरु जो कछु कहै सो सावधान ह्वै सुनि लेइ। कह्यो न उलंघै।

छिन भर साथ न छांड़ै। परछाईं कौ भांति संग लाग्यौ रहै। करटक कही हितू कह्यौ है अन अवसर नृपति के निकट जाय तौ निरादर होय। दमनक बोल्यौ तौहू सेवक स्वामी कौं न छाँड़ै। कह्यौ है लोगनि के भय उद्यम औ अजीर्ण के डर भोजन न करनौ कपूत कौ काम है। कैसौहू अकुलीन मलीन विद्याहीन पुरुष राजा के समीप रहै तासों हित करै। कहतु हैं अग्नि स्त्री राजा लता ये निकटवर्त्ती सों लग चलतु हैं। यामें संदेह नाहीं। करटक कही तू राजा सों पूंछे गो तुम क्यौं डरे। उनि कही प्रथम जाय हौं राजा कौं देखि हौं प्रसन्न है कै उदास। इन कही यह तू कैसें जानै गो। पुनि उनि कह्यौ जो ठाकुर सेवक कौं दूर तें आवत देखि प्रसन्न होय आपहीतें बतराय निज सेवकनि मांहिं गनै। थोरी सेवा देखि बहुत मया करै। दिन दिन आदर देइ तौ जानिये। ठाकुर संतुष्ट है। अरु जब राजा सेवक कौं आवतु देखि आंख चुरावै औ दैवे कौं आज काल्ह करि आशा बढ़ावै काहू बात मांहिं चित न देइ गुण में औगुण काढ़ै तब जानिये राजा असंतुष्ट है। तातें तुम चिन्ता कछु जिन करौ। मैं जैसें राजा कौं देखि हौं तैसीही बात करि हौं। कह्यौ है जो सयानौ मंत्री होय सो अनीति में नीति औ विपत्ति में सम्पत्तिक रि दिखावै। बहुरि करटक कही भाई समय बिन बृहस्पति हू कहै तौ अपमान ही पावै। मनुष्य की किन चलाई। पुनि दमनक बोल्यौ अहो मित्र तुम जिन डरौ। हौं बिन अवसर न कहि हौं। कह्यौ है जब कोऊ कुमारग में चलै तब वाकौ हितू होय सो बिन कहे न रहै। औ समय असमय मंत्र न कहै तौ मंत्री काहे कौ क्योंकि अवसर पर ही बड़ाई पाइयतु है॥

दोहा

समय चूकके सकलनर फिर पाछे पछिताय ॥ ॥
ना यह रहै न वह रहै रहै कहनि कौं बात ॥ ५ ॥

इतनी कहि फेर दमनक बोल्यो अब जो मोहिं कहो सो करौं। करटक कही जामें आपनो भलो जानौं सो करौं। यह सुनि दमनक पिंगल राजा के नेरे गयो। दंडवत करि कर जोरि सन्मुख ठाढ़ो रह्यो। तब राजाने हंसिके कह्यो दमनक तू सो पास बहुत दिन पाछे आयो। इतनौं कहि बैठायो। पुनि दमनक ने राजा की अन्तर्गति पाय वाकौं भयमान जानि ऐसें कह्यो कि पृथ्वीनाथ तिहारे हमारो काम तो नाहीं। पर हम सेवक हैं। हम कौ यह योग्य है कि समय असमय आयो चाहैं क्यौंकि एक समय दांत कान कुरेदवे कौं तृण हू कौ काम परतु है। तातें सेवक बेला कुबेला काज न आवै तो पाछे वह कौन काम कौ। यद्यपि बहुत दिन भये तुम मोसों कछु मंत्र नाहीं पूंछ्यो। पर मेरी बुद्धि नाहीं घटी। कह्यो है जो मणि पाय बांधिये औ काच शिर नीहू काच सो काच अरु मणि सो मणि। पुनि अपमान कियेहू जाकी बुद्धि स्थिर रहै सो पण्डित। यासों महाराज तुमकौं सदा विवेक करनौं उचित है। संसार में उत्तम मध्यम अधम तीन प्रकार के लोग हैं। जाकौं जैसो देखिये ताकौं तैसो अधिकार सौंपिये अरु सेवक की सेवा बूझिये। जो सेवक की सेवा राजा न बूझै तो सेवक मन मांहिं महा दुखी रहै। तातें महाराज आभरण औ सेवक जहां कौं होय तहां हीं शोभा पावै। अरु राजा मंत्री की बुद्धि तें चलै तो अनेक सेवक आवैं। कह्यो है अश्व शस्त्र शास्त्र वीन नर नारी ये सब भले के हाथ

रहैं तौ भले रहैं औ बुरे के हाथ बुरे। पुनि कह्यौ है जो राजा सुबुद्धी पर कुमाया करै तौ वह याके निकट न रहै जो सुबुद्धी राजा के ढिंग न रहै तौ नीति जाय। नीति गये लोग दुरबीहोंय। अरु भूपति मया करै तौ सब ही मानैं। नीकी बात सबकौं सुहाय पै मीठो बोलनौं महा कठिन है। इतेक बातें जब दमनक ने कहीं तब बाघ राजा बोल्यौ अहो दमनक तुम हमारे मंत्री के पुत्र हैके हम पास कबहूं न आये। ऐसो तुम्हें न बूझियै। अब आवन कैसे भयौ। दमनक कही कि महाराज हौं तुमतें कछु पूंछवे कौं आयौ हौं। आप की आज्ञा पाऊं तौ पूंछौं। सिंह कही दमनक तुम हमतें निस्संदेह पूंछो। पुनि दमनक बोल्यौ महाराज तुम पानी के तीर जाय बिन नीर पिये सुचित है आपने स्थान पै जु आय बैठे सो ताको। कारण कहा। यह कृपा करि मोहिं कहो तौ मेरे मन को संदेह जाय। उन कही भाई मेरे मन की बात काहू सों कहवे की नाहीं। पर तू मेरे मंत्री को पुत्र है। यातें हौं तोतें कहतु हौं। तू काहू सों या बात कौं जिन कहियो कि जब आजहौं जल पीवे कौं गयौ तब एक अति भयानक शब्द सुन्यौं। तातें भय को मार्यो हांतें बगदि यहां आय बैठ्यो हौं। अरु जी में बिचारतु हौं कि या बन में कोऊ महाबली यतु आयौ है तातें या बनतें अनत जाय बसिये सो भलो। पर यहां रहवे योग्य नाहीं। यह सुनि दमनक बोल्यौ महाराज कछु कहिवे की नाहिं। वह शब्द मैंने हूं जबतें सुन्यौं है तबतें मारे भय के थर२ कांपतु हौं। पर मंत्री कौं ऐसो न चाहिये जु पहलेही ठौर छुड़ावे कै लरावै। औ राजानि कौं यह उचित है कि आपदा में इतनेन की परीक्षा सैन्य सेवक स्त्री बहि

बल क्यों कि इन की कसौटी विपत्ति है। नाहर कही मेरे मन मां-हिं अति शंका है। तब दमनक ने निज मन में कह्यो कि तुमकों शंका न होती तो हमसों काहे कों बतराते। ऐसे मन में समु-झि पुनि बोल्यो कि धर्मावतार जौलों हम जीवत हैं तौ लौं। तुम भय कछु जिन करो। हौं करटक आदि सब सेवक बुलाय लेत हौं। नीति में ऐसो कह्यो है कि आपत्य के समय राजा। आपने सब सेवकनि कों बुलाय एकमतो करि अधिकार सौंपे। इतनी कहि दमनक करटक कों बुलाय ल्यायो औ राजा सों मिलायो। पुनि राजा ने इन दोउअन कों बागे प-हिराय पान दै वा भयकी शान्ति कों बिदा कियो। आगेउ-गर में जात करटक ने दमनक सों कह्यो कि भाई तुम बिनसु-झे राजा कौ प्रसाद लियो। सो भली न करी। कहा जानेहम तें वा भय कों निवारण है सके कै नाहिं। कह्यो है काहू की वस्तु बिन समुझे न लीजिये पर राजा कौ तौ प्रसाद विशेष कर न लीजे क्योंकि जौ कबहूं काज न होय तौ राजा क्रोध करै अरु न जानिये कहा दुख देय। ऐसें हू कह्यो है कि राजा की दया में लक्ष्मी बसतु है अरु पराक्रम में यश क्रोधमें काल और सब देवतानि कौं तेज भूपाल में है। तातें नर नरपति की आज्ञा मांहिं रहै तौही भलो क्योंकि पृथ्वीपति मनुष्य रूप कोऊ बड़ो देवता है। बहुरि दमनक कही मित्र तुम चुप-के रहो। या बातको कारण हम जान्यों कि यह बहु के बोल-वे को शब्द सुनिके डर्यो है। अरु बैल कौं तौ हमहूं मारि स-कतु हैं। सिंह कौं वह कहा करि है। पुनि करटक कही भाई जौ ऐसी ही बात है तौ राजा सों कहि के उनके मनको भय काहे न दूर कियो। दमनक कही हित यह बात प्रथमही।

नरपति तें कही होती तौ हम तुम कौं अधिकार कैसें मिलतौ । कह्यौ है सेवक स्वामी कौं निश्चिन्त कबहूं न राखै । जौ राखै तौ दधिकरण बिलाव की भांति होय । यह सुनि करटक कही यह कैसी कथा है । तब दमनक कहतु है ॥

अर्बुद पर्बत की कन्दरा में एक महा बिक्रम नाम सिंह रहै । जब वह वहां सोवै तब एक मूसा बिलतें निकरि वाके केश काटै । यद वह जागै तद बिल में भजि जाय । कह्यौ है छोट शत्रु बड़नितें न मरैं । वा मूषक की दुष्टता देखि बाघने निजमन में बिचार्यो कि याकी समान कौं कोऊ ल्याऊं तौ यह मार्यो जाय । नातौ याके हाथतें सोवन न पायहौं । यह बिचार गांव में जाय एक दधिकरण नाम बिलाव कौं अति आदर सों ल्यायो अरु राख्यो । वह हू वा कन्दरा के द्वार बैठ्यो रहै अरु बिलाव के भय तें मूसा बिल सों बाहर न निकरै । सिंह सुखनींद सोवै । यातें मूसा के डरतें बाघ बिलाव कौं अति आदर करै । आगे कितेक दिन पाछे एक दिन दाव पाय वा मूसा कौं बिलाव ने मारि खायो । जब सिंहने मूषक को शब्द न सुन्यौं तब उनि मन माहिं बिचार्यो कि जाके कारण याहि ल्यायो हौं सो काम तौ सिद्ध भयो । अब याहि राखिवे तें कहा प्रयोजन । बाघ ने ऐसें बिचार वाको अहार बंद कियो । तब बिलाव वा ठौरतें भूरयो मरि मरि परायो । यातें हौं कहतु हौं कि ठाकुर कौं कबहूं निश्चतौ न राखियै ॥

इतनौं कहि दमनक करटक कौं एक रूख तरे ऊंची ठौर बैठाय केतक जम्बुक वाके निकट राखि आप एकलौ संजीवक के पास जाय बोल्यो तू कहां तें आयो है । जब उनि आपनी सब पूर्व अवस्था कही तब इन कही या बन को राजा

सिंह है। तुम ह्यां कैसें रहिहो। पुनि भयमान होय वृषभ कही तुम काहू भांति मेरी सहायता करो। बहुरि दमनकने आपनी घातें वाहि निर्भय करि कह्यो कि मेरो बड़ो भाई करटक राजा को मंत्री है। प्रथम उनतें तोहिं मिलाऊंगो। पाछे राजा तें हू भेंट कराऊंगो। ऐसें कहि दमनक ने वा बहू कों करटक के समीप लै जाय वाके पायन पर्‌यो। तब करटक ने बैल की पीठ ठोंकि कै कह्यो अब तुम या बन मांहिं अभय चरनु फिरो अरु काहू भांति की चिन्ता निज मनमें जिन करो। ऐसें वाको भय मिटाय साथ लै राजपौंर पर आय बैठे। कह्यो है बलतें बुद्धि बड़ी। देखो बल बिन बुद्धि सों गज बश करतु हैं। पुनि संजीवक सों करटक कही अब तुम ह्यां बैठो। हम राजा पै होय आवें। तब तुमहूं कों लै जायंगो। इतनों कहिवे दोऊ सिंह पास गये औ प्रणाम करि कर जोरि सन्मुख ठाढ़े भये। तब राजा ने उनि तें अति मधुर बचन सों पूछ्यो कि जा कार्य के लये गये हैं वाको समाचार कहो। तहां दमनक हाथ जोरि नीचो मुह करि कहनि लाग्यो महाराज हम वाहि देख्यो। सो अति बलवंत है पर हमारे समझायवे तें वह आपसों मिल्यो चाहतु है। हम वाहि अबहीं लै आवतु हैं। पै आप सावधान ह्वै बैठिये। वाके शब्द तें न डरिये। शब्द कों कारण बिचारिये जैसें शब्द को कारण बिचारि कुटनी ने प्रभुता पाई। राजा बोल्यो यह कैसी कथा है। तब दमनक कहतु है॥

श्री पर्वत में ब्रह्म पुर नाम नगर। अरु वा पहाड़ की चोटी पै एक घंटकरण नाम राक्षस रहै। सो वा नगर के निवासी सब जानें क्योंकि वाको शब्द सदा सुन्यों करें एक दिन नगर

मेंतें चोर घंटा चुराय गिर पर लियै जावु हो ताहि तहां बाघ ने मारि खायो अरु वह घंटा बानर के हाथ आई। जब वह बजावै तब नगर निवासी जानैं कि राक्षस डोलतु है। काहू दिन कोऊ वा मरे मनुष्य कौं देखि आयो। तिन सब तें कह्यो कि अब घंटाकरण पिसाच कै नए खानि लाग्यो। यह मैं स्वदृष्टि देखि आयो। वाकी बात सुनि सारे अवध के नगर के सब लोग भजवे लागे। तब कराला नाम एक कुटनी ने वा घंटा के बजवे कौ कारण जानि राजा सों जाय कह्यो कि महाराज मोहिं कछु देउ तौ घंटाकरण कौं मारि आऊं। यह सुनि राजा नें वाहि लाख रुपैया दिये अरु वाके मारिवे कौं बिदा कियो। तब वा ने धन तौ निज मन्दिर मांहिं राख्यो अरु बहुत सी खैवे की सामाले बन की गैल गही। ह्यां जाय देखै तौ एक मर्कट रूख पर बैठ्यो घंटा बजावतु है। वाहि देखि याने एक ऊंचे पर सब सामा बिथराय दई। वह बंदर देखतु ही वृक्षतें कूदि ह्यां आयो। पकवान मिठाई फल मूल देखि घंटा पटकि खैवे कौं जौं जानि हाथ चलायो त्यौं घंटा अलग भई। तब याने घंटा लै आपनी गैल गही। नगर में आय याने वह राजा के हाथ दई अरु यह बात कही कि महाराज हौं वाहि मारि आई। यह सुनि औ घंटा देखि राजा ने वाकी बहुत प्रतिष्ठा करी अरु नगर के लोगन हू वाहि पूज्यो॥

तातें हौं कहतु हौं कि महाराज केवल शब्दही तें न डरिये। प्रथम वाको कारण बिचारिये पुनि उपाय करिये। यह तौ श्री शिव जू को बाहन है औ तुम पार्वती के। यातें यह तिहारो आश्रम जानि निर्भय गाजतु है। तुम कौं वाकी

आगतास्वागता करि सेवा करनी योग्य है क्योंकि आज वह तिहारो पाहुनो है। वाकी सेवा तें ईश्वर पार्वती प्रसन्न होंय जो। यह सुनि दमनक नें सिंह बोल्यो कि तुम मिष्टाचार करि वाहि मोतें मिलाओ। वह तो हमारो भ्राता है। पुनि दमनक ने संजीवक बद्ध कौं पिंगल वाघ सों मिलायो। दोऊ आनि मिलि अधिक सुख पायो। कछुक दिननि पाछे उन मांहिं अति प्रीति भई। आगे एक दिन सितकरण नाम सिंह राजा को भाई तहां आयो। तब संजीवक ने बहुटेरि सुनायो कि महाराज आज तुमनि जो मृग मार्यो हो वाको मांस कहां है। सिंह कही भाई कण्टक दमनक जानें। पुनि संजीवक बोल्यो कि महाराज तुम उनतें पूछो तो सही है कै नाहिं। बहुरि नाहर उत्तर दियो कि हमारे यही रीति है जो ल्यावें सो उठावें। फेरि संजीवक बोल्यो महाराज मंत्री कौं ऐसो न बूझिये कि जो आवे सो उठावे कै राजा को आज्ञा बिन काहू कौं देइ। यह नीति नाहीं। कह्यो है आपदा के अर्थ धन राखिये। औ मंत्री ऐसो चाहिये जो राजा के धन को संग्रह करे थोरो उठावे बहु न जोरे। राजा को भंडार प्राण समान है। सब कोऊ धन के निमित्त राज सेवा करतु हैं। धन हीन भये घर की नारी हू न मानै। और की तो कहा चली। या संसार में धनही की प्रभुता है। जाके पास धन सोई बड़ो। ये प्रधान के दूषण हैं अति खरचे प्रजा की रक्षा न करे अनीति अधर्म कारे भंडार भरे राजा के सन्मुख झूंठ बोलै। तो अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय क्योंकि बिन सोचे बिचारे काज करे तें काज कबहूं न रहै। संजीवक ने जब यह बात कही तब सितकरण बोल्यो भाई तैं इन स्यारन कौं अधिकारी कियो सो भली करी

परहम प्राचीन लोगनि तें सुन्यौं है कि ब्राह्मण क्षत्री सम्बन्धी उपकारी औ मित्र इनकौं अधिकार न सौंपियै कौंकि ब्राह्मण धन खायतौ राजा दण्ड न दै सकै। अरु क्षत्री जबबल पावै तब राज दबायलेय। पुनि सम्बन्धी आज्ञा न मानै। उपकारी सबलुच्छ जानै। मित्र राजा सम आप कौं गनै। तातें इनकौं अधिकार कबहूं न दीजियै। बहुरि ऐसें हू कह्यौ है कि चट प्रधान कौं न तारियै। सहज सहज निचोरियै जो स्वान कौं चीर। यद वाने याहि भरमायौ तद याहू के मन मांहिं कपट छायौ। कहतु है वेश्या काकी स्त्री औ राजा काकौ मीत॥

कवित्त

सांप सुशील दयायुत नाहर काग पवित्र औ सांचौ जुआरी
पावक शीतल पाहन कोमल रैन अमावस की उजियारी॥
कायर धीर सती गणिका मतवारो कहा मतवारो अनारी॥
मोतियराम सुजान सुनो किन देखि सुनी नरनाह की यारी।

पुनि राजा बोल्यो कि भ्राता तुम सांच कहतु हौ। ये दोऊ मेरो कह्यो नाहीं मानतु औ मोहिं दुख देतु हैं। बहुरि सित करण कही भाई कह्यौ है कि अहंकार तें यश जाय कुविसन तें ज्ञान आलस्य तें धन क्रिया बिन कुल औ लोभ तें धर्म। पुनि ऐसें हू कह्यौ है॥

दोहा

आज्ञा भंग नरेन्द्र की विप्रनि कौं अपमान॥
भिन्न सेज नारीन कौं बिना शस्त्र बध जान॥

अरु नीति तौ यौं है कि पुत्र हू कह्यौ न मानै तौ राजा वाहू कौं दण्ड देय। पुनि चोर अरु लोभी प्रधान तें प्रजा की रक्षा

करि पुत्रकी भांति पाले। अरु सुनि भाई। आज मैं तेरो अन्न खायो है। ताते हौं तेरे हितकी कहतु हौं। यह संजीवक बड़ो साधु है। शुभ चिन्तक औ सुकृति की खान है। यातें आपनो भलो चाहो तो याहि अधिकारी करो। यह बात राजा ने भाई की सुनि संजीवक कौं अधिकारी कियो औ दमनक करटक तें अधिकार खोस लियो। तब दमनक ने करटक तें कह्यो मित्र अब कहा करिये। यह तो हमारोई किया दोष है। जैसें चित्र लिखे कौं छूवत कंदर्प केतु ने औ माणि के लोभ तें महाजन ने अरु आपनी करतूत तें दूती ने दुख पायो तैसें हमहूं आपने किये को फल पायो। पुनि करटक बोल्यो यह कैसी कथा है। तब दमनक कहतु है॥

कंचन पुर में बीर बिक्रमादित्य नाम राजा हो। वाके सेवक एक नाऊ कौं मारनि लै चले। तहां कंदर्पकेतु संन्यासी अरु साहु ने वाहि देख्यो। तब संन्यासीने राजा के चाकरनि सों कह्यो कि या नाऊ को कछु अपराध नाहीं। सेवकनि कही याको ब्यौरो कहो। पुनि संन्यासी बोल्यो कि प्रथम मेरो दोष मोहिं लाग्यो। सो सुनौं। सिंहल दीप को जम्बु केतु राजा। ताको मैं पुत्र हौं अरु कंदर्पकेतु मेरो नाम है। एक दिन एक ब्यौपारी मेरे नगर में आयो अरु उत्तम पदार्थ उनि मोहिं आनि दिखायो। जब मैंने वासों पूंछ्यो कि तैंने यह कहां ते पायो तब उनि प्रसंग चलायो कि महाराज हम ब्यौपारी लोग समुद्र के तीर बनज कौं जातु हैं। तहां बर्ष बें दिन सागर में तें एक वृक्ष निकरतु है। तापै अति सुन्दरि नवयौबना रत्न जटित आभूषण पहरे एक नायक बैठी बैठी आछे आछे पदार्थ भेज२ देतिहै। अरु महाजन

व्योपारी सब लेत हैं औ देश देश बेचत फिरत हैं। इतनी बात जब वाने मोसों कही तब मैं वाहि साथ ले समुद्र तीर गयो। अरु ह्यांजाय वाहि देखत प्रमाण समुद्र में कूद्यो। कूदतही मोहिं एक कंचन को मन्दिर दृष्ट आयो। तद हौं दूत उठि वामों हिं धायो। मोकों देखि वाने एक दूती पठाई। सो चली२ मेरे ढिग आई। मैंने वासों पूँछ्यो यह को है। उनि कही यह कंदर्पकेल विद्याधरणि के राजा की पुत्री है अरु रत्नमंजरी याको नाम है। यह बात सुनि मैंने आगे बाढ़ि वाके निकट जाय अधिक सुख पायो। तद उनि कह्यो स्वामी स्वइच्छा तें तुम ह्यां रहो पर यह चित्र लिखवी विद्या कबहू मत छूइयो। आवो गान्धर्व विवाह करि हौं यहां कितेक दिन रह्यौं। एक दिन वाको कह्यो न मानि ज्यों वह विद्या मैं छुई त्यों उनि मोहिं एक लात ऐसी दई कि हौं मगध देश में आनि पर्यो। ता दिनातें वाही के वियोग में संन्यासी भयो डोलतु हौं। आज तिहारी नगरी में आय रात हौं अहीर के घर माहिं रह्यो। मुहां देख्यो कि वह घोस आपनी घुसायन कौं जार के साथ बतराति देखि क्रोध करि थांभ सों बांधि मत्तवारो ह्वै सोय रह्यो। अरु जब आधी रात बाजी तब एक नायन कुटनी वाके पास आय बोली कि सुनरी तेरे बिरह तें वह बापरो मरतु है। वाकी दया विचारि हौं तो पै आई हौं। अब तू विलम्ब जिन करै। मोहिं या थांभ तें बांधि जा अरु वाको भलो मनाय आ। वाकी बात सुनि उनि वैसें ही करी। तब अहीर जाग्यो औ वासों कहनि लाग्यो कि अबतू जार पास क्यों न जाय। जद वह न बोली तद उनि वाको नाक उतार लई अरु मद को मातो पुनि सोय रह्यो। इतेक मेघसायन

ने आय नायन सों पूँछी कि अरी कुशल है। तिन कही बीर तू तौ कुशल ते आई पर मैंने ह्यां आपनी नाक गँवाई। यह सुनि ग्वालनि आपबंध गई अरु अरु वाने नायन कौं बिदा दई। जब नायन आपने घर आई तब फेर घोस जाय्यो औ जो कछु वाके मुख आयो सो कहनि लाग्यो वासमय अहीरी बोली तू मेरो धनी है। मार बांध जो चाहे सो कर। और ऐसो को है जो मोहिं कलंक लगावै। मेरो कर्म औ धर्म अष्ट लोकपाल चांद सूर्य धरनी अकाश अगिनि जल पवन रात्रि दिन दोऊ संध्या जानत्ति है। अरु प्राणी जो कर्म करतु है ताकी उनकौं गम्य है। अब हौं आपने धर्म सत सों कहति हौं कि हे सूर्य देवता जो मैं आपने सत धर्म तें हौं तौ मेरी नासिका काटी न जनाइयो। यह बात सुनि अहीर वाके ढिग जाय देखै तौ नाक ज्यौंकी त्यौं बनी है। देखत प्रमाण वह वाके पाँयन पै गिर्यो औ बोल्यो कि तू मेरो अपराध क्षमाकर। मैं तोहिं बिन अपराध सतायो। पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि स्वामी या में तिहारो कछु दोष नाहीं। यह मेरे ही कर्म को फल है। आगे नायन निज घर जाय नाक हाथ माहिं लिये बैठीही कि भोर भये वाके भर्त्तार ने पेटी मांगी। इन एक छुरा वाके हाथ दियो। तिन क्रोध करि याकी ओर फेंक्यो। तब यह पुकारी कि हाय इन निर्दयीने मेरी नाक पै छुरा मार्यो। याकी पुकार सुनि तुम वाहि बिना शोध बिचार किये पकरि ल्याये औ मारणा कौं लिये जातु हौ। पर याको कछु अपराध नाहीं। अरु साध महाजन मेरे सं गहै। ताकी बात सुनो कि यह बारह वर्ष विदेश कमाय धन लिये आपने घर कौं जातु हो। सो या नगर में आय

रात वेश्या के घर रह्यो। वा सामान्या ने आपने द्वार पै एक काठ को बैताल बनाय कलल गाय वाके मूड़ पर एक रत्न जड़ि राख्योहो। यह साध लोभको मार्यो आधी रात कौं उठि बैताल के निकट जाय हाथ बढ़ाय जौं ही रत्न लयो चाहै त्योंही वाकी कल छूटी वाके दोऊ नर बन्धे। कल छूटवे को शब्द पाय वह वार विलासनि याके ढिग आय बोली कि तू मलयागिर तें सुक्कानि को जो माला ल्यायोहै सो मोहिं दे। नातो ताहि मोर कोटवार के ह्यां जानो होयगो अरु ह्यां तें जीवत न फिरैगो। इतनी बात यह वाकी सुनि भय खाय आपनो सब धन वाहि दै मेरे संग आय लाग्यो है। यह बात संन्यासी तें सुनि राजा के सेवकनि न्याय विचार्यो औ वाहि छाँड़ि वेश्यातें साध कौं धन दिवाय यथा योग्य दण्ड दै सब कौं छाँड़ि दियो। तातें हौं कहतु हौं कि ज्यों उननि आपने दोष तें दुख पायो तैसें हमहू आपने किये को फल पायो। पर भाई करटक अब जो भई सो भई। परंतु तुम जिन शोच करो। सुनो। जैसें मैंने इनतें प्रीति कराई तैसें ही अब वैर करवाय दौं। कह्यो है जे चतुर हैं तें झूँठी बात कौं हू साँची करि दिखावैं जैसें एक ग्रहीरी ने झूँठ कौं साँच करि स्वामी के देखतु जार कौं घरतें निकार्यो। करटक कही यह कैसी कथा है। पुनि दमनक कहतु है॥

द्वार का नगरी में एक धोस की नारि व्यभिचारिणी ही। सुकोटवार औ वाके मोंड़ा तें रहै। एक दिन रात्रि की बेला कोटवार के छोहरातें भोग करि रही ही। ता माहिं कोटवार आय बार पर पुकार्यो। तब याने वाके ढोटा कौं कोठी में लुकाय द्वार खोल दियो अरु ताहू को भलो मनायो। इतेक

मैं वाको धनी आयो। तद इन कोटवार कौं यह सिखवायो कि हौं तो बार उघारनि जाति हौं। पर तुम लौठिया कान्धे पे धरि क्रोध करि घरतें निकरौ। ता पाछे हौं बात बनाय लेउंगी। उनि वैसें ही करी। तब अहीर ने घर में आय आपनी स्त्रीतें कह्यो कि आज कोटवार हमारे घरतें रिसाय कै कौं गयो। अहीरी बोली कोटवार हमारे घरतें क्यों रिसायगो। वाको पूत बातें रिसाय मेरे घर मांहिं आय छिप्यो है। सु वह आपने मौंड़ा कौं मोसों मांगतु हौ। इतेक मांहिं तुम जो आये सो तुम्हें देखि चल्यो गयो। यह कहि घुसायन ने कोटवार के पुत्र कौं कोठी तें निकारि कह्यो कि तू कछू भय मत करै। मैं तोहिं बाहर निकारि देति हौं। जित तेरे सींग समाय तित चल्योजा। ऐसें कहि वाहि घर तें निकारिदियो। कह्योहै।

दोहा

पुरुषनितें दुगुणी क्षुधा बुद्धि चौगुणी होय ॥
काम आठ साहस छगुण या विधि तिय सब कोय

तातें हौं कहतु हौं काम परे जाकी बुद्धि फुरै सोई पण्डित। बहुरि करटक बोल्यौ भाई इन दोऊनमें तो अति प्रीतिहै। तुम कैसें बिगार करवायहौ। फेरि दमनक बोल्यो कि मित्र जो काज उपायतें होय सो बलतें न होय। जैसें एक सांप कौं काहू काग ने मरवायो तैसें हौंहू याहि मरवाऊंगो। करटक कही यह कैसी कथा है। तहां दमनक कहतु है ॥

उत्तर दिशा में विद्याधर नाम पर्वत। वहां एक तरु पर काग कागली रहैं अरु वाकी जर में एक सांप हू। जब कागली ने अंडा दये तब सर्प ने रूरव पर चढ़ि खाय लिये अरु अंडानिके लालच सों नित वृक्ष पै चढ़ि वाके खोंधामें जाय

जाय बैठे। पुनि कागली गर्भ सों भई। तौ उनि बायस तें कही रे स्वामी या तरवर कौं तजि अनत जाय बसिये। तौ भलो। क्योंकि कह्यो है कि जाकी नारी दुष्ट मित्र शठ सेवक बादी घर में नाग को बास ताको मरण नि स्सन्देह होय। यासों ह्यां को रहनों उचित नाहीं। काग कही है प्रिये अब जिन डर क्यौंकि मैंने या नाग को अधिक अपराध सह्यो पर अब न सहौंगो। कागली बोली तुम याकौं कहा करौगे। काग कही प्यारी जो काम बुद्धि तें होय सो बल तें न होय। जैसें एक ससा ने बुद्धि करि महाबली सिंह कौं मार्यो तैसें हौं हूं याहि बिन मारे न छाँडिहौं। कागली बोली यह कैसी कथा है। तहां काग कहतु है॥

मन्दर गिरि पै दुर्दंत नाम एक सिंह हो। सो बहुत जीव जन्तु मार्यो करै। एक दिन बनके सब जीवनि मिलि बिचार करि आपस में कह्यो कि यह सिंह नित आप एक जन्तु खातु है औ अनेक मारतु है॥ नातें याके पास चलिकै एक जन्तु नित दैनों कहि आवें अरु बारी बांधि पहुंचावें। तौ भलो। ऐसें वे आपस में बतराय सिंह के पास गये औ कर जोरि प्रणाम करि मर्याद सों याके सन्मुख ठाढ़े भये। इन्हें देखि नाहर बोल्यो तुम कहा मांगतु हौ। इननि कही स्वामी तुम अहार के लये नित जातु हौ अधिक मारतु हो अल्प खातु हौ। यातें हमारी यह प्रार्थना है कि हम तिहारे खैवे कौं एक जन्तु नित ह्यांही पहुंचाय जैहैं। तुम परिश्रम जिन कियो करौ। उनि कही अति उत्तम। ऐसें वे बाघ तें बचन करि आये। आगे जाकी बारी आवै सो जाय वह खा जाय। ऐसें कितेक दिन पाछे एक बूढ़े शशा की बारी आई। तब

वाने आपने जीमें बिचार्यो कि मेरो शरीर छोटो है। यासों वा-
को पेट न भरैगो। तद हमारे और भाइयन कों खाय गो।
नातें हमारो कुल तो एक दोइ बारी में हीं पूरो करैगो। या-
तें आपने जावतु ही याकों नाश करों तो भलो। यह बिचारि
आपने स्थान तें उठि हरवै हरवै चलि वह सिंह के पास आ-
यो। तब वह याहि देखि क्रोध करि बोल्यो। अरे तू अबेरो
कों आयो। पुनि ससा ने कर जोरि यह बचन सुनायो। स्वा-
मी मेरो कछु दोष नाहीं। हौं चल्यो आवतु हों तुम पाहीं।
गैल माहिं दूजो सिंह मिल्यो। तिन मोसों कह्यो रे तू कित च-
ल्यो जातु है। मैं कही कि हौं आपने स्वामी पास जातु हौं।
उनि कह्यो या बन को स्वामी तो मैं हौं। और स्वामी ह्यां क-
हां तें आयो। पुनि मैं कह्यो कि आज छुड़ाय तो तुम कौं ह्यां
कबहूं न देख्यो हो। इतनी बातके सुनतेही वाने क्रोध करि।
मोहिं बैठाय राख्यो। तद मैं वासों कह्यो कि यह सेवक को
धर्म नाहीं जु स्वामी काज में बिलम्ब करै। तुम मोहिं रोक्यो
है सु मेरो ठाकुर न जानैगो। बरन मेरो कह्यो झूंठ मानैगो
अरु निज मन में कहैगो कि यह घर जाय सोय रह्यो औ मो-
सों आय मिथ्या भाषतु है। यातें तुम मोहिं जिन अटकाओ
। हौं आपने स्वामी पास होय आऊं। वह मेरी बाट जोवतु
होय गो। तुम्हें यह बचन दिये जातु हौं कि मैं स्वामी कौं क-
हि उलटे पांयन बगदि आवतु हौं। या बात के कहे तें उनि।
बचन बंध करि मोहिं बिदा कियो। तब मैं तिहारे पास आ-
यो। स्वामी यामें मेरो कहा दोष है। इतनी बात सुनि सिंह
बोल्यो अरे मेर बन में और सिंह कहां तें आयो। तू मोहि
वाहि अबहीं दिखाव। मैं वाकों बिन मारे आज भोजनन

करिहौं। ऐसें बातें करि वे दोऊ ह्यां ते चले आवो आगे ससा पाछे पाछे सिंह। जब चलतु चलतु बनमें कितनी एक दूर पहुंचे तब शशा एक कुआंके ढिग जाय ठाढ़ो भयो। तहां सिंह बोल्यो अरे वह तोहिं रोकनि वारो कहां है। ससाने उत्तर दियो कि स्वामी वह तिहारे भयतें या कूप मांहिं पैठ्यो है। इतनी सुनि सिंहने क्रोध करि कुआंके पनघटापर जाय जो जल मांहिं देख्यो त्यों वाहि वाको ही प्रतिबिम्ब दृष्टि आयो। परछाईं देखत प्रमाण वह जल में कूद्यो औ डूबि मर्यो। तब ससाने आपने स्थान पर आय सब बनबासियन कों सुनायो कि हौं सिंह कों मारि आयौं। मैंने तिहारो जन्म जन्मको दुख दूरि कियो। यह सुनि सब बनबासियन वाहि आशीर्बाद दियो॥

इतनी कथा कथ काग ने कागली तें कह्यो कि हे प्रिये तू देखि जो काम बुद्धि तें भयो सो बलतें कबहूं न हो तो। पुनि कागली बोली स्वामी जा में भलो होय सो उपाय करो। तब बायस ह्यां तें उड़ि आवो जाय देखे तो एक राजपुत्र काहू सरोवर के तीर पै बस्त्र शस्त्र आभूषण धरिबे वा में स्नान करतु है। ताकी मोतिन की माल यह लै उड़्यो अरु आपने खोंदा पै जाय वह माल सांपके कंठमें डारि अलग होय बैठ्यो। याके पाछे लागे वा राजा के सेवकहू देखतु चले आये हे। तिननि जब काग की चोंच में हार न देख्यो तब बिन में ते एक रूख पर चढ़्यो। ताने देख्यो कि खोडर में कारो नाग वह माला पहरे बैठ्यो है। यह देखि राजा के वा किंकर ने निज मन मांहि बिचार्यो कि माला तो देखी पर अब कछु बिन उपाय हाथ न ऐहै। यामें कछु यत्न कीजे। इतनो

कहि वाने सर्प कौं तीरनितें मारि माला राजपुत्र कौं ल्यायद ई। तातें हौं कहतु हौं भाई उपाय किये कहा न होय। बद्धरि करटक कही भाई तुम जो जानो सो करो। आगे दमनक ने हां तें उठि पिंगल सिंह के पास जाय कह्यो कि महाराज य द्यपि तिहारे पास हमारो कछु काम नाहीं पर समय असम य आपके निकट हमकौं आवनौं उचित है कह्यो है कि ज ब राजा कुमार्ग में चले तब सेवक कौं धर्म है जु राजा कौं चिताय देइ। श्री न जनावै तौ सेवक कौं धर्म जाय। आगे रा जा मानौं कै जिन मानौं पर वाकौं कहनौं योग्य है। महा राज राजा भोग करिवे कौं है श्री सेवक सेवा करनि कौं। पुनि कह्यो है जो राजाको राज बिगरै तौ मंत्री को दोष ठहरै। रा जा कौं कोऊ कछु न कहै। यातें प्रधान कौं चाहिये आपने स्वामी के काज कष्ट पाय धन तन देइ पर राज्य न जानि देइ। अरु जो प्रधान राज काज बिगरत देखि राजा सों न कहै सो कैसो सेवक। श्री जो राजा समय असमय किंकर की बात न सुनै सो कैसो ठाकुर। पिंगल बोल्यो तुम कहा कह्यो चाहतु हौ सो कहो। दमनक कहनि लाग्यो प्रथ्वीनाथ यह संजीवक तिहारो निन्दा करतु हो अरु कहतु हो कि अब यह राजा प्र ताप हीन भयो। प्रजा की रक्षा करी चाहिये। या बातमें म हाराज मोहिं ऐसो समझ परयो कि अब वह आप राज कि यो चाहतु है। यह बात सुनि राजा चुप ह्वै रह्यो। पुनि दम नक बोल्यो धर्मावतार तुम ऐसो प्रचण्ड मंत्री कियो कि जो राज काज कौ मनो तुम तें न पूंछि एकाएकी आपही राज्य करनि लाग्यो। सो भलो नाहीं। जैसें चानक मंत्री ने। राजा नन्दक कौं मार्यो कह्यो वैसें न होय। राजा पूंछी यहकैसी

कथा है। तहां दमनक कहतु है॥

काहू देश में नन्दक नाम राजा। वाकौ चानक नाम मंत्री। सु राजा वा मंत्री कौं आपने राजकाज कौं भार दै आप निश्चिन्त होय आनन्द करनि लाग्यौ अरु मंत्री राज। एक दिन वह राजा प्रधान कौं लारलै अहेर कौं गयौ। बन में जाय एक मृग देख्यौ। वाके पाछै विननि घोड़ा दपटे। तद और लोगहू झपटे पर इनके अश्वन की समान काहू कौ अश्व न पहुंच्यौ। पुनि सब लोग अटपटाय पाछै रहे औ वे दोऊ आगे गये। जब हिरण चपरि उनके हाथ तें बन में पैठ्यौ तब राजा हू घाम प्यास कौ मार्यौ घोड़ा तें उतरि एक रूख तरे बैठ्यौ। निदान वह महीपति आपनौ हय प्रधान कौं थंभाय तृषा कौं मार्यौ ह्वांतें उठि जल खोजतौ चल्यौ। कितेक दूर जाय देखै तौ एक बापी निर्मल जल भरी वाहि दृष्टि पर्‌ी। वह जोवनु प्रमाण प्रसन्न है वामें नीर पीवन उतर्‌यौ। जल पी फिरनि लाग्यौ। तौ वानें एक पाथर में यह लिख्यौ बांच्यौ कि राजा औ मंत्री तेज अरु बल में समान होंय तौ दै में ते एक कौं लक्ष्मी त्यागै। यह बांचि वह पाहन पै काद लपेटि मंत्री के ढिग आयौ। पुनि मंत्री हू जल पीवन वा बावरी में गयौ औ उनि देख्यौ अरु कह्यौ कि यह तौ कोऊ अबही पाहन पै गार लथेर गयौ है। बहुरि उनि पाथर धोय लिख्यौ पढ़ि निज मन में कह्यौ कि राजा ने मोसों दुराव कियौ। ऐसें समझि पानी पी मंत्री राजा के पास आयौ। राजा सोयौ। तब मंत्री ने हन्यौ। यातें महाराज हौं तुम सों कहतु हौं कि जो बलवान प्रधान होय सो आपही कौं राजा करि मानै। अरु जो राजा एक ही मंत्री कौं अधिकार

सौंपै तौ वह गर्व करै औ गर्व तें अज्ञान होय अज्ञान भये वाहि धर्म अधर्म को विचार न रहै। कह्यो है विष मिल्यो अन्न दियो दान अरु दुष्ट मंत्री इनको निकट कबहूं न राखियै। महाराज जो सेवक को धर्म हो सो मैं तुम सों कहि सुनायो। आगे आपनी इच्छा मांहि आवे सो करो। संसार में ऐसे लोग थोरे हैं जिनको राज्य औ धन की लाल सा नाहिं। तातें मैं तुम सों अब पुष्ट कहि देतु हौं कि वह तिहारो राज्य लियो चाहतु है। आगे तुम जानो। सिंह बोल्यो संजीवक मेरो बड़ो मित्र है। वह मेरो बुरो कबहूं न चीतोगो क्यों कि जो प्रिय है सो अप्रिय न होय। कह्यो है अग्नि घर जरावै तौ हू अग्नि बिन न सरै। बहुरि दमनक कही कि महाराज काऊ कितेक करो पर दुर्जन औ गँवार आपनो जातीय स्वभाव न छाँड़ै। ज्यों कूकरा की पूँछ तेलमसल में किये तऊ टेढ़ी की टेढ़ी रहै त्यों नीच को सन्मान करियै। तौ हू भलो न मानै। अरु नीम कों मधु दै सींचियै पर वाको फल मीठो न होय। कह्यो है प्रीतम सो जो आपदा निवारै। कर्म वह जातें अपयश न होय। स्त्री अरु सेवक सो जो आज्ञाकारी रहै। बुद्धिवान वह जो गर्व न करै। ज्ञानी सो जो तृष्णा न राखै। पुरुष वह जो जितेन्द्री होय। अरु महाराज मंत्री वह जो हितकारी होय। संजीवक तिहारो सुख देवा नाहिं। यह दुख को मूल है। याको शीघ्रही नाश करो। कह्यो है जो राजा धनान्ध कामान्ध होय आपनो भलो बुरो न जानै सो वृच्छा मातो रहै। अरु जब अहंकार तें दुख पावै तब मंत्री कों दोष लगावै। या बातके सुनवेतें सिंह ने जीमें विचार्यो कि विना समझे बूझे काहू कों दण्ड

देनौं उचित नाहीं। पुनि दमनक कही एथ्वी नाथ संजीवक आजही तिहारे मारिवे के उद्यम सें लाग्यौ है। तुम वाहि बुलावौ अरु भेद दरावौ। कह्यौ है मंत्र औ बीज गुप्त राखिये। जो गुप्त न राखिये तौ वाकौ फल न होय। अरु दुष्ट कौ यह स्वभाव है कि पहिले मीठी मीठी बातें कहि मन भ्रम हाथ कर लेइ। पाछे दुष्टता करि वाकौ सर्वसु खोय देइ जैसें शकुनिने दुर्योधन कौं कपट सिखाय महाभारत कर वायौ। पिंगल कही यह हमारौ कहा करि है। बहुरि दमनक बोल्यौ कि महाराज तुम यह जिन जानौ कि हम बलवान हैं। कह्यौ है समय पाय छोटौ हू बड़ौ काज करै जैसें एक टिटोर ने समुद्र कौं महा व्याकुल कियौ। राजा पूँछी यह कैसी कथा है। तब दमनक कहवे लाग्यौ॥

समुद्र के तीर एक टिटोर औ टिटीहरी रहैं। जब टिटीहरी गर्भ सों भई तब वाने आपने स्वामी सों कह्यौ कि रे स्वामी मोहिं अण्डा राखिवे कौं ठौर बनाव। उनि कही यह नौ नीकी ठौर है। पुनि टिटीहरी ने कह्यौ ह्यां नौ समुद्र की तुरङ्ग-तरङ्ग आवति है। वह हमें दुख दैहैं। टिटोर कही जौ यह हम कौं दुख दैहै नौ हम हू याकौ उपाय करिहौं। बहुरि टिटोहरी हंसिकै बोली कहां तुम औ कहां समुद्र। यासों प्रथमही बिचार करि काज करौ। नौ पाछे दुख न होय। पुनि टिटोर कह्यौ तुम निश्चिन्ताई सों अण्डा धरौ। फेर हम समझ लैहैं। यह बात सुनि वाने तहां अण्डा दये अरु समुद्र हू वाकी सामर्थ्य देखिवे के लिये लहरि सों अण्डा बहाय लै गयौ। तब टिटीहरी बोली रे स्वामी अण्डा नौ सागर बहाय लै गयौ। अब कहा करैगौ सो कर। टिटोर कही हे

प्रिये तू कछु चिन्ता जिन करै। हौं अबही लै आवतु हौं। यूत-नौं कहि वह सब पक्षियन कौं साथलै गरुड़ के पास गयौ। अरु गरुड़ने श्री नारायण सों जाय कह्यौ। श्री नारायणजू ने समुद्र कौंदण्ड दै आज्ञा करी। विन अंडा पाछे दये। तब वह सब पक्षी समेत अंडा लै आपने घर आयौ। नातें महाराज हौं कहतु हौं कि विन काम परे काहू की सामर्थ्यता जानी न जाय। बहुरि राजा कही हमकैसें जानें कि वह हमतें लरिवें कौं आवतु है। दमनक बोल्यौ महाराज वाकौं तौ सींग कौ बल है। जब सींग सामहने करै तब जानियौ। अरु जो तुम तें हो सकै सो करियौ॥

इतनी बात कहि ह्वांते उठि दमनक संजीवक बद्धे के निकट गयौ श्री मुख सुखाय वाके सन्मुख ठाढौ भयौ। तद् उनि यातें कुशल पूँछी। इन उत्तर दियौ मित्र सेवक कौं काहे की कुशल कैसें कि वाकौ तौ मन रात्रि दिन चिन्ताहीमें रहतु है। अरु बिशेष राजा कौ सेवक तौ सदा सर्वदा भयमान रहतु है। कह्यौ है द्रव्य पाय काने गर्व न कियौ। संसार में आय काने आपदा न भुक्ती। काकौ मन स्त्री के वशान भयौ। काल के हाथ को न पर्यौ राजा काकौ मित्र भयौ। वेश्या काकी स्त्री भई। वैरी के फन्द को न पर्यौ। जब दमनक ने ऐसी ऐसी उदासी लिये बातें कहीं तब संजीवक बोल्यौ कि मित्र तुमपर ऐसी कहा गाढ़ परी जो ऐसे उदास बचन कहत हौ। तुम मोसों तौ कहौं। दमनक कही हिन्दू मैं बड़ौ अभागौ हौं। जैसें कोऊ समुद्र मांहि बूड़त साँप कौं पायन धरि सकै न छांड़ि सकै तैसे हौंहू। एकबात है। नाहिन कहि सकौं न कहे बिन रहि सकौं। क्यौं कि कहौं तौ राजा।

सिवाय औ न कहौं तौ मेरो धर्म जाय। तातें दुख समुद्र में पर्यो हौं। संजीवक बोल्यो मित्र जो तिहारे मन में है सो कहो। इन कही भाई हौं कहतु हौं। यह बात अप्रगट राखियो अरु जो तिहारी बुद्धि में आवे सो कीजो। क्योंकि तुम ह्यां हमारी बांहतें आये। यातें अपयश सों डरि आपनो परलोक संवारवे कों तुम्हें सावधान किये देतु हौं। तुम चौकस रहियो। राजा की आज तुम पर कुदृष्टि है। उनि मोसों कह्यो कि आज संजीवक को मारि सकल परिवार कों भक्ष करिहौं। यह बात सुनि संजीवक ने अति दुख पायो। तब दमनक बोल्यो कि प्रीतम तुम दुख जिन करो। अब जो बुद्धि में आवे सो करो। बहुरि संजीवक कही यह काहू ने साँच कह्यो है जो कृपण के धन होय मेरु ऊमर में वर्षे सुन्दर स्त्री नीच सों रति करे राजा कुपात्र को बढ़ावे। इतनी कहि उनि निज मन में विचार्यो कि यह आप सों कहतु है कै राजा ने ऐसो विचार्यो है। यों शोचि पुनि मनही मन कहनि लाग्यो कि उज्वल के संग मलीन मलीनता करि शोभा न पावे जों काजर तें नेत्र शोभा पावे पर काजर शोभा न पावे। तातें याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आप तें कहे। उनहीं कही होयगी। मैं तो सावधानी सों सेवा करतु हौं। राजा ने ऐसो मेरो कहा अपराध देख्यो जो मन मैला कियो। पुनि बूझ्यो कि याहू में आश्चर्य नाहिं क्योंकि जैसें कोऊ देवता की अति सेवा करे अरु वह काहि थोरही दोष में भ्रष्ट करि डारे तैसें राजा हू नेक दोष में मारे। अब याको कछु उपाय नाहिं। ऐसें संजीवकने आपने मन माहिं समझि बूझि दमनक तें कही भाई मैंने राजा को ऐसो कहा काम बिगार्यो है जो उनि ऐसी

विचारी। अब हौं वाकी सेवा न करौं गो क्योंकि राज सेवा करनो महा कठिन है। जो भलो काम करे बुरो माने। ताकी सेवा करनी योग्य नाहीं। अरु राजा की प्रीति और लौं नाहीं रहति। कह्यो है असाध को उपकार करनो औ मूरख कौं उपदेश देनो वृथा है। पुनि जो चन्दन में सर्प पानी में सिवार आपतें आप आवति है त्यों सुख में दुख हू आय घटतु है। पुनि दमनक बोल्यो मित्र दुष्ट जन बहुत दूर तें आवतु देखि जो आदर करि बैठाय हित सों प्रिय बचन कहे सो न जानिये कि वह पाछे कहा दुष्टता करै। कहतु हैं समुद्र तरिबे कौं जहाज़ अंधकार कौं दीपक गरमी कौं बीजना माते गज कौं अंकुश ऐसे। विधाता ने सब के उपाय बनाये हैं। पर दुष्ट जन के मन को कछु यत्न न करि सक्यो। बहुरि संजीवक कही भाई हौं धान पानी को खानि हारो होय। याके वश क्यों रहौं। कह्यो है राजा के चित में मित्र भेद परयो मिटतु नाहीं। ज्यों स्फटिक को पात्र टूटि फेरि न जुरै त्यों नरपति को मनहू उचटि फेरि न मिलै। कहतु हैं राजा को क्रोध वज्र तुल्य है। पर एक समय वज्र सों बचे पै भूपाल के क्रोध सों कबहू न बचै। ताते अब दीन होय मारखानो नीको नाहीं। वरण संग्राम करि मरनो भलो क्योंकि शूरा तन में दोय बात। जीते तो सुख भोगवे औ मरे तो मुक्ति पावे। यासों या समय युद्ध करनो ही उचित है। फेरि दमनक बोल्यो अहो मित्र तुम तें हौं कहे देतु हौं कि जब वह कान पूछ उठाय मुख पसारै ता बेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवे सो कीजो। वामें काहू भांति कसर जिन कीजो। कह्यो है बलवन्त होय आपनो बल न प्रकाशै तो निरादर पावै। जैसे तेजहीन अग्नि कौं सब कोऊ उठावै

तैसे निबल मनुष्य कौं सब सतावैं। इतनौं कहि दमनक बो-
ल्यौ भाई अबही यह बात मनमें राखवौ काम परे बूझी जाय
गी। ऐसें कहि दमनक संजीवक सों बिदाहोय करटक के हि-
ग गयौ। तब उनि पूँछ्यौ हित तू कहा करि आयौ। दून कही
मैं दोउनि माहिं बैर कराय आयौ। पुनि करटक कही या में
सन्देहनाहीं। कह्यौ है दुष्टजन कहा न करि सकै क्षणमात्र कौन
पण्डित कहावै। पुनि कैसौ हू बुद्धिवान होय पर अपराध की
संगति तें बिगरै ही बिगरै क्योंकि दुष्ट के संग तें जो न होय
सो थोरो जैसें अग्नि जहां रहै तहांहीं जरावै। ऐसें दोऊ बतरा-
ये। पुनि दमनक पिंगलक के निकट गयौ। कर जोर सन्मुख ठा-
ढ़ौ भयौ अरु बोल्यौ महाराज सावधान होय बैठौ पशु युद्ध
करबे कौं आवतु है। ज्यौं हीं सिंह संभल बैठ्यौ त्यौंही बिना
र क्रोध भर्यौ वा वनमें पैठ्यौ। पुनि जिम वाहि देखि सिंह।
उठि धायौ तिम याने हू पहुंचैके सींग चलायौ। अरु दोऊ प-
शु यथा शक्ति लरे। निदान सिंह के हाथतें बहु मार्यौ पर्यौ।
तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि हाय मैं यह कहा कियौ जो रा-
ज औ धन कौ लोभ करि बापरे तृण अन्न खानि वाने बिजार
कौं मारि महा पाप शिर लियौ। या संसारमें धनके भागी अ-
धिक हैं पर पाप बँटावनि हारो कोऊ नाहिं। कह्यौ है सिंह रा-
जा सों जो गजराज कौं पछारै। पुनि दमनक बोल्यौ महाराज
यह कहां की रीति है जु तुम शत्रु कौं मारि पछतातु हौ। राज
धर्म में कह्यौ है कि पिता भ्राता पुत्र मित्र जो राज लैन कौं इ-
च्छा करै ताहि नरपति बिनमारै न रहै। जो बड़ो धर्मी होय
तौहू दया न करै। पुनि ज्यौं संन्यासी कौं क्षमा भूषण है
त्यौंही राजा कौं दूषण। बहुरि नीति शास्त्र में कह्यौहै दयावंत

राजा सर्व भक्षी ब्राह्मण कामातुर स्त्री सेवक शत्रु दुष्ट मित्र असावधान अधिकारी औ गुण नाशक आदि जितनेहैं तिन्हें तत्काल त्यागिये। पुनि ऐसें हू कह्यो है कि जैसी वेश्या तैसो राजा। कहूं लोभी कहूं दातार कहूं सांचो कहूं झूंठो कहूं कठिन कहूं कोमल कहूं हिंसक कहूं दयालु अरु सदा अधिक धन जन चाहै। या भांति दमनक ने सिंह राजा को समझाय बुझाय वाको शोक मिटाय राजपाट पर बैठायो अरु पुनि आप मंत्री होय सब राज काज करनि लाग्यो। इतनी कथा कहि विष्णु शर्म्माने राज पुत्रनि कों अशीश दई कि महाराज कुमार तिहारे शत्रुनि कों मित्र भेद होय अरु मित्रनि को कल्याण॥

अथतृतीय कथा आरम्भ ॥ ॥

विष्णु शर्म्मा जब और कथा को आरम्भ करनि लाग्यो तब राज पुत्रनि कही अहो गुरु देव अब विग्रह सुनिवे की लालसा हम कों है। सो कृपा करि सुनाइये। विष्णु शर्म्मा बोल्यो महाराज कुमार तुम शांत स्वभाव होय सुनो। हौं बिग्रह की कथा कहतु हौं। एक हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान है। पर एक कागने विश्वास घात करि हंस कों हरायो। अरु मोर कों जितायो। राज कुमारनि कही यह कैसी कथा है। तब विष्णु शर्म्मा कहनि लाग्यो॥

कर्पूर द्वीप के माहिं पद्मकेल नाम एक सरोवर है। काहू समें तहां के सब पक्षियन मिलि एक हिरण्य गर्भ नाम हंस कों राजा कियो। सो ह्यां राज्य करनि लाग्यो। कह्यो है जहां राजा न होय तहां की प्रजा सुख सों न रहै। जैसें समुद्र में बिन केवट नाव न चलै तैसें संसार में हू राजा बिन धर्म न निभै।

राजा प्रजा की नित नित अधिकाई चाहै निज पुत्र की समान।
जानै। अरु जो राजा प्रजा कौं पालन करि न बढ़ावै सो जगत
में प्रतिष्ठा कू न पावै। आगे एक समय वह राजा हंसरत्न सिंहा-
सन पर सभा माहिं बैठ्यो हो। तहां कोन कू द्वीप तें एक दीरघ
सुरव नाम बगुला आयो औ दण्डवत् करि हाथ जोरि राजा
हंस के सन्मुरव ठाढ़ो भयो। तब राजा ने वाहि आदर करि बैठा-
य पूँछ्यो कि अहो दीरघ सुरव जा देश तें तुम पधारे तहां के
समाचार कहो। उनि कही महाराज याही बात के लये तो हौं
तिहारे ढिग आयो हौं कि जम्बू द्वीप में विन्ध्याचल नाम एक
बड़ो पर्बत है। तहां के सब पक्षियन कौ राजा मयूर है। सो बा
दाम बसतु है। तिन मोहिं बचननि में चतुर देखि पूँछ्यो कि
तू कहां ते आयो औ को है। तब मैं कही कर्पूर द्वीप तें तो मैं
आयो अरु हौंके महाराज हिरण्य गर्भ कौ सेवक हौं। ति-
हारो देश देखिवे कौं ह्यां आयो हौं। तब उनि पक्षियन क-
ही कि तिहारे हमारे देश औ राजानि में कौन भलो है। पुनि
मैं कही कि तुम कहा कहतु हो। अरे कर्पूर द्वीप तो स्वर्ग स-
मान अरु आज राजा हंस दूसरो इन्द्र है। या बुरे देश में तुम
क्यों परे हो। चलो हमारे देश में बसो। जब यह बात मैं कही
तब उनि परेवरु अन मोपै अति क्रोध कियो। कह्यो है कि जै-
से सर्प कौं पय प्याये अधिक विष बढ़े तैसें पण्डित कौ उ-
पदेश मूर्ख के मन में न आवे। वरन वह उलटो वाही कौं
सतावे जो वानर कौं उपदेश दे विचारे पक्षियन आपनो कि
यो आप पायो। राजा पूँछी यह कैसी कथा है। तब बक कह-
नि लाग्यो॥

नर्मदा नदी के तीर एक पर्वत। ताके तरे एक सेमल कौ।

रूरव। वा पै पक्षी आपने घौंसुआ बनाय सुख सों रह्यो करें। एक बेर बर्षाकाल में भादों की अंधियारी रात्रि समय दामिनी दमकि दमकि घटा घिर घिर आई अरु बड़ी २ बूंदनि घन गरज गरज जल मूसलधार बर्षन लाग्यो। ताही काल एक बानर वा पहाड़ तें भीजतु उतरि शीत को मार्यो थर २ कांपतु ताही रूरव तरे आय बैठ्यो। वाहि दुखित देखि दया करि पक्षियनि कह्यो अरे बनचर तू देखि। तो सही कि हमनि आपनी चौंच सों तृण आनि घर कियो है। तोहि तो भगवान ने हाथ पाँय दये हैं। तैंने क्यों न घर बनायो। जो तैं घर बनायो होतो तो यासमयमें सुख सों पाँय पसारि सोतो। यह सुनि वा मर्कट ने जान्यो कि ये पक्षी या समय निज घरमें सुख सों बैठे हैं। ताही तें सों पण्डित को मूरख जानि उपदेश देतु हैं। यह समझ वह हंसके बोल्यो अरे बर्षा बीते तुम मेरो कियो देखियो। इतनों कहि वह क्रोध करि मष्ट मारि बैठ्यो। इतक मांहिं भोर भयो अरु मेह उघरि गयो। जब श्री सूर्य देव ने प्रकाश कियो तब वह वा रूरव पर चढ़ि सब पक्षियन के अंडा भूमि में पटकि चौंसुआ खसोटके बोल्यो अरे मूढ़ पक्षियो जे पण्डित हैं ते कहा घर करवे कों असमर्थ हैं। तिनकों तो स्वभावही है कि घर नाहीं करतु। यह वाकी बात सुनि बापरे परवेरू मौन साध रहे। तातें हौं कहतु हौं कि मूरख कों उपदेश कबहू न दीजै। पुनि राजा बोल्यो आवो कैसी भई सो कहो। बगुला बहुरि कहनि लाग्यो महाराज पुनि उन पक्षियन सोसों रिसायके कह्यो अरे तेरे हंस कों राजा किन कियो। मैं कह्यो रे तेरे सयूर कों किन राज्य दियो। या बात के सुने तें वे मोहिं मारन कों उठे।

तद मैं हूं आपनो पराक्रम दिखवायो। कह्यो है मनुष्य कों औ-
रसमय शिक्षा बूझिये पर जब शत्रु लरवे कों आवे तब परा-
क्रम ही करनों उचित है। जैसे नारी कों लाज आभरण है तै-
में रति समय ढिठाई हू आभूषण है। राजा हंस कही जो आ-
पनो अवसर न देखि क्रोध करै सो अति दुख पावे। अरु ऐसें
ही जो आपनी सामर्थ्य न जानि चेष्टा करै सोऊ ज्यों आपनी
सामर्थ्य न जानि बाघ को चाम ओढ़ एक गदहा मार्यो गयो।
बक बोल्यो यह कैसी कथा है। तहां राजा हंस कहतु है॥
हस्तिनापुर में एक बिलास नाम धोबी रहे। ताके घर एक
गदहा। वापै बोझ लादतु लादतु जद वाकी पीठ पर चांदी प-
री तद वह धुबिया गदहा कों रात्रिके समय बाघ को चाम
उढ़ाय काहू यव के खेत में छोड़ि आयो। वा खेत को रख-
वारो नाहि देखत ही परायो। याही भांति यह नित नित वा-
को खेत खाय आवे। तद वा रखवारे ने गदहा मारवे कों
यत्न कियो औ वाही खेत की पगार के निकट भूरी कामरी
ओढ़ि धनुष चढ़ाय आपहू काहू झुराड़ तरे दबकि रह्यो।
है पहर रात के समय अंधेरे में गदहा आयो औ याकी भूरी
कमरिया कों देखि गदही जानि वह कामान्ध होय रेंकतु
धायो। पुनि रखवारे ने जान्यो कि यह तो गदहा है पर बाघ
को चाम ओढ़ि आयो है। ऐसें कहि क्रोध करि रखवारे ने
वाहि लोठियन लोठियन मारि गिरायो। वाको प्राण ग-
यो। तातें हौं कहतु हौं कि आपनो बल बिचारि काज कीजे॥
इतनी कथा कहि पुनि राजा हंस बोल्यो आगे जो भई
सो कहो। बगुला कहनि लाग्यो महाराज उन पक्षियन
मोसों कही अरे दुष्ट बगुला तू हमारे देश में आयहमारे

राजा की निन्दा करतु है। इतनों कहि उनने मोहिं चोंचनि सों मार्यो अरु कह्यो अरे जैसें कुश्रा को दादुर कुश्रांही को सराहै तैसें तू है अरु तेरो राजा। यह सुदेश छुड़ाय तू हम को वा कुदेश में जैबे कों कहतु है। रे मूरख कह्यो है चेष्टा करि बड़ो रूख सेइये। जो फल न मिले तो सीरी छांह बैठ वे कों तो हू मिले। अरु ओछे की संगत तें प्रभुता जाय जैसें कलाल के हाथ में दूध को बासन होय तो हू जो देखे सो कहेगा में मदिरा होगी। अरु बड़े के नाम तें हू बड़ाई पाइये जैसें चन्द्रमा के नाम तें शशा सुखी भये। यह सुनि मैं उनितें पूँछी यह कैसी कथा है। पुनि विन में तें एक पक्षी कहनि लाग्यो॥

एक समय वर्षाकाल बिन बरषे बन में पानी की अति खैंच भई। तब ह्यां के हाथियन आपने यूथ पति सों कही स्वामी ह्यां बिन पानी प्यास के मारे मरतु हैं। यह सुनि गजराज ने एक सरोवर पहाड में बतायो। वाके तीर शशा बहुत रहैं। जब गज वहां जल पीवन कों गये इनके पाँयन तरे बहुत से शशा चाँपे गये। तब एक शिलीमुख नाम शशा हो वाने बिचार्यो कि जो या भाँति ये हाथी दूत आये हैं तो एकहू सजाती हमारो यहां जीवतु न रहैगो। यह बात सुनि एक बिजय नाम अति बृद्ध शशा बोल्यो अहो तुम अब भय जिन करो। मैं या उपाध को यत्न करि हौं। इतनी कहि वह वहां तें उठि चल्यो। औ गैल में चलत चलत वाने मन माहिं कह्यो कि हाथियन के निकट कैसें जैहौं। वे तो छूवत मारें। इतनों सोचि वह एक पर्वत पै चढ़ि दिखाई दियो। अरु दून जद उननें राम राम करी तद विन में तें एक गज गर्व करि बोल्यो। अरे तू को है। इन कही रे हौं चन्द्रदूत हौं औ तिहारे पास आयो

हौं पुनि उननि कही आपने आवन को प्रयोजन कहौ। इन कही मोहिं चन्द्र महाराज ने यह कहि तुम पास पठायो है कि आज तुमनि आय हमारे या चन्द्रसागर में पानी पियो। सो तो भली करी। पर तिहारे पाँयन तरे हमारे प्राण चांपे गये। यातें हम तुमतें अति अप्रसन्न भये क्योंकि हमारी और तें प्राणाही या सरवर के रखवारे हैं। मैं इनकी रक्षा करतुहौं। याहीतें मेरो नाम लोग प्राणी कहत हैं। यह सुनि गजराज बोल्यो कि भाई तू यह सांच कहतुहै। पुनि प्राणाने कह्यो कि यह धर्म दूत कौं न होय जो मिथ्या भाषै। कह्यो है दूत कौं कोऊ मारिवे कौंहू ले जाय पर वह झूंठ न बोले। ऐसें सुनि गजराज भयमान होय बोल्यो कि आज हम दूत अनजाने आय कढ़े पर बहुरि न आयहैं। पुनि प्राणाने गजपति सों कह्यो कि तुम निज मनमें कछु जिन डरो। हौं तिहारो अपराध चन्द्रदेव सों कहि क्षमा करायहौं। ऐसे वाकों सम्बोधन करि रात्रि भये गजराजकों सरके नीर ले जाय चन्द्रमा को प्रतिबिम्ब दिखाय हाथ जुरवाय आप पुकारि के बोल्यो हे चन्द्र महाराज ये बापरे गज तिहारे सरोवर पै अनजाने आय कढ़े हे। इन को जो अपराध भयो है सो आप क्षमा कीजे। पुनि इनतें ऐसो कबहू न होयगो। इतनों कहिवाने हाथियन कों बिदा कियो। औ विननिहू जल मांहिं प्रतिबिम्ब देखि सत्य जान्यों कि चन्द्रमा सरोवर में आयो है। तातें हौं कहतु हौं कि बड़ेके नामही तें कार्य सिद्ध होय। यह सुनि महाराज पुनि मैं कही और हमारो राजा बड़ो प्रतापी है। यह सुनि वे पक्षी मोहिं पकरि राजा मयूर के निकट लै गये। मोसों दण्डवत् करवाय हाथ जुरवाय वाके।

सन्मुख गाढ़ो राखि बिन पक्षियन राजा सों कह्यो महाराज यह दुष्ट बगुला हमारेही नगर में रहि हमारी ही निन्दा करतु है। राजा कही अरे यह कौहै औ कहां तें आयो है। पक्षियन उत्तर दियो महाराज यह कहतुहै कि हौं कर्पूर द्वीपके हिरण्यगर्भ राजा को सेवक हौं औ वाही देश तें आयो हौं। यह सुनि वा राजा को मंत्री गीध बोल्यो कि तेरे राजा को मंत्री को है। मैं कही सर्वज्ञ नाम कछु आ सोई सब राज काज में प्रधान है। गीध बोल्यो कि कह्यो है जो सदेशी कुलवन्त युद्ध विद्या में निपुण धर्मात्मा आज्ञाकारी प्राचीन प्रसिद्ध पण्डित गुण ग्राहक द्रव्य उपायक उपकारी हितकारी होय ताकों राजा मंत्री करै। पुनि एक सुआ बोल्यो पृथ्वीनाथ या जम्बू द्वीप के ही मांहि कर्पूर द्वीपहै अरु हां आप कौई राज है। या बात कौं सुनि वह राजा बोल्यो कि तू सांच कहतुहै। सो हमारे ही देश में है। कह्यो है राजा बालक उन्मत्त धनवन्त औ स्त्री ये पांचौं अनपावनी बस्तु लैन कौं हू हठ करैं। पुनि मैं कही कि जो बातनही प्रभुताई पाइये तो हौं हू कहतु हौं कि हमारो राजा हिरण्यगर्भ ही सब जम्बू द्वीप को। राजा है। बहुरि कीर कही यह कैसें जानिये। पुनि मैं कह्यो युद्ध कियेही जानिहो। फेरि वह राजा बोल्यो कि तू आपने राजा कौं जाय कहहम आवतुहैं। तब मैं कही आपनो बसीठ पठावो। राजा ने कह्यो कौन कौं पठाइये। मैं कही कि ऐसें कह्योहै जो स्वामि भक्त गुणवान पवित्र चतुर ढीठ बिसन रहित क्षमायुक्त धीर गम्भीर सदेशी पराये मनकी जानन हारो जाको उत्तर न फुरै ऐसो होय सो दूतके योग्य है। ताही कौं भेजिये। राजा बोल्यो ऐसें तो हमारे हां वहन

है। पर कह्यो है ब्राह्मण कों पढाइये कौंकि बिप्र सत्यवक्ता औ अहंकार रहित होतु है। पुनि मैं कही कि महाराज प्राचीन लोगनि के मुख सुन्यो है कि निज स्वभाव कोऊ नाहीं तजतु जैसें कालकूट विष ने महादेव कों कंठ पायो पर ग्या मना न त्यागी। पुनि मैं कह्यो कि महाराज सुआ कों पढाइये। तब राजा मयूर ने सुग्गा तें कह्यो कि कीर तुम या बगुला के संग जाओ। अरु राजा हंसतें हमारो संदेशो कहि आओ। शुक बोल्यो महाराज की आज्ञा मूँड पै पर या दुष्ट बक की गैल हौं न जैहौं। कह्यो है दुष्ट जन के साथ रहे साधु जनहू दुख पावें जैसें रावण के समीप रहि बापरो समुद्र बांध्यो गयो पुनि ज्यों काग के संग रहि हंस औ बटेर मारी गई। राजा पूछी यह कैसी कथा है। तब शुक कहनि लाग्यो महाराज उज्जैन नगरी की गैल में एक बड़ो पीपल को रूख। ता पर एक काग अरु हंस रहैं। ग्रीष्म ऋतु की दुपहरी मांहि एक बटोही घाम को मार्यो वाकी छांह तरे आय शस्त्र खोल सीर कंपाय सोयो। जब घरी चार पाछे वाके मुख पर घाम आई तब हंस दया करि वाके मुख पर छांह करि बैठ्यो। अरु काग दुष्टता करि वाके मुँह पै बीट करि भाग्यो। त्योंही बटोही जाग्यो औ वाने हंस कों तीर तें मार्यो। आगे एक समय सब पक्षी मिलि गरुड़ की यात्रा कों चले। तामें एक बटेर हू काग के साथ चली। तहां गैल में एक अहीर दहेंड़ी लिये जातु हो। सो दहेंड़ी काग जुठाय भाग्यो अरु बपारी बटेर हां मारी गई। तातें हौं कहतु हौं महाराज दुष्ट की संग काहू भांति करनो उचित नाहीं। पुनि मैं कही भाई सुआ तुम

ऐसी बात क्यों कहतु हो। हमारे तो जैसे राजा तैसे तुम। महाराज इतनों सुनि वह प्रसन्न भयो। कह्यो हे मूरख को। अपराध करि स्तुति कीजे। तो वह प्रसन्न होय जैसें एक स्वाती स्तुति किये जार सहित स्त्री की स्वाद माथे ले नाच्यो। यह सुनि राजा हंस कही यह कैसी कथा है। पुनि बगुला कहनि लाग्यो॥

श्री नगर में मंद बुद्धि नाम एक स्वाती रहै। सो आपनी नारी कों व्यभिचारिणी जाने पर वाहि जार समेत कबहू न पावै। एक दिन वाने वाके जार कों पकरवे के लिये वासों कह्यो कि आज हों गांव जातु हों। सु तीन चार दिन में आयहों। इतनों कहि वह बाहर जाय फेरि घर में आय खटिया तरै छिप रह्यो। वाकी स्त्री ने नाहि गांव गयो जानि निज जार कों बुलायो अरु क्रीड़ा के समय कछु आहट पायजान्यो कि यह मेरी परीक्षा लैन कों खटिया तरे लुक्यो है। यों जानि वह मन में चिंतति भई। अरु जब जार कही रमति क्यों नाहीं तब वह बोली आज मेर घर को धनी घर नाहीं। यातें मेरे माथें आज गांव सूनों बन खण्ड सो लगतु है। पुनि जार कही जो तेरो वासों ऐसोही स्नेह होतो वह तोहि काहे छाँड़ि गयो। उनि कही अरे बावरे तू यह नाहीं जानतु। सुनि। कह्यो है कि स्वामी स्त्री को चाहे कै न चाहे पर नारी को यह धर्म है जु पति कों एक पलहू न बिसारे अरु भर्त्तार की पारगारी शिंगार जाने। सो धर्म कों पावे औ कुलवंती सती कहावे। धनी घर में रहे कै बाहर पापी होय कै पुण्यात्मा पर नारी वाहि न बिसारे क्योंकि स्त्री को अलङ्कार भर्त्तार है। पति हीन अति सुन्दरी हू नीकी न लागे।

श्री तू जार है। सो तौ पान फूल के समान एक घरी को पहु-
नौ दैव के संयोग आनि मिल्यो। कर्म की रेख मेटी न जाय।
विधाता सों काहू की कछु न बसाय। अरु वह मेरो स्वामी
हौं वाकी दासी। जौलौं वह तौलौं मेरो जीव है। वाके मरे हौं
सती होऊंगी। कह्यो है जो सती होय सो प्रथम तौ आपने कु-
कर्म तें छूटै। दूजे कैसो हू वाको भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय तो
हू जेते देह में रोम हैं तेते बर्ष वह निज स्वामी कों साथ ले
स्वर्ग भोग करै। श्री जैसें गारुड़ सांप कों मंत्र की शक्ति क-
रि पाताल तें बुलावै तैसें हीं सह गामिनी आपने पति कों
नर्क सों काढ़ि परम गति दिवावै। यह बात सुनि वह रानी
आपने जी मांहिं कहनि लाग्यो धन्य मेरे भाग जु ऐसी ना-
री पाई कि आप नरै श्री माहिं तरावै। वह ऐसें विचारि उ-
छाह को मार्यो उन दोउअन समेत खाट माथे लै नाच्यो।
ताते हौं कहतु हौं कि मूरख दोष देखि हू स्तुति किये प्रस-
न्न होय। पुनि राजा हँस कही आगे कैसी भई। तब बगुला
कहनि लाग्यो महाराज उनि दूत बिदा कियो है। सो मेरे
पाछे आवतु है। यह जानि जो बूझिये सो करौ। या बात
कों सुनि वा राजा को मंत्री चकवा बोल्यो कि धर्मावतार।
यह बगुला दुष्ट है। यह काहू को सिखायो आयो है। कह्यो
है बैद्य रोगी चाहे पण्डित गुणग्राहक ढूंढै राजा शूरसे-
वक खोजै अधिकारी ठाकुर को विग्रह मनावै। पुनि रा-
जा कही या बात को बिचार जो करनो उचित होय सो
करौ। मंत्री कही महाराज प्रथम एक जासूस पठाय उ-
नको कटक श्री बिचार जानिये क्योंकि राजा की आंख
जासूस है। जा राजा के जासूस रूपी नेत्र नाहिं सो आंधो

है अरु जाके आछे जासूस होंय सो नरपति घर बैठ्यो सब संसार की विभो देखै। कह्यो है तीर्थ आश्रम देवालय तो शास्त्र तें जानिये औ गूढ़ बात जासूस तें। ताते महाराज जो जासूस जल थल में जा सकै ताहि पठाइये। औ अब ही यह बात गुप्त राखिये। क्योंकि जो मंत्र फूटै तो आगलो सावधान होय। यातें हौं कहतु हौं कि नीको जासूस पठाइये युद्ध जीत होय। राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे। कि पोरिया बोल्यो महाराज एक सुआ जम्बूद्वीप तें आयो है। सु पोरि पै ठाढ़ो है। वाहि कहा आज्ञा होति है। यह सुनि राजा ने चकवा की ओर देख्यो। तद चकवा बोल्यो महाराज पहिले वाकों डेरा दिवाओ। पाछे बूझो जायगो। इतनी बात के सुनतही द्वारपाल वाहि डेरा देन गयो। बहुरि राजा कही अहो विग्रह तो उपज्यो। चकवा बोल्यो महाराज मंत्री को यह धर्म नाहीं जो स्वामी कों लरावे कै भगावे। कह्यो है विचार कै युक्ति सों बल करै तो थोरे पराक्रम हीतें कार्य सिद्ध होय। जैसें मनुष्य काठ की सांगतें भारी पाथर उठावे तैसें नरपति हू युक्ति किये जय पावै। पुनि कहतु हैं योतो सबही शूर हैं पर और को बल देखि न डरे मन स्थिर राखै ताही कों बलवान कहिये। बहुरि जो समय पाय काम करै तो बेगही सिद्ध होय ज्यों वर्षाकाल की खेती। अरु महत के गुण स्वभाव ये हैं कि समय बिन दूरतें डरावे। औसर पाय नेरे आय सूरातन करै आपदा में धीर्य्य राखै। सब बात की सिद्धि में उतावली न करै। कह्यो है। धीरो पानी पर्वत फोरै। महाराज चित्रवर्ण राजा बड़ो बली है। बलवान के सन्मुख युद्ध करनों योग्य नाहीं।

जो निबल सबल के सन्मुख होय लरै तो दीप पतंग की भांति होय। कै जैसें कोऊ चेंटी कौं पाथरन मारै तैसें मारयो जाय। पुनि कह्यो है सन्मुख युद्ध करिवे कौं काल न होय तो कछु आ केसे पाय सकेलि बैठिये। समय पाय नाग कैसो फन निकारिये क्योंकि समौं जानि छोटो हू उपाय करै तो बड़े कौं मारै। ज्यों बर्षा काल पाय नदी को प्रवाह ढाढे रूरव कौं गिरावे। त्योंसमय लहि सब काम हाथ आवें। यातें सन्मुख लरवे की बिचारनकरि गढ़ संवारिये। तौ लौं वाके दूत कौं बिरमाय राखिये। कह्यो है कोट ऊपर कौं एक योधा सहस्त्र सों लरै। पुनि जा राजा के देश माहिं गढ़ नाहिं ताको राज्यशत्रु बेगही लेय। कोट बिन राजा को राज्यास्थिर न रहै। तातें महाराज अब कोट बनाइये। कह्यो है नदीके तीर गढ़ रचिये तरै खाई। खनाइये चारों ओर निबिड़ बन राखिये औ पैठवे निकरवे कौं गैल। भांति भांति के अस्त्र शस्त्र यंत्र गोला भरिये। अरु अन्न रस धन जन को संचय सदा करिये। राजा बोल्यो गढ़ साजवे को काज कौन कौं देंय। मंत्री कही जो चतुरहोय ताकौं देउ। पुनि राजा कही या काज माहिं तो सारस निपुण है। प्रधान कही वाही कौं दीजिये। बहुरि राजा ने सारस कौं बुलाय करि कह्यो कि तुम नीकी ठौरि देखि गढ़ रचो। उन कही महाराज मैं या सरोवर कौं अनेक दिन तें तक राख्यो है कि याहि माहिं राखि गढ़ रचिये। तौ भलो क्योंकि याके तीर अन्न अधिक होतु है अरु अन्नही तें सब कछु होतु है। कह्यो है रत्न औ कांचन सब वस्तु सों उत्तम है पर मनुष्य कौं अन्न बिन न सरै। जैसें गौन बिन

सब फीको तैसें अन्न विन कछु न नीको। पुनि राजा ने सा-
रस सों कह्यो तुम बेग जाय गढ़ रचो। इतेक माहिं पौरि-
या आय बोल्यो कि धर्मावतार सिंहल द्वीप तें एक कारा मे-
घ वरण नाम आयो है। सु आपके दर्शन की अभिलाषा
किये द्वार पै ठाढ़ो है। माहिं कहा आज्ञा होति है। राजा।
कही काग दूरदर्शी होतु है। यातें वाहि राखनो उचित है
मंत्री बोल्यो महाराज तुम भली कही पर मेरे जान वाहि राख-
नो योग्य नाहीं क्योंकि यह थल को वासी औ हमारे शत्रु
को साथी है। यातें याको रहनो क्योंहू नीको नाहिं। कह्यो
है जो राजा आपनो पंथ छाँड़ि पराई चाल चले सो राजा
कूकर दमनक की भांति मरे। राजा पूछी यह कैसी कथा है।
तब मंत्री कहनि लाग्यो॥

एक समय काढ़ू स्यार को नगर के निकट कूकरनि आ-
नि घेर्‌यो। सो भयमान होय भाग्यो औ गाँव में जाय एक
लील के कुण्ड माहिं गिर्‌यो। जब नीलवीर ने वाहि मर्‌यो
जानि वासों काढ़ि गैल में डारि दियो तब वह शृगाल भ-
य को मार्‌यो नगर की गली माहिं मृतक ह्वै रह्यो। तहां
पनिहारियन वाहि पर्‌यो देखि आपस में पूछ्यो आली
यह कौन जन्तु है। काढ़ू ने कह्यो बीर यह स्यार है। पुनि
एक उनमें ते बोली अरी याको कान काटि बालक के कंठ
में बांधे तो डाकिनी न लागै। दूजी बोली बहनि याकी पूं-
छ काटि मोड़ा के गरे में डारै तो भूत पिशाच न लागै।
तीजी ने झट काटही लये। तब चौथी ने कह्यो याके दां-
त तोरि छोहरा की गुदी में राखै तो कछु रोग न होय। य-
ह बात सुनि वा स्यार ने आपने मन में कह्यो कि या गाँव के

लोग बड़े पापी हैं। कान पूछ काटि अब दांत तोरयो चाहतु हैं। यातें ह्यां तें भाजिये तो बचिये। यह बिचारि वह स्यार ह्यांतें पराय बनमें आय शोचन लाग्यो कि अब मेरो नील वरण भयो। जामें आपनी प्रभुता होय सो करौं। यह बिचारि वाने सब स्यारनि कौं आनि कह्यो कि आज या बन के देवतान्नों ने निज हाथनि औषधीन तें अभिषेक करि मोहिं या बन को राज दयो है। तुम मेरो वरण देखो। यह सुनि विन स्यारनि वाको वरण देखि ताकी बात मानि सबनि हाथ जोरि कह्यो कि अब जो कछु महाराज की आज्ञा होय सो करें। तब उनि कही तुम सब मेरे पास रहौ। पुनि वेऊ रहनि लागे। ऐसें जब उनि आपने सजातीन में आदर पायो तब और हू बन के जीव बाघ चीता आदि सब आज्ञाकारी भये। पुनि उनि स्यार खेद दये। तद वे स्यार सब जुरि चिन्ता करि कहनि लागे कि अब कहा करें। बहुरि विनमें तें एक बृद्धो जम्बुक बोल्यो अरे तुम जिनपछताओ। मैं याको भेद पायो है कि यह गांव में तो पूंछ। कान कटाय आयो अरु ह्यां आय दुन आपनो नाम राजा कूकर दमनक धरायो। ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवा करतु हैं। तातें मैं एक उपाय बिचार्यो है कि सांझसमय सब स्यार इकट्ठे होय याके सन्मुख पुकारो। तब यह हू जाति को स्वभाव न छाड़ि उनमें बैठि बोलि है। कह्यो है जो कूकर कौं राज होय तो हू वह दूटी पनही चबाय निज जात को स्वभाव न तजै। ऐसें बृद्ध स्यार की बात सुनि उननि वैसें ही करी। जब राजा कूकर दमनक नाहर चीतानि में बैठि बोल्यो तब उननि वाहि मारि खायो। तातें हौं

कहतु हौं कि महाराज आपनो पंथ कबहू न छाँड़िये औ घर को भेद बात को मरम काहू सों न कहिये। कह्योहै रंडर की आग तरु कौं जरावे। यातें महाराज विदेशी को भेद कबहू न बताइये न घरमें राखिये। पुनि राजा कही अहो बात तो ऐसेंही है पर दूर तें आयो है। नातें वाहि बुलाय के देखिये। जो राखिवे योग्य होय तो राखिये। नातो विदा करिये। चकवा कही महाराज अबतिहारो गढ़ माज्यो गयो। चित्र बरण राजा के दूत कौं बुलाय विदा कीजै। कह्यो है भूपाल और भूपाल के बसीठ तें एकलो न मिलै। तासों आपनी सभा के सब लोगन कौं बुलाय बैठारिये। तब सुआ कौं बुलावाइये अरु वाके साथ काग कौहू। यह सुनि राजा ने वैसें ही करि विन दोऊन कौं बुलाय आसन दै बैठायो। तब शीश झुकाय कीर बोल्यो अहो हिरण्यगर्भ राजाधिराज तुम कौं श्री महाराज राजा चित्र वरण ने कह्यो है जो आपनो प्राण राख्यो चाहो तो हमारी शरण आओ। नातो आपने रहनि कौं अनत ठौर करो। यह बात सुनि राजा हंस क्रोध करि बोल्यो है रे कोऊ जो या बसीठ कौं मारे। इतेक सुनि वह काग बोल्यो महाराज मोकौं आज्ञा होय तो या दुष्ट कौं मारौं। चकवा कही धर्मावतार दूत राजा को सुवहै। तातें याको कछु दोष नाहीं। जैसें ह्यां सुनी तैसें ह्यां आनि कही। यह मिथ्या न भाषे अरु बसीठ के कहे कछु आपनी हानि नाहिं औ वाकी प्रभुता नाहिं। तासों याकौं मारनो काहू भांति उचित नाहिं। कह्योहै जा सभामें बूढ़ो न होय सो सभा न शोभै। सो बूढ़ो नाहिं जो धर्म न जानै। वह धर्म नाहिं जहां सत्य न होय। वह सत्य

हू नाहिं जहां दया न उपजै। ऐसें समझाय मंत्री ने राजा को क्रोध निवारण कियो। पुनि तोता ह्यां तें उठि चल्यो। तदमंत्री ने वाहि मनाय बैठायो औ वस्त्र अलंकार दिवाय राजा तें बिदा करायो। जब वह आपने राजा के पास गयो तब राजा चित्रबरण ने बातें पूँछी सुक कही वह देश कैसो है। सुआ कही महाराज पहले युद्ध की सामा करो। पाछे हों कहतु हौं राजा बोल्यो हमारे लराई को सब सामान दुरुस्त है। तुम कहो। पुनि सुआ कहनि लाग्यो महाराज कर्पूरद्वीप सातवें स्वर्ग समान है अरु मोपे वरणयो नाहीं जातु। यह सुनि राजा ने आपने सब मंत्रियन कों बुलाय के कह्यो आ हो कीर कहतु है कि राजा हंस तें युद्ध करो। सो तुमतें पूँछतु हौं कि अब कहा करनो उचित है। अरु मेरो हू मनोरथ यह है कि युद्ध करों। कह्यो है असन्तोषी ब्राह्मण लाजवती वेश्या कुलवती निर्लज्ज औ राजा सन्तोषी होय तो ये सब थोरेई दिन माहिं नष्ट होंय। यह सुनि राजा को मंत्री दूरदर्शी नाम गीध बोल्यो महाराज आपने मंत्री मित्र कटक प्रजा आदि सब एकमत होंय अरु शत्रु के मित्र मंत्री औ प्रजा में विरुद्ध होय तो युद्ध करिये। यह नीति है। राजा कही मेरो दल में सब देख्यो। यह रवानि वारो है पर काहू काम को नाहिं। यातें तुम बेग जोयबी बुलाय मुहूर्त्त देखो। गीध कही हस्तीनाथ शीघ्रही यात्रा न बूझिये। कह्यो है शत्रु बिन बिचारे वाकी भूमि में जाइये तो नान्हों हू बड़े कों जीते। पुनि राजा कही जो पर भूमि लियो चाहे तो कौन भांति तें लेइ। यह तुम कहो। मंत्री बोल्यो महाराज उद्योग करे मन कामना पूर्ण होय। अरु बिन उद्योग कछू

न होय जैसें औषध खाये रोग जाय वाको नाम लियें न जाय। अब महाराज की आज्ञा प्रमाण पर भूमि लेवे की रीति कहतु हौं जो राजनीति में कही है। प्रथम तौ राजा आपने मंत्री योधा महाजन मुखियान कौं बुलाय सन्मान करि साथ लेय। अरु शस्त्र वस्त्र अलंकार धन गज घोड़ा निज लोगन कौं बांटे। जो जाके योग्य होय ताको तैसो सन्मान करै। पाछे कटक साथ लै चले अरु जहां पर्वत बन डर की ठांव होय तहां सेनापती कटक इकठ्ठो करि चले। भले भले शूर साथ राखै औ रनवास ठाकुर भंडार नान्हें लोग व्योपारी बीच माहिं। पुनि राजा औ मंत्री सब पै दृष्टि राखै औ बनबासी पर्वत निवासी लोग आगो धरलेय। बहुरि जहां बिषम भूमि होय कै बर्षा काल होय तौ राजा हाथी पर चढ़ि चले। कह्यो है गज की देह में आठ शस्त्र हैं। चार पाँव है दांत एक सूंड़ औ माथो। यातें राजा हाथी अधिक राखै तौ भलो क्योंकि गयंद चलतो कोट है। अरु जो घोड़ा नि पै चढ़ि लरै तिनतें देवता डरें। औ पयादेन कौ बल सदा राखै। पुनि पर भूमि में जाय राजा सदा सावधान रहे। काहू कौ विश्वास कबहू न करै। योगेश्वर की नींद सोवै। अरु राजा आपने साथ द्रव्य राखै क्योंकि धन प्राण तुल्य है। बिन धन प्रभुता नाहीं। लक्ष्मी पाय को न जूझै। मनुष्य द्रव्य के हेतु सेवा करतु है। कह्यो है नर धन तें बड़ो औ धनही तें छोटो। पुनि शत्रु को दश लूटि खसोटि कै उजारै क्योंकि तातें अति दुचितो होय। अरु वाको अन्न रस ईंधन न्यार जो पावै सो लूटि न्यावै। औ गढ़ गढ़ी सर कूप बापी फोरि नारखै। बन

उपबन बारी काटि डारै। ऐसे अनेक अनेक भांति की पीड़ा शत्रु कौं उपजावै औ आपने लोगनि तें सदा प्रसन्न होय बतरायौ करै जातें लोग जानैं कि हमारौ स्वामी हम सों संतुष्ट है। कह्यौ है ठाकुर के सन्मान औ हित बचन तें जैसो सेवक काज करै तैसो धन दिये अरु कटु बचन तें न करै। पुनि जब सेवक काज करि आवै तब वाहि प्रसाद देय अरु जौ प्रसाद न देय तौ वाकी जीविका दूनी करि देय। औ यहू न होय तौ ताकौ कमायौ पैसा चुकाय देय। अरु जो स्वामी सेवक कौ महीना देत आज काल करि टारै ताकौ किंकर उदास रहै औ समय पर कानी देय। तातें जो राजा शत्रु कौं जीत्यौ चाहै सो दासनि औ सेवकनि कौं प्रसन्न राखै तौ जहां जाय तहां विजय पावै। अरु या बात कौं सुनि अरि के सेवक भूखे टूटे हौंय तें आप तें आप आय मिलैं तौ लरनौ हू न परै। बहुरि रिपु के जीतवे कौ एक बड़ौ उपाय कह्यौ है कि वाके भाई भानजे भतीजान सों भेद उपाय करि तिनकौ आदर मान कीजै। अरु मंत्री प्रजा हू कौं अपनाय लीजै। औ जे लरैं तिनकौं नाश कीजै। अरु जे शरण गहैं तिनकौं भय मिटाय दीजै। अरि कौ देश उजारियै आपनौं बसाइयै। शास्त्र में कह्यौ है या प्रकार तें राजा चलै तौ युद्ध जीतै। पुनि राजा बोल्यौ मैं जान्यौं। जातें आपनी जीत औ शत्रु की हार होय ताकी यह रीति है। पर शास्त्र के पैंड़े तें मनकी उमंग कौ पंथ न्यारौ है। मन की उमंग में जौ शास्त्र बिचारै तौ न बनै जैसें अन्धकार औ तेज इकट्ठौ न रहै। इतनौं कहि राजा ने जोयसी बुलाय शुभ मुहूर्त ठहराय

भली लग्न में दिग्विजय यात्रा करी। तब राजा हंस के दूत ने आय अपने राजा सों कही कि महाराज राजा चित्रबरण ने मलया चल के हेठ आय डेरा कर्यो। तुम आपने गढ़ की रक्षा करो औ आपनो परायो चीन्हौं। वाको मंत्री अति२ चतुर है। मैं वाकी बात सों जान्यों कि उनि हमारो गढ़ लैन कों आपनो मित्र काग पठायो है। बहुरि राजा हंस को मंत्री चकवा बोल्यो महाराज या काग कों न राखिवये। राजा कही जो यह काग वाको पठायो हो तो तो वा सुवा कों मारनि न उठतो। अरु उनि तोता के गाये पाछे युद्ध को मतो कियो है। यह बातें प्रथम आयो हो। मंत्री बोल्यो महाराज तऊ नये आये तें डरिये। राजा कही अहो जो नयो आयो आपनो उपकार करै ताहि मित्र जानिये। अरु बंधु मित्र होय आपने काम न आवै ताहि शत्रु करि मानिये। जैसें बनकी औषधी तुरत की आई रोगी के रोग कों दूर करि सुख देय तैसें कोऊ कोऊ मनुष्य हू नयो आयो उपकार करि यश लेइ पुनि ज्यों शूद्रक राजा के बीरबर सेवक ने अल्प दिननि ही में सहायता करी। चकवा बोल्यो महाराज यह कैसी कथा है। पुनि राजा कहतु है॥

शूद्रक नाम एक राजा। वाकी क्रीड़ा को एक सरोवर। तामें कर्पूर केल नाम राजा हंस हो। वाकी बेटी को नाम। कर्पूर मंजरी। तापै आशक्त होय मैं ह्वां रह्यो। तहां बीरबर नाम एक राजपूत काहू देश तें उद्यम के लिये आय राजद्वार पै ठाढ़ो भयो। अरु उनि पौरियन तें कह्यो मोहिं राजा तें मिलाओ। हौं सेवा करनि के हेतु आयो हौं। द्वारपालन यह बात राजा सों जाय कही। तब राजा नें वाहि बुलाय

के पूछ्यो तुम दिन प्रति कहा लेउगे। उनि कही चार सौ तोला सुवरण। पुनि राजा बोल्यो और तिहारे साथ को है। उनि कही दै हाथ तीजो खड्ग। राजा कही इतेक हमतें न दियो जायगो। यह सुनि बीरबर जुहार करि चल्यो। तद मंत्रीने राजा सों कही महाराज चार दिन तो याहि सुवरण दै राखिये औ याको पराक्रम देखिये जु इतेक योग्य है कै नाहिं। मंत्री की बात मानि राजा ने वाहि सोनो दै राख्यो। वा दिन को कंचन लै वाने आपने घर जाय आधो तो ब्राह्मणानि कों संकल्प करि दियो अरु वाको आधो भूखे भिखारी भिक्षुकन कों बांटि दियो औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यो। याही भांति वह उन पुत्री स्त्री सहित ह्यां रहनि लाग्यो। जब सांझ होय तब खांडो फरी लै राज सेवा में जाय उपस्थित होय। एक दिन कृष्णचतुर्दशी की आधीरात कों घन घुमड़ि मेह मढ्यो। तामध्य काहू नारी के रोवन को शब्द सुनि राजा बोल्यो कोऊ है। बीरबर कही महाराज कहा आज्ञा होति है। राजा कही देख तो को रोवतु है। राजा की आज्ञा पाय बीरबर चल्यो। तब राजा ने आपने मन में बिचार्यो कि मोहिं ऐसो न बूझिये जु या अंधेरी रैन मांहिं रजपूत कों एकलो पठाऊं। नातें याके पाछे पाछे जाय देखौं तो सही यह कहा करतु है। या प्रकार राजा मन में बिचारि ढाल तरवार गहि वाके पाछे है लियो। आगे जाय बीरबर देखै तो एक नारी नवयोबना अति रूपवती सब आभरण पहरे ठाढी धाय मारि मारि रोवति है। इन वासों पूछी तू कौहै। उनि कही हौं राजलक्ष्मी हौं। पुनि इन कह्यो तू रोवति काहे। उनि कही मैं बहुत दिन या राजा

की भुजानि की छांह में बिश्राम कियो अरु अब या राजा कौं छांड़ि जाउंगी। या दुखतें रोवति हौं। इन कही तू काहू भांति हू रहे। उनि कही जो तू निज पूतकौं बल देदू तो हौं रहौं अरु यह राजा अनेक दिन अखण्ड राज करै। पुनि बीरबर कही माता जौलौं मैं आपने घर हू आऊं तौलौं तुम ह्यांरहौ। ऐसें कहि घर जाय बीरबर पुत्र औ स्त्री कौं जगाय लक्ष्मी के कहे वचन कहिवे लाग्यो। तौ पुत्री हू जागी। यह बात सुनि सब चुप रहे। तद पुत्र बोल्यो धन्य भाग मेरो जु यह देह देवी के निमित्त लावौ अरु स्वामी को काज सरै। यामें पिता जू बिलम्ब जिन करौ क्योंकि कबहू तौ या काया कौ बिनाश होय। तातें काहू के काज लागै सो तौ भलो ही है। कह्यो है जाकौ विद्या धन प्राण पराक्रम पराये काम आवै ताही कौ संसार में जन्म लेनौं सुफल है। पुनि बीरबर की पत्नी बोली जो तुम यह कार्य न करौगे तौ राजाके ऋण तें कैसें उतरन होउगे। ऐसें बतराय सब देवी के मन्दिर पै गये अरु पूजा करि हाथ जोरि इतनौं कह्यो माता हमारो राजा चिरंजीव होय राज्य करै। यह कहि पुत्र की मूड काटि बीरबरने देवी कौं दयो अरु आपने मन मांहि कह्यो कि राजाके ऋण तें तौ उतरन भयो। पर अब निपूतौ होय जगत में जीवनौं उचित नाहिं। यह समझि आपनौं हू शीश काटि भवानी के आगू धर्यो। उन दोउअन कौं मर्यो देखि वाकी स्त्री ने विचार्यो कि संसार में रांड निपूती है जीनौं योग्य नाहीं। ऐसें ठानि वाहू ने निज माथो चढ़ायो। विन तीननि कौं मर्यो देखि वाकी पुत्री ने विचार्यो कि निगोड़ी नाठी है जग में जीवनौं भलो नाहिं

यह समझि विनहू मस्तक कादि देवी के सन्मुख धरयो। यह चरित्र देखि नरपति ने जो मांहिं बिचारयो कि मोसे जीव अनेक पृथ्वी में उपजतु खपतु हैं पर ऐसें शूर नर होने कठिन हैं। तातें अब याको कुटुंम्ब नाश करि मोहिं राज्य करनो योग्य नाहिं। यह सोचि समझि ज्यों भूपाल निज मूंड उतारनि लग्यो त्योंहीं देवी ने आयकर गह्यो अरु कह्यो राजा तू साहस जिन करै। अब तेरे राजमें भंग नाहिं। राजा कही माता मोहिं राज्य तें कछु प्रयोजन नाहिं। पुनि देवी बोली हौं तेरे धर्म औ सेवक के कर्म पर संतुष्ट भई। अब तू जो बर मांगै सो देऊं। राजा कही मा जो तुम तुष्ट भई हौ तौ इन चारन कौं जीव दान देउ। जब उन पाताल तें अमृत लाय विन चारन कौं जिवायो तब राजा चुप चाप ह्यां तें चलि निज मन्दिर में आयो। औ बीर बरहू उन तीनों कौं घर राखि आप राजा के समीप पहुंच्यो। नरपति ने वाहि पूंछ्यो तुम गये हे तहांकहा देखि आये। पुनि कर जोरि उन कही महाराज एक नारी रोवति ही। जौ लौं हौं वहां गयो तौ लौं वह चुप रही। मैं बाहि न पायो। पुनि मैं बगदि आपके ढिग आयो। ऐसें सुनि राजा ने मन में कह्यो कि यह कोऊ बडो सिद्ध पुरुष है। याकी स्तुति हौं कहां लौं करौं। कह्यो है दयावन्त दानी तपस्वी सत्यवादी औ शूर जो आपनी बडाई न करै तौ वाहि सिद्ध पुरुष जानिये। आगे राजा ने प्रात भये पण्डितन की सभामें बैठि रात्रि को सब वृत्तान्त कह्यो अरु संतुष्ट होय बीर बर कौं करनाटक देश को राज दयो। तातें हौं कहतु हौं सब नये हू बुरे न होंय। संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होतु हैं उत्तम मध्यम अधम। बहुरि चकवा बोल्यो

महाराज यह काज करिवे योग्य नाहिं। आगे महाराजकी इच्छा। कह्योहै पराई रीस पण्डित चतुर कबहू न करै। अरु जो करै तो वैसें होय जैसें एक क्षत्री ने आपनी तपस्यातें धन पायो औ वाकी रीसकरि एक नाऊने निज प्राण गँवायो। नरपति कही यह कैसी कथाहै। तब चक्रवाक कहनि लाग्यो॥

अयोध्यापुरी मांहिं एक चूड़ाकरण नाम क्षत्री रहै। तिन धनके निमित्त अति कष्ट करि श्री महादेव जू की सेवा करी। तब सदाशिव जूने वाकों स्वप्नमें दर्शन दै कह्यो अरे आज पाछली रात्रि समय क्षौर होय स्नान करि लोटिया कर धरि आपनी पौरि मांहिं कपाट के पाछे लुकि रहियो। जब कोऊ भिक्षा कौं आवे तब वाहि लकुटियन मारि घर मांहिं लहियो। वह सुवर्ण भर्यो कलश ह्वै है। तातें तू जब लग जीवैगो तब लग सुखी रहैगो। यह वर पाय बिन दूजे दिन नाऊ कौं बुलाय वैसेंही कियो जैसे भोलानाथ ने कह्यो हो। जद वह भिखारी सुवर्ण घट भयो तद इन लै घरमें धर्यो। यह चरित्र देखि वा नौआ ने बिचार्यो कि धन पाइवे की जो यही रीति है तो हौं हूं क्यों न करौं। ऐसें समझि निज घर आय उनहू एक संन्यासी मार्यो। तद वाहि राजाके सेवकनि पकरि लै जाय संन्यासी के पलटे मार्यो। तातें हौं कहतु हौं कि औरकी रीस कबहू न करिये। पुनि राजा कही पाछली बात जिन करौ। आवो जो करनो होय सो करौ। मलया पर्बत के तरे राजा चित्रबरण को डेरा है। अब कहा करिये सो कहो। मंत्री बोल्यो महाराज हमहू सुन्यो है कि वह लरिवे कौं आयो है। पर तुम कछु चिन्ता जिनकरौ। हम वाहि जीति है क्यौंकि वाने आपने मंत्री को कह्यो

नाहीं मान्यौं। कह्यौ है कि जो शत्रु लोभी कूढ़ आलसी का-
यर झूंठो औ अधीर होय अरु धन गर्व न जाने काहू
कौ कह्यौ न माने ताहि बिन कष्ट मारिये। महाराज जौ
लौं वह हमारो गढ़ नगर कटक औ घाट बाट न देखै तौ
लौं वाके मारिवे कौं सेना पठाइये। ऐसें और हू ठौर कह्यौ
है कि दूर कौ आयो थक्यौ भूखो प्यासो भयमान असाव-
धान रात्रि कौ जाग्यो औ पर्वत तरै बस्यो होय ऐसें शत्रु कौं
दौरि मारिये। यातें उचित है कि अबहीं हमारो सेनापति
वाके दलकौं जाय मारै। तौ भलो। यह बात मंत्रीतें सुनत
प्रमाण राजा ने सेनापति कौं टेरि आज्ञा दई कि तुम याही
समय राजा चित्रबरण की सेना कौं जाय मारो। उन वैसें
ही करी। जब चित्रबरण के योधा अनेक मारे गये तब वह
चिन्ता करनि लाग्यो। पुनि वाकौं मंत्री गीध बोल्यौ अब
काहे चिन्ता करतु हौ। बहुरि राजा कही बाबा जू अबका-
हू भांति हमारी सेना की रक्षा करौ। ऐसें भयमान राजा
कौं देखि गीध बोल्यौ महाराज कह्यौ है कि गर्व्व तें लक्ष्मी
टरै बुद्धापौ पौरुष हरै चतुर संदेह मिटावै अभ्यास करै
विद्या आवै न्याय प्रताप बढ़ावै बिनय तें अर्थ पावै अ-
रु शूरवं राजा होय तौ पंडितन की सभा तें शोभा। जैसें
नदी के तीर रूख हरयो रहै तैसें आछी मंत्रा ते राजा कौ
मनहू डहडह्यौ रहै इतनौं कहि पुनि गीध बोल्यौ महाराज
तुमने आपनो कटक देखि गर्व्व करि साहस कियौ अरु मे-
रौ कह्यौ न मान्यौं ता अनीति कौ यह फल है। कह्यौ है
जौ राजा मंत्र चूकै तौ ताकी नीति कौ दोष है जैसें कुपथ्य
तें रोग होय रोग तें मरै तैसें धनतें गर्व्व होय औ गर्व्वतें

दुख। पुनि निर्बुद्धी कौं शास्त्र यौं ज्यों आंधरे के हाथ आरसी। यह समुझि हमहूं मौन गहि रहे। इतेक बातें सुनि राजा ने हाथ जोरि गीध सों कही बाबा जू मोतें अपराध भयौ। क्षमा कीजै अरु अब काहू भांति जो कटक बच्यौ है ताहि साथ लै निज घर की बाट लीजै। पुनि गीध कही महाराज ऐसी कह्यौ है कि राजा गुरू ब्राह्मण बालक बृद्ध स्त्री रोगी इनपै ज्यों क्रोध उपजै त्यों ही जाय। तातें तुम डरौ जिन धीर्य धरौ। कह्यौ है मंत्री ताही कौं कहिये जो बिगर्यो कार्य सुधारै औ बैद्य सो जो सन्निपात निवारै। यातें तुम कछु चिन्ता मति करौ। हौं तिहारे प्रताप तें वाको गढ़ तोरि कटक समेत आनन्द सों घर लै चलिहौं। राजा बोल्यो थोरो कटक रह्यो। अब गढ़ कैसें बिजय करिहौ गीध कही महाराज जो संग्राम जीत्यौ चाहौ तौ बिलम्ब जिनकरौ। आजही चलि वाको कोटि छेकिये। यह बात सुनतही बगुला ने राजा हंस तें जाय कही कि महाराज राजा चित्रबरण थोरेही कटक नें तिहारो गढ़ छेक्यो चाहतु है। यह बात मैं वाके मंत्री तें सुनि आयो हौं। यह बात सुनि राज हंसने आपने मंत्री सों कह्यौ कि अब कहा करियै। चकवा बोल्यो महाराज आपनो कटक देखो। यामें कौन भलो है औ कौन बुरो। भलो होय ताहि धन बस्त्र घोड़ा हाथी शस्त्र दीजै औ बुरो होय ताहि गढ़ कटक तें बाहर कीजै। कह्यौ है जु राजा एक समय तौ दाम कौं लाख करि माने अरु एक काल लाख कौं दाम करि जाने। तौ वा राजा कौं लक्ष्मी न छांड़ै। पुनि यज्ञदान बिवाह आपत्य औ शत्रु मारिवे में जो धन उठावतु है सोई स्वार्थक है

अरु मूर्ख घोर दैन तें डरि सबही गंवावै । राजा बोल्यो तुमकौं ऐसी कहां की आपदा है। मंत्री कही महाराज कह्यो है जु लक्ष्मी रिसाय तौ आयो धन जाय । तातें दान कीजिये जो धर्म के आधीन है लक्ष्मी रहै बहुरि राजनीति में हूक ह्यो है कि विग्रह के समय राजा आपने योधान को समाधान करै जो जैसो ताकौ तैसो। क्योंकि जे उत्तम प्रबीन कुलीन शीलवन्त शूर बीर धीर नीके पोषे होंय ते पांच पांच सौं तें लरैं। अरु अकुलीन अप्रवीण अधम अधीर कायर निर्लज्ज होंय ते पंच सौ पांचतें परांय। महाराजपुनि जा राजा कौं मंत्री असावधान होय ताको हू राज न रहै । अरु जो राजा आपनो परायो न जानै मंत्री की प्रतीत न मानै सेवक को सुख दुख न गनै सो राजा कबहू निश्चिन्त न रहै । औ जो राजा आपनो परायो बूझै सेवक को दुख सुख विचारै ताके लिये सेवक धन तन प्राण दै सहायता करै । राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे कि तही समय मेघबरण काग आय जुहार करि बोल्यो महाराज शत्रु युद्ध करिवे कौं गढ के बार आयो है। मोहिं आज्ञा होय तौ बाहर निकरि संग्राम करौं अरु आपके लोनने उनरन होउं । मंत्री कही बनैनें निकस्यो सिंह अरु स्यार समान हैं। यातें गढतें न निकसिये । कह्यो है जो राजा आप ठाढ़ो रहि युद्ध देखै तौ कायर सिंह समान होय लरै । तातें अबही कोट के बार जाय युद्ध करनो योग्य नाहिं। इधर तौ राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे । अरु उन चित्रबरण राजा ने दूजे दिन गीध सों कह्यौ कि बाबा जू जो प्रतिज्ञा करी ही ताको निर्वाह करो। गीध बोल्यो सुनो

महाराज। आगरे के घोरे योधा होंय के राजा मूरख औ मंत्री कायर होय तौ गढ़ उतावलौ टूटै। सो तौ वहां एकौ गति नाहिं। तातें ह्यां के लोगनि तें भेद उपाय करिये के घेरो नाखि अन्न रस रोकि सब मिल साहस करैं तौ गढ़ पावैं। कह्यौ है जैसौ बल होय तैसौ यत्न करिये। इतनौं कहि पुनि मंत्री ने राजा के कान में कह्यौ कि महाराज कछु चिन्ता जिन करौ। हमारौ काग वाके गढ़ में है। सो काम करिहै। आगे प्रात होत राजा चित्रबरण सब सैन ले गढ़ की पौरि। जाय लाग्यौ। उत समय पाय काग लाय लगाय गढ़ लियो लियो करि पुकार्यौ। तब तहां के जीवनकेपरा छूटे। वे सब दौरि पानी में पैठे औ राजा हंस सुकुमारता तें पराय न सक्यौ। तद एक सर्ब मित्र नाम कूकड़ौ राजा चित्रबरण को सेनापति। तिन आय हंस कौं छेक्यौ। तब सारस वा के सम्मुख होनि लाग्यौ। तहां हंस बोल्यौ तुम मेरे निमित्त जिन जूझौ। हौं ह्यां रहौं। तुम मेरे पुत्र चूड़ामणि कौं ले जाय राज्य करौ। सारस कही महाराज आप ऐसी बात जिन कहौ। जौलौं चन्द्र सूर्य तौलौं तुम अरवण्ड राज्य करौ। हौं आपके प्रताप सों गढ़ में सब शत्रुन मारि बिछावतु हौं। कह्यौ है क्षिमावन्त दाता गुण गाहक सुखदायक धर्मात्मा ठाकुर कहां पाइये। राजा कही भक्तिवन्त निष्कपट चतुर सेवक हू कहां पाइये। पुनि सारस बोल्यौ महाराज संग्राम तजे तौ भाजिये जो मृत्यु न होय। अरु जो निदान मृत्यु ही है तौ आपनौं यश मलीन करि काहे मरिये। बहुरि जो या अनित्य शरीर सों जगत में नित्य यश पाइये तौ यातें कहा उत्तम है। या में तुम तौ हमारे

स्वामी ही हो। राजा कही यह तुम भली बिचारी। हमहू ऐसो ही करिहैं। सारस बोल्यो महाराज आप ऐसो बिचार जिन करो क्योंकि स्वामी के देह छाँड़े प्रजा अनाथ होय। अरु सेवक को तो यह धर्मही है कि जौलों बने तौलों स्वामी के रारिवे को यत्न करै। स्वामी के उदय तें याको उदय अरु अस्त तें अस्त। इतनी बात कहत कहत जब कुक्कुटने राजा हंस कों आय गह्यो तब सारस ने वासों छुड़ाय पीठ पर चढ़ाय नीर में जाय छोड़्यो अरु आप आय अनेकन कों मारि गढ़ मांहिं जूझ मर्यो। पुनि आय राजा चित्रबरणा ने सब गढ़ की माया लई अरु बन्दीजन के पाँयन की बेरी हथकरी काट दई। इतनी कथा सुनि राजपुत्रनि विष्णु शर्म्मा तें कह्यो अहो गुरुदेव राजा हंस के सेवकनि में वहबड़ो कोऊ हो जिन राजा कों बचाय आप प्राण दियो। विष्णु शर्म्मा बोल्यो महाराज कुमार सुनो। उन बड़ो कार्य कियो। देखो एक तो संसार में यश पायो दूजे स्वर्ग। कह्यो है जो सेवक स्वामी के लिये रण में प्राण देइ सो परमगति पावै औ जो साथ छोड़ि भाजै वह नरक में पड़ै औ जगत्मांहिं कलंकी होय॥

अथ चतुर्थ कथा आरम्भ

विष्णु शर्म्मा बोल्यो महाराज कुमार तुमनि विग्रह तो सुन्यो। अब हौं सन्धि कथा कहतु हौं कि जब दोऊ राजा संग्राम करि सेना कटाय रहे तब गीध अरु चकवा ने जा भांति उनकों मिलायो ताई रीति सब कथा कहतु हौं। राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव हम नीके चित दै सुनतु हैं। आप आज्ञा

कीजे। पुनि विष्णुशर्म्मा कहनि लाग्यो कि जद राजा हंसने चक्रवा सों पूँछ्यो कि तुम यह जानतु हो गढ़में आग हमारे लोगनिलगाई के शत्रुके। तद चकवा बोल्यो महाराज तिहारो मेघबर्णो कागहीसतु नाहीं। तातें जान्योंजातु है कि होय न होय यह वाही कोकाम है। इतनी बात सुनि राजा चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि मैं जान्यो यह काम मेरे ही अभागतें विगर्यो। या मांहिं कछु तिहारो दोष नाहिं। मेरे कपालही को दोष है। मंत्री कही महाराज औरहू ठौर ऐसें कह्यो है कि जब देव कोपतु है तब मनुष्य पर आपदा आवतु है। अरु कर्म के बश होय अनीति करै हितून को कह्यो न माने जैसें एक कछुआ ने आपने हितून को कह्यो न मानि काठतें गिरि दुख उठायो। तैसें कष्ट पावै। राजा बोल्यो यह कैसी कथा है। तहां चकवा कहनि लग्यो॥

मगध देश में फल्गु नाम सरोवर। तहां विकट संकट नाम दुइ राजहंस रहें। तिनको मित्र एक कम्बुग्रीव कछुआ वहां रहे। एक दिन तहां धीवर आये अरु आपस में बैठि बतराये कि आज रात्रि को यहां बसि माछरी कछुआ पकरिहैं। यह सुनि कमठ ने हंसनि सों कही मित्र तुम धीवर की बात सुनी। अब हौं यहां न रहिहौं और सरोवर में जैहौं। हंसनि कही अबही रहो। आगे उपाय करिहैं। कछुआ बोल्यो। बन्धु तुम जो कही कि आगे उपाय करिहैं सो आगे की बात नाहिं। कह्यो है आपदा बिन आये उपाय करै तो सुखपावै और न करै तो दुख उठावै जैसें यज्ञविघ्न माछरी ने दुख पायो। हंसनि कही यह कैसी कथा है। बहुरि कमठकह्यु है।

पहिले या सरोवर पर एक बार धीवर आयो हो। तब यहां तीन माछरी रहति हीं। एक अनागत विधाता दूजी उत्पन्न

मति तीजी यद्रविष्य। जब धीमर आयो अब अनागत बिधाता ने कह्यो अब यहां रहनों उचित नाहीं। इतनों कहि वह और सरोवर में गई। दूसरी बोली जद कार्य आय परिहै तद उपाय करिहौं। कह्यो है जो उपजी बात को उपाय करै सो चतुर जैसें एक बनियां की बेटी ने पति के देखत जार कौं चुम्बा दै मिस कियो। तीसरी ने पूंछ्यो यह कैसी कथा है। पुनि उत्पन्न मति कहति है॥

विक्रमपुर में समुद्रदत्त नाम बनियां। ताकी स्त्री को नाम। रत्न मंजरी। सो आपने सेवक सों रहै। कह्यो है स्त्री के कौन बड़ी कौन छोटी। आपने काम सों काम। आगे एक दिन वह आपने सेवक को मुख चूमति ही। वाही समय वाके स्वामी ने आय देख्यो। तब उनि दौरि पति सों कही साहजू या सेवक बजमारे कौं घर मांहिं जिन राखो। यह दै मार्यो चोर है। अबहीं याने ह्यो चुराय खायो। मैं याको मुंह सूंघ्यो। सुधि की गंध आवति है। यह बात सुनि सेवक रूठ्यो अरु कहनिलाग्यो कि जा घर की धनियानी मुख सूंघे तहां रहनों भलो नाहीं। पुनि समुद्रदत्त ने उन दोऊन कौं मनायो। ताने हौं कहति हौं कि आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै सोई चतुर। बहुरि यद्रविष्य बोली जो भावै सो होय। चिंता को करै। आगे धीमर ने आय मार वा सरोवर में नाख्यो अरु वे दोऊ बचीं। तब उत्पन्न मति मृतक होय रही। वाको मर्यो जानि धीमर ने नारतें बाहर काढ़ि राख्यो। पुनि अवसर पाय वह पानी मांहिं जाय गिरी। यद्रविष्य कौं भावी को भरोसो हो। सो धीमर के बश परी। तातें हौं कहतु हौं जो अनागत बिधाता की भांति उत्पात तें पहिले भाजै

सो भली। बहुरि हंसनि कही तुम कैसें चलिहो। उनि कही मित्र तुम दोऊ एक लकड़ी दोऊ घांतें पकरो औ हौं बीच तें गहौं। तबलै उड़ौं। पुनि हंस बोले बन्धु तुम नीकी कही। पर हमारे जानि जैसें बगुला के उपाय तें बालक पन लह्यो तैसें तुम हू करतु हौ। कमठ कही यह कैसी कथा है। तहां हंस कहनि लाग्यो॥

उत्तर दिशा की शैल में कावेरी नदी के तीर गन्धमादन पर्वत पै एक रूख। ता पर एक बगुला रहै। वाके नीचे बांबी। तामें कारो नाग। जब बहबक अंडा देइ तब सो सांप रूख पर चढ़ि खाय लेइ। एक दिन वह चिन्ता करि रह्यो हो कि काहू वृद्ध बगुला ने वासों पूछ्यो कि रे तू ऐसो दुचित्तो। क्यों है। इनवा सों सब भेद कह्यो। तद उनि कह्यो कि अरे तू एक उपाय कर कि बहुत सी माछरी ल्याव औ न्यौरे के बिलतें लै सांप की बांबी लौं पांति सी लगाव। जब वह माछरी खात खात आय है तब वा सर्पहू कौं खाय है। यह बात सुनि उनि वैसें ही करी और न्यौरने आय नाग कौं खायो। पर साथ ही पेड़ पै चढ़ि वाके अंडा हू खाये। तातें हौं कहतु हौं कि ऐसो यत्न जिन करो जामें आपनों विनाश होय। जो तुम लकड़ी पकरि लटकि चलो औ कोऊ कछु कहै वा बेर तुम रिसाय के ऊतर देउ। औ मुंहतें लकरी छूटै औ नीचे गिरो तो हम कहा करैं सो कहो। उनि कही हौं कहा बावरी हौं जु बोलिहौं। इननि कही भाई तुम जानौं। इतनौं कहि वे दोऊ हंस वाकौं वाही भांति लै उड़े। कछुआ कौ लौटिया में लटकत देखि अहेरी बोले। देखो रे या कछुआ कौं। ह्वै पक्षी लिये जातु हैं। एक बोल्यो जो यह गिर

परे तो भूजि खाऊं। दूजे ने कही मैं घर ले जाऊं। यह सुनि क छुआ सों रह्यो न गयो। तब क्रोध करि बोल्यो तुम पथरा खा उ। इतनी कहत तलकरी तें छूटि तरे निरयो। अहेरियन मारि भ क्षण कियो। तातें हौं कहतु हौं जो मंत्री की कह्यो न माने सो दुख पावे। आगे एक बगुला आयो। तब चकवा बोल्यो। महा राज यह वही बगुला है जाहि पहिले पठायो हो। यह कहतु है गढ़ में आग मेघबरण काग ने लगाई अरु वह गीध को प ठायो आयो हो। बहुरि राजा हंस कही शत्रु के उपकार औ प्रीति की प्रतीति कबहूं न करिये। जो करिये तो जैसें रूख को सोवन हारो गिरि के पछताय तैसें पछताइये। बहुरि ब गुला बोल्यो महाराज ह्यां तें जब मेघ बरण गयो तब चित्र बरण ने कह्यो अब मेघबरण कों कर्पूर द्वीप को राज दीजे अरु याको दुख दूर कीजे। कह्यो है जो सेवक कष्ट पाय स्वामी को कार्य करि आवे ताको तबही भलो कीजे। मंत्री कही म हाराज यह उचित नाहिं। याहि और कछु देउ अरु मेरी बात सुनि लेउ। कह्यो है जाको जितनों मान ताको तितनों दान। नीच को उपकार करनों औ बालू मांहिं घी ढारनों समान है। पुनि जो नीच कों बढ़ाइये तो मुनेश्वर की भांति हो। राजा कही यह कैसी कथा है। तब गीध कहनि लाग्यो।

गौतम ऋषि के तपोबन मांहिं महातपी नाम एक मुनि रहै। ताके आश्रम में काग के मुख तें छूटि मूसा को शिशु गिर्यो। वाहि देखि दया करि मुनिने आपने निकट राखि कन खवाय बड़ो कियो। तब एक बिलाव वाके खेवे को घात में आयो करै। यह देखि मुनिने मंत्र करि वाको बिलाव कि यो। फेरि एक श्वान आवन लाग्यो। बहुरि वाने वाहि श्वान

और वेचि और। या भांति जब धन बढ़े गो तब नारियर सुपारी ले बड़ो व्योपार करि धन बढ़ाय चार विवाह करिहौं कह्यो है ब्राह्मण चार विवाह करै औ चारों वर्ण व्याहे क्षत्री तीन वैश्य दै शूद्र एक व्याहे। पुनि जब वे स्त्री आपस में लरिहैं तब हौं जाको औगुण देखि हौं ताके मारिवे कौं ऐसें लौठिया घालूंगो यह कहि जो लौठिया घाली त्यों मनुआ के करवा समेत उनि कुम्हार के भांड़े फोरे। बहुरि कहनि लाग्यो कि हाय मेरो। कियो करायो धर गयो। आगो भांडे फूटे देखि कुम्हारनू ने वाके सब कपरा खोंस वाहि तिरस्कार करि घरतें निकार दियो। तातें हौं कहतु हौं कि आगे को मनोर्थ करै सो दुख पावै। पुनि हँसकरि राजा ने गीध सों पूंछी कि अब कहा करनौं उचित है सो कहो। गीध बोल्यो महाराज जो मंत्र राजा चूकै तो मंत्री मूरख कहावै जैसें सांकरी गली में हाथी न चले तब महावत कूढ कहावै। तातें हौं कहतु हौं कि गढ़ तो तिहारे पुण्य प्रताप तें औ हमारे उपाय सों हाथ आयो अरु तिहारी जीत हू जगत ने जानी। पर अब आपने देश कौं चलो तो भलो। नातो बर्षा काल मूँड पर आयो। औ वैरी बराबर को है। यातें जो अब अटकिहो तो पराई भूमि में तें निकसनो कठिन ह्वै है। तातें मेरे जानि राजा हिरण्यगर्भ तें सुख सों मिलि हल भल करि निज देश कौं पधारिये। कह्यो है जो मंत्री धर्म गर्व सों राजा कौं सुहाती अन सुहानी कहै औ राजा हू विचारे अनविचारे प्रमाण करै। ऐसो मंत्री राजा को हित कारी जानिये। पुनि कह्यो है जो आपने समान होय तासों प्रीति करिये क्योंकि लरनों खांड़े की धार।

है। यह होऊ और तकतुहै। पुनि युद्ध में जूझिवे के समय मित्र धन जन कीर्त्त औ अपनपौ शत्रु के सन्मुख मृत्युके हाथ देनौं होतुहै। पुनि राजा कही जो यह बात ऐसेंही ही तौ तुम प्रथम ही कौं न कही जो घर ही बैठ रहते। मंत्री बोल्यो महाराज हमारो बचन तुम आदि अन्त लौंन मान्यौं। मेरो बिचार विग्रह करनि कौनहौकौंकि राजा हिरण्यगर्भ के गुण प्रीति करिवे योग्य हैं। वासों बैर न बूझिये। कह्यौ है जो सत्यवन्त बलवन्त धर्मात्मा प्रतिष्ठित औ अनेक संग्राम जीत्यो होय के जाके भाई बन्धु अधिक होंय तातें युद्ध न करिये कौंकि सत्यवन्त आपनौं बोल निबाहै। बलवन्त पै कछु बल न चले। धर्मात्मा जीत्यो न जाय आपत्य में वाको धर्म होय सहाय प्रतिष्ठित के। नामही तें लोग परांय। जिन अनेक युद्ध जीते होंय ताकी धाकही सों सब डर जांय और जाके भाई बंधु अधिक होंय वह कबहू न हारै। यातें हौं कहत हौं कि महाराज अब संधि करिये कौंकि ये सब गुण राजा हिरण्यगर्भ में हैं। इतनी बात सुनि राजा हंसके दूतने आपने राजातें जौंकी त्यौं जाय कही। तब चकवा ने दूत सों कह्यौ कि। भाई यह तौ तुम अति मंगल की बात सुनाई। पुनि जाय समाचार ल्यावो। दूत गयो। तब राजा हंसने चकवा सों पूंछी कि तुम काहे को मंगल मान्यौं सो कहो। मंत्री कही कि महाराज कह्यौ है इतनेन तें संधि न करिये बालक वृद्ध रोगी लोभी कायर वैरागी देव गुरु निन्दक। कौंकि बालक को तेज अति अल्प। तातें दण्ड औ प्रसाद न कर सके। यातें वाको साथ कोऊ न देवू। बूढ़ो

जो रोगी उछाह करि हीन रहै। ताहि सहजही मारिये। लो-
भी अल्प सन्धि करै। यह जानि वाके संग कोऊ न लरै। का-
यर आपही रणतें भाजै। बैरागी सब तें उदास रहै। काहू
बात में मन न देइ। सो आपही हारै। देव गुरनिन्दक अ-
धर्मतें आपही आप नष्ट होय। तातें ऐसें रिपुकों युद्ध क-
रि मारिये। पुनि कह्यो है जो राजा विद्यावान होय शस्त्र
विद्या जानै देश काल पहिचानै आपनों परायो मानै
गुण औगुण मन आनै प्रभुता सहित रहै जहां जैसो
उचित तहां तैसो कहै नीति करि सांच भाषै न्यायमें काहू
की कान न करै मंत्र सदा गुप्त राखै सो राजा समुद्रान्त
एथ्वी को राज्य भोगै। इतनों कहि बहुरि चकवा बोल्यो
महाराज जो हू गीध मन्त्री ने संधि करिवे की कही परा-
जा चित्रवरण अति अभिमानी है। वह वाको कह्यो न
मानिहै। कह्यो है कि भय बिन प्रीति न होय अरु संधि
किये दोऊ ओर कुशल है। या सों मेरे मन में एक बात
आई है। सो होय तो भलो कि सिंहल द्वीप को राजा स-
रस मेरो परम मित्र है। महाबल वाको नाम। ताकों हों।
लिखों कि वह चित्रवरण के जम्बुद्वीप पै जाय मड़राय
अरु ह्यां तुम आपनी सेना कों जोरि याकी सेना कों पीड़
उपजाओ। दिन रात उठत बैठत निकरत पैठत दबा ओ।
तो जै पाओ। कह्यो है दोऊ तातें होय मिलें लोह की भां-
ति। राजा कही नीको जानों सो करो। तब चकवा ने वि-
चित्र नाम बगुला कों पत्र दे सिंहल द्वीप पठायो अरु वह
पाती पावत प्रमाण सारस चढ़ि धायो। आगे गीध मं-
त्री ने राजा चित्रवरण सों कह्यो कि महाराज यह मेघवरण

काग गढ़में अनेक दिन रह्यो। याहि पूछो जु राजा हंस प्रीति करिवे योग्य है के नाहिं। तब राजाने काग सों कह्यो कि अहो राजा हंस औ वाको मंत्री कैसो है। काग बोल्यो महाराज राजा हंस साक्षात् युधिष्ठिर है अरु मंत्री चक्र। वाक की समान चतुर दूजो एथ्वी में नाहिं। राजा कही तें वाहि कैसें डहकायो अरु ह्यां कौन प्रकार रहन पायो। काग बोल्या कि महाराज राजा जाकी प्रतीत करै नाहि। डह कावनों कितेक बात है जैसें जाकी गोद में सोवे औ सोई मारै तौ सोवनवारे को कहा बसाय। चकवाने मोहिं देखतही पहिचान्यों हो। पर राजा हंस ने मंत्री को कह्यो न मान्यों। ताही तें मैं वाहि ठग्यो अरु ह्यां रहनि पायो। महाराज राजा हंस बड़ो साहसी औ सत्यवादी है। कह्यो है जो आप सत्यवक्ता होय सो और कों हू आप सो जानै जैसें एक सत्यवक्ता ब्राह्मण ने और की बात सत्य मानि बोकरा खोयो। राजा कही यह कैसी कथा है तब काग कहनि लाग्यो॥

गौतमारण्य में एक ब्राह्मण यज्ञके निमित्त बोकरा मोल लिये आवतु हो। वाहि तीनि ठग नि देखि बोकरा लैन को आपस में मंत्रो कियो अरु वे तीनों साधु कों भेष बनाय तीन ठौर जाय बैठे। जब वह ब्राह्मण पहिले साधु के निकट गयो तब उन कह्यो अरे ब्राह्मण यह कूकर माथे धरि काहे लिये जातु है। इन कही कूकर नाहिं। यज्ञ को बोकरा है। यह सुनि वह साधु चुप रह्यो। आगे दूसरे के पास गयो। पुनि उनहू कह्यो रे देवता मूढ़ पै खान कौं चढ़ायो। इननों सुनि इन हुरो मानि वाहि शीश

तें उतारि देख्यो अरु संदेह करतु चल्यो कि जो देखतु हौं सो याहि कूकर कहतु है पर मेरी दृष्टि में तौ बाक जनातु है। ऐसें शोचतु शोचतु वह तीनि के निकट जाय पहुंच्यो। तब उनहू कह्यो अहो विप्र कूकर शिर तें डारि दे। तें यह कहा अनर्थ कियो जो स्वान मूड़ पे धरि लियो। यह बात वाके मुखते सुनत प्रमाण वाहि कूकर जानि विप्र ने माथे तें पटक आपनौं पंथ लियो। अरु बिनानि धोके तें आपनौं मनोरथ पूरो कियो। तातें हौं कहतु हौं कि दुष्ट के बचन तें साधहू की बुद्धि चले। बहुरि जैसें चित्रवरणा ऊंट को सिंहन मारि खवायो। राजा पूंछी यह कैसी कथा है। पुनि बायस कहतु है॥

एक बन में भदोत्कट नाम सिंह। ताके तीन सेवक। एक तेंदुआ दूजो काग तीसरो स्यार। बिन तीननि एक दिन वा बनमें ऊंट देख्यो। तब उननि वाहि पूंछ्यो तू कहां तें आयो। उन कही मैं साथ भूलि आयो हौं। यह सुनि बिन तीननि वाहि ले जाय सिंह सों मिलायो। सिंह हू ने वाहि अभय दान दै राख्यो अरु चित्र करणा नाम दियो। पुनि वह सबन के साथ हिलमिल रहनि लाग्यो। कितेक दिन पाछे बर्षा काल में कई एक दिन की झरी लागी औ वा समय अहार न जुर्यो। तब बिन तीननि आपस माहिं कह्यो कि भाई अब कोऊ ऐसो उपाय करिये जु सिंह ऊंटहिं मारे तो अहार खैबे कों मिले। तेंदुआ बोल्यो मित्र याहि तौ सिंह ने अभय दान दियो है। सो कैसें मारि है। काक कही अहो समय पाय राजा हू पाप करतु है जैसें भूखी नागिनि आपने अंडा खाय। भूख्यो कहा न करै

कह्योहै मतवारो असावधान गमो वृद्ध अधीर कामी को धी लोभी भूख्यो डस्यो आदि ये सब अधर्म को न जानेन मा नें। यमें बतराय वे सिंह के निकट गये आरु हाथ जोरि सन्मुख ठाढ़े रहे। तब उनि पूंछी कछु खेवे को पायो। इननि कही महाराज बहुत यत्न कियो पर कछु हाथ न आयो। सिंह कही अब कैसें बचि हैं। बहुरि काग कही महाराज आप हाथ आयो अहार छांड़ तु हो। तातें औरहू ठौर नाहीं मिलत। सिंह बाल्यो मो कहा। इन झुक कान में कही या चित्रकरण को मारि खाओ। उनि कही याहि मैं अभय दान दियो नाहि कैसें मारों। कह्यो है भूमि सुवर्ण अन्न। आदि दान बड़े दान हैं पर शरणागत को गरिववो इनहू तें अधिक फल देतु है। बहुरि काग कही महाराज तुम जिन मारो। हम ऐसो उपाय करि हैं जु वह आपही जीवदान करि निज शिर तुम को देहै। यह सुनि सिंह चुप ह्वै रह्यो। तब काग ने वाको मनोर्थ जानि कपट करि। चित्रकरण सों कह्यो कि नाहि तो राजाने अभयदान दियोहै परन्तु या समय तुम विनतें अहार को मनुहार करो। तो। राजा तुम तें अति प्रसन्न होयगो। ऐसें वाहि फुसलाय सिंह पासलै जाय उन तीननि हाथ जोरि कह्यो महाराज यह चित्रकरण कहतु है कि अहार तो कहूं नाहीं मिलतु औ तुम अनेक दिन के भूखे हो। निहारो दुख मोपे नाहीं देख्यो जातु। तातें तुम मोहिं मार खाओ। कह्यो है। राजातें प्रजा की रक्षा है प्रजा को मूल प्रजापतिहै अरु मूल रहे तो डारि पात फूल फल आपहीतें होंय। पुनि सिंह कही अरे जल मरिये सो भलो पर ऐसो कर्म न करिये

तब स्यार बोल्यो महाराज ऐसेही कह्यो है। तब तो चित्रकरणा हू ने सिंह की दृढ़ता जानि मनुहार करि कह्यो महाराज आप मेरी शरीर खाओ। इतनी बात वाके मुखतें सुनतही सिंह ने वाहि दौरि मार्यो। अरु सबनि मिल भक्षण कियो। महाराज तातें हौं कहतु हौं कि दुष्ट के उपाय औ उपदेश सों साधू की मनसा डिगे। बहुरि राजा चित्रवरणा बोल्यो अहो मेघवरणा तुम इतेक दिन शत्रुनि माहिं कैसे रहे अरु कौन भांति उनतें तुमतें प्रीति निभी वायस बोल्यो महाराज कह्यो है कि स्वामी के कार्य शत्रू कों माथे चढ़ाइये औ गिराइये ऐसें जैसें नदी पाय धोय धोय रूख कों गिरावे। पुनि जो सुबुद्धी होय सो॰ ऊ आपने प्रयोजनके निमित्त बैरी हू कों माथे चढ़ाय। निज कार्य साधे जैसें बूढ़े सर्प ने शिर चढ़ाय मेंडुक। खाये। राजा कही यह कैसी कथा है। तब काग कहतु है॥

काहू बनमें एक अति बूढ़ो मन्द विष नाम नाग रहे। सो अहार कों फिर न सके। तातें सरोवर के तीर पर्यो रहै। काहू दिन एक दादुर ने वाहि देखि दूरतें कह्यो अहो तुम जो अहार नाहीं खोजतु परेहू रहतु हो सो कहा है। उन कही हौं कहा जाऊं औ मो अभागी कों को बूझतु है। इतनी सुनि विन याहि आचार्य जानि कह्यो कि तुम आपनी अवस्था कहो। तब सर्प कहनि लाग्यो॥

या बलपुरी में कौंडिन्य नाम ब्राह्मण। वाको बीस बर्ष को पुत्र पढ़्यो गुन्यो। मैं आपने अभाग्य तें ताहि डस्यो। तब कौंडिन्य सुशील नाम पुत्र कों मर्यो देखि शोग सों भूमि भूमि पै गिर्यो। पुनि वाके भाई बंधु औ गाँव

के लोग सब आय जुरे। कह्यो है सुख दुख समय असमय शुभ अशुभ में जे दृष्ट मित्र बन्धु होंय तें सुधि लेंदु। आगो एक कपिलदेव नाम ब्राह्मण ने आय याहि समझाय बुझाय के कह्यो अरे कौडिन्य तू अति मूरख है जो अब खेद करतु है। क्योंकि संसार की तो यही रीति है कि दुतउ पज्यो उतमर्यो। तातें याको शोक कहा। देखो सेना सहित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे। तो और की कहा चली। बहुरि देह धारी कों मृत्यु ऐसें लगी रहती है कि जैसें सम्पत में विपत प्राप्ति में हानि संयोग में वियोग ज्ञान में ग्लान। पुनि यह देह छिन छिन यों घटति है ज्यों जल में काचो घट घटै। कह्यो है शरीर यौवन रूप द्रव्य ठकुराई मित्राई औ एक ठौर को वास ये सब अनित्य हैं। यातें जो ज्ञानी चतुर पण्डित होंय सो इनके गये को शोच न करें। अरु सुनो जैसें नदी के प्रवाह में जहां तहां के काठ आय मिलतु हैं तैसें या संसार के जीव हैं। इनतें जेतो सनेह कीजे तेतो दुख होय। क्योंकि जग में सदा काहू को साथ नाहीं निबहतु। अरु जो आपनीही देह साथ न देय तो और की कहा चली। कह्यो है माया किये यो दुख बढ़े जो कुपथ्य किये रोग। पुनि काल ऐसें चल्यो जातु है जैसें नदी को जल। यासों या संसार की माया छाँड़ि दीजे अरु साधु की संगति कीजे। संगति साधु की सब सुख सों अधिक सुख देतु है॥

दोहा

तीरथ ब्रत जग देवता लाल मंत्र द्रुम स्वेत॥
काल पाय फल देतुहैं साधु सदा फल देत।

अरु मित्र सुनौं। जैसें बर्षाकाल में चाम के बन्धन ढीले है जातु हैं तैसें वृद्ध अवस्था में या शरीर के। इतनी बात कहि पुनि कौंडिन्य सों कपिल देवने कह्यो भाई अब दुःख जिन करो। आपने प्राण राखिवे को उपाय करो। यह सुनि कौंडिन्य उठि बोल्यो। बन्धु अब यह गृह रूप। कूप में न रहि हौं। वनमें जैहौं। पुनि कपिलदेव कही भाई अनुरागी कौं वनहू में दोष औ उदासी कौं घरहीमें मोक्ष। कह्यो है जो जन फलकी वासना छाँड़ि विष्णु भजन करै ताहि वन और घर समान है। अरु कौनहू आश्रम में रहि दुःख सहि धर्म कर्मदान तप व्रत यज्ञ करै औ सब जीव पै दया राखै ताही कौं तप स्वी जानियै। पुनि जो प्राण राखिवे कौं अहार सन्तान कौं मैथुन करै और सत्य बचन भाषै सो दुःख रूपी समुद्र कौं तरै। कह्यो है आत्मा रूपी नदी के संगम पै पुण्य तीर्थ सत्य जल शील करार दया तरंग तामें जो स्नान करि अन्तः करण शुद्ध करै सो जन्म मरण व्याध तें छूटै। यह संसार सार नाहीं। मनुष्य दुःख कौं सुख करि मानत हैं। जैसें बोझ कौ बहनिहारो मोट पाय सुख माने तैसें मनुष्य गति है। बहुरि कौंडिन्य बोल्यो भाई तुम साचक हतु हो। यह बात ऐसेंही है। इतनौं कहि विनलांबी सांस लै मोहिं तो यह आप दियो कि तू मेंडुकन को बाहन होउ। अरु वाने आप गृहस्थाश्रम छाँड़ि संन्यास धर्म लियो। तातें अब मैं वाकौ दियो आप भुगतवे कौं आयो हौं। यह बात सुन दादुर ने आपने राजा सों जाय कही। तब जलकुन्द नाम मेंडुक मेंडुकन को राजा

(शेष)

बाहर आयो। पुनि नागने वाहि प्रणाम करि मूड़ पै चढ़ायो अरु ताल के चहुँघां लै फिरयो। दूसरे दिन जब वह आय चढ्यो तब वह चल न सक्यो। पुनि दादुर बोल्यो उतावलो चल। सांप कही स्वामी मोपै मारे भूख के चल्यो नाहीं जातु। उन कह्यो तू मेरी आज्ञा तें सेना के मेंडुक खायो कर। बहुरि सांप ने हाथ जोरि कह्यो महाराज तुम मेरी बड़ी सहायता करी। यों कहि पुनि खानि लाग्यो कितेक दिन में सब मेंडुकन कों खाय उनि जलकुन्द हू कों खायो। ताते हों कहतु हौं कि जो चतुर होय सो आपनों कार्य साधवे के लये शत्रहू कों माथे चढ़ावतु हैं। महाराज ऐसेही मैं हू राजा हिरण्यगर्भ सों प्रतीत बढ़ाय गाढ़ में रह्यो। आगे राजा चित्रवर्ण ने गीध सों कही कि बाबा जू अब राजा हंस हमारो होय रह्यो तो वाको बसाइये। ना तो आपने लोग। यह बात राजा चित्रवर्ण मंत्री तें कहनि न पायो हो कि एक दूतने आय कह्यो महाराज सिंहल द्वीप को राजा सारस तिहारे देश पै चढ़ि आयो है। जो नगर बचायो चाहो तो वेग सुधि लेउ। नातो रहनो कठिन है। यह सुनि राजा मौन गहि रह्यो अरु गीध मंत्री ने मनमें कह्यो कि होय न होय यह चकवा को काम है। पुनि राजा मयूर क्रोध करि बोल्यो कि यह काम रहै। चलो। प्रथम वाही कों खेद काढ़ें। गीध कही महाराज शरद काल के मेघ की भांति वृथा न गाजिये बल करि दिखलाइये। नीति तो यों है कि एक ही बेरि दिशा दिशा के लोगनि सों बैर न करिये। कह्यो है अनेक चैंटी हू मिलें तो गज कों मारें। ताते महाराज मेरे जान

तौ राजा हंस तें विन प्रीति किये ह्यां तें निभनौं हू कठिन होयगौ। क्यौंकि चलतही शत्रु पीछो करैहै। यातें विचार करि कार्य करौ। बिन विचारयो काम किये पाछे पछितावो होतुहै जैसें बिना विचारे न्यौर मारि ब्राह्मणी। पछताई। राजा कही यह कैसी कथा है॥ तब गीध कहतु है॥

उज्जैन नगरी में एक माधो नाम ब्राह्मण। ताकी स्त्री ने पुत्र जायो। सु एक दिन वह ब्राह्मणी पुत्र की रखवारी ब्राह्मण कौं राखि आप नदी न्हैवे कौं गई। अरु याही समय पण्डित कौं राजा कौ बुलावो आयो। तब वा ने बिचारयो कि जौ हौं न जाऊंगौ तौ राजा जो दान देतु गौ सो और कोऊ लै जायगौ। कह्यौ है लैन दैन के कार्य में उतावल न करिये। तौ वह अवसर बीते हाथ न आवै औ। जौ जाऊं तौ बालक कौन कौं दै जाऊं। यह बिचारि वह ब्राह्मण जाके नेरे एक बहुत दिन कौ पोष्यो न्यौर हो ताहि वा छोहरा के निकट रखवारी राखि आप राजा के ह्यां गयो। आगे मोड़ा के निकट एक सर्प आयो। ताहि न्यौर ने मारि खायो। जब ब्राह्मणी आई तब न्यौर दौरि वाके पांयन पै गिर्यो। उन याकौ मुंह लोहू भर्यो देखि निज मनमें जान्यौं कि इन चांडाल ने मेरो पूत मारि खायो। यह समझ ब्राह्मणी ने न्यौर कौं मारि डार्यो। पुनि आगू जाय देखै तौ छोहरा खेलतु है अरु वाके निकट सांप मर्यो पर्यो है। तब वह पछताय के बोली कि हाय मैं पापिन यह कहा कर्म कियो जु बिन देखे भाले बापरे न्यौर कौ जीव लियो। तातें हौं कहतु हौं कि

(महाराज)

महाराज विन विचारे कबहू कछु कार्य न कीजे। अरु। काम क्रोध लोभ मोह तज दीजे। क्योंकि इनहीं दोषन तें राजा पृथु जन्मेजय रावण औ कुम्भकरण मारे गये। अरु देखो शत्रु भाव छोंड़ि परशुराम औ अम्बरीषने जितेन्द्री होय अनेक दिन राज कियो। तातें हौं कहतु हौं कि महाराज जो मेरो कह्यो मानो तो वा राजा तें प्रीति करि चलो। कह्यो है प्रथम तो पराई भूमि मांहिं जाय डेरा करनौं कठिन अरु किये पाछे उठावनौं अति कठिन है। यासों कार्य्य साधिवे कों चार उपाय कहे हैं साम दाम दंड भेद। पर इनमें साम उपाय सों वेग काम सिद्ध होतु है। राजा कही प्रीति उतावली कैसें होय। गीध बोल्यो बेगही होय। कह्यो है साधे देखतही मिले औ मूर्ख कछू न समझै। जो ब्रह्मा हू वाहि चितावे तो हू नजानै न मानै। अरु महाराज राजा हंस तो बड़ो साधु है औ वाको मंत्री सर्वज्ञनाम चकवा अति चतुर है। मैं काग के कहे तें उनकी करणी औ करतूत जानी। कह्यो है। जाहि न देख्यो होय ताके गुण औ कर्म सुनि सुनि के वाहि पिछानिये। राजा कही अनेक बात करिवे तें कहा प्रयोजन। अब जो उचित होय सो करो। या बात के कहतही गीध राजा तें आज्ञा ले गढ़ में गयो अरु आपने आवन को समाचार चकवा सों कहि पठायो। वाने सुनतही आपने राजा कों जाय सुनायो। तब राजा हंसने चकवा सों कह्यो कि अब जो गीध के पाछे शेर कटक आवे तो कहा करिये। चकवा बोल्यो महाराज यह को का करिवे की ठाम नाहिं क्योंकि यह गीध बड़ो पुण्यात्मा

है। यातें कछु चिन्ता नाहिं। कह्यो है बिन भय की ठौर। सन्देह करनौ कुबुद्धि कौं काम है। इतनी कहि चकवाने जाय गीध कौंल्याय राजा हंस सों गढ़ के द्वार आयो लिमायो। तद राजा हंस ने गीध कौं आदर दै बैठायो। पुनि गीध बोल्यो महाराज यह गढ़ आपको है। जाहि दियो चाहो ताहि देउ। हंस कही यह बात ऐसीही है। बहुरि चकवा बोल्यो सुनौं। हमारो तुम्हारो एकही है। पर अब कछु अधिक कहिवे को प्रयोजन नाहिं। गीध बोल्यो महाराज नीति शास्त्र में कह्यो है कि लोभी कौं धन दै मलो मनाइये उग्र होय ताकी कर जोर स्तुति गाइये। मूर्ख को कह्यो राखिये पण्डित तें सत्य भाषिये। देवता की निष्कपट पूजा कीजे। मित्र बंन्धु को अति आदर दीजे। सेवक औ स्त्री कौं दान मान तें बश करिये। तौ याकठिन संसार में सुख सों दिन भरिये। तातें हौं कहतु हौं कि जो उचित होय सो अब करिये। चकवा बोल्यो जो संधि की रीति है सो कहो। अधिक बात कहिवे तें कहा काम। पुनि राजा हंसने कह्यो कि संधि के कितेक प्रकार हैं सो कहो। गीध बोल्यो धर्मावतार हौं कहतु हौं। आप चितदै सुनिये। कह्यो है कि जब बलवान पै अति बलवन्त चढ़ि आवे अरु वा पर याको कछु बल न चले तब संधि उपाय करे। संधि के नाम भूपाल, उपहार, संतान, संगति, उपन्यास, प्रतीकार, संयोग, पुरुषान्तर, अदृष्ट, जीवन, आत्मा, उपग्रह, परक्रिया, उच्छिन्न, परभूषण। अरु ये संधि गति हैं। समानता तें दै राजा मिलै सो भूपाल संधि कहावै। दान दै प्रीति करै ताहि उपहार

संधि कहतु हैं। दासी दै मिले वाहि सन्तान संधि कहिये। पांच सात मिल बीच में परि प्रीति करावैं ताहि संगतिसंधि कहि गावैं। द्वै राजा एकही कार्य करि आपस मांहि हित राखैं सो उपन्यास सन्धि। अब हम इन को कार्य सारैं पाछे ये हमारे कार्य आय हैं। ऐसें बिचारि जो मिलै सो प्रतिकार संधि। एकही शत्रु पर द्वै नरपति चढ़ै अरु पैंड़े में मिलैं वह संयोग सन्धि। आपने योधानको साथ लै मिले वाहि पुरुषान्तर सन्धि कहैं। तुम कहो मारो हम तिहारे ह्वै रहैं यों कहि मिले सो अदृष्ट संधि। भूमि दै प्रीति करै वह जीवन सन्धि। प्राण राखिवे को सर्वस्व देय ताहि आत्मासंधि कहैं। आपनों कटक सेवा कों पठावै सो उपग्रह सन्धि। द्वै राजा आपस में बैर भाव राखैं पुनि काहू शत्रु के घेरे में आय दोऊ मिल जायं सोपरिक्रिया सन्धि। सार भूमि दै मिलै वह उच्छिन्न सन्धि। जो द्रव्य उपजैगो सो तुमको दैहैं पर निकट जिन आओ ऐसें कहि मिलै वाहि पर भूषण। सन्धि कहिये। इतेक बातें कहि गीध बोल्यो महाराज ये सब सन्धि कहीं। पर या समय उपहार संधि ही भली है क्योंकि जो बलवन्त आपनों देश छांड़ि गांठि को धन खाय आवे सो बिन भेंट लिये न जाय। तातें बिन दिये सन्धि न होय। अब धन दीजै और उपहार सन्धि कीजै। चकवा बोल्यो सुनों यह आपनों वह परायो ऐसो जे बिचारतु हैं ते अधम जन हैं। अरु उत्तम जननि को तो ऐसो बिचार नाहिं। वे तो सब सृष्टि ही को कुटुम्ब जानतु हैं। कह्यो है जे पुरुष पर स्त्री कों माता

करि मानैं औ दूजे के धन कौं माटी समान जान पुनि सब जीवन कौं जीव आपनौं सो गनैं तेई या जगत में पण्डित। औ धरमात्मा हैं। बहरि गीध कही तुम यह कहा कहतु हौ। सुनौं। मेरे जान जिन संसार में आय या छिन भंगा देह को धर्म छांड़्यो तिन सर्बसु गँवायो। कहतु हैं कि जैसें जल माहिं पवन चलै चन्द्र को प्रति बिम्ब चंचल रहतु है तैसें ही प्राणी को मन सदा अस्थिर रहतु है। तातें या मनुष्य कौं उचित है कि देह की माया छाड़ि अपने कल्याण को कार्य बिचारै अरु सदा सर्वदा सज्जननि की संगति करै क्योंकि वासों धर्म औ सुख दोऊ मिलैं। यासों हौं कहतु हौं जो मेरो कह्यो मानो तौ ऐसें ही करो। कह्यो है सहस्र अश्वमेध की समान सत्य है। पर जोखिये तौ सत्यही अधिक होय। यातें हौं कहतु हौं कि अब दोऊ नरपति सत्य बीच दै मिलो अरु उपहार सन्धि करो तौ अति उत्तम है क्योंकि यामें साँप मरै न लाठी टूटै। चकवा बोल्यो तुम नीकी बात कही। यह सुनतही राजा हंसने रत्न बस्त्र अलकार द्रव्य दूरदर्शी गीध कौं दियो। अरु विनहू लै प्रसन्न ह्वै सर्वज्ञ चकवा कौं साथ करि राजा हंससों बिदा होय आपने कटक कौं प्रस्थान कियो। ह्वां जाय ह्यां को सब वृत्तान्त सुनायो औ चकवा कौ राजा चित्रवरण तें अति आदर मान सों मिलायो। तब राजा हू ने बड़े मानसों पान औ प्रसाद दै चकवा कौं बिदा कियो। दूत चकवा राजा हंस के निकट आयो अरु उत गीधने चित्रवरण कौं टेर सुनायो कि महाराज तिहारी सब मनकीवाँछा

पूजी। अब कुशल क्षेम आपने देश चलो। यह सुनि राजा मयूर वहां तें चल्यो अरु आनन्द तें आपनी राजधानी में पहुंच्यो। दोऊ राजा आप आपने देश में सुख सों राज करनि लागे। इतनी कथा कय विष्णु शर्म्मा बोल्यो महाराज कुमार अब जो कछु तुम्हें सुनिवे की इच्छा होय सो कहो। राज पुत्रनि कही अहो गुरुदेव हमने तिहारे प्रसाद तें राजनीति के सब अंग जाने सुख पायो अज्ञान नशायो मन को खेद गंवायो मानों नयो जन्म भयो॥

अथ पञ्चम कथा प्रारम्भ

विष्णु शर्म्मा बोल्यो सुनिये महाराज कुमार। या कथा के पढ़े सुनेतें मनुष्य कठिनता के समुद्र कों ऐसें तरे जैसें बानर आपनी बुद्धि सों तर्यो। अरु जो कपट सों कार्य लियो चाहे औ अधूरे काम मांहिं मनोर्थ कहि देय सो ऐसें ठगायो जाय जैसें मगरमच्छ ठगायो गयो। राज पुत्रनि कही यह कैसी कथा है। तब विष्णुशर्म्मा कहनि लाग्यो॥

समुद्र के तीर काहू ठौर एक जामन को पेड़ सफल। तापै रक्त मुख नाम एक बानर रहे। काहू समय सागर की लहर को मार्यो एक विकराल नाम मगरमच्छ वहां आयो अरु वृक्ष तरे कोमल बालू में जाय बैठ्यो। तब मर्कट नें वासों कही अहो तू आज मेरो पाहुनो है। यातें मैं जम्बु फल देतु हौं। तू मन भरि भोजन कर। कह्यो है हितू होय कै अनहितू पण्डित होय कै मूरख भोजन समय आवै तासों अतिथि धर्म कीजे॥

दोहा

आवै भोजन के समय शत्रु चोर चण्डाल ॥ ॥
अतिथि जानि पूजा करैं जगमें परम उदार ॥

आगे वह मगर फल खाय संतुष्ट भयो । पुनि नित आवै नित जाय भली भली बातें कहै सुनै । फल खाय अरु पाकेपा के फल आपनी स्त्री हू के लिये ले जाय । एक दिन वाने पूँछी अहो कन्त ये अमृत फल तुम कहां तें ल्यावतु हो । इन कही मेरो एक परम मित्र रक्त मुख नाम बानर है । सो मोहिं प्रीति सहित ये फल देतु है । पुनि वह बोली जो ये अमृत फल नित खातु है ताको करेजा अमृत सम होय गो । तातें तू वाको करेजा मोहिं ल्याय दे । मैं वाहि खाय तृप्त होय तो सों क्रीड़ा करौंगी । मगर कही एक तो वह मेरो परम मित्र दूजे फलको दाता । ताहि मैं कैसें मारि हौं । कह्यो है संसार में दै प्रकार के भाई होतु हैं । एक तो माजायो दूजो मुख गायो । पर आपने सहोदर भाई तें वाहि अधिक जानिये । बहुरि वह बोली सुनि । अब लौं तो मेरो कह्यो तें कबहूं न उलंघ्यो हो पर आज तें न मान्यो । तातें मैं जान्यों कि जाहि तू बानर कहतु है सो नाहिं । वह वानरी है । तातें तू अशक्त भयो है । वाही के अनुराग तें दिन भर वहां रहतु है सो मैं जान्यों । याही तें तू मेरे पास आय वाही की बातें नित हंसि हंसि कह्यो करतु है औ रात्रि को सोवत समय तेरो अंग शिथिल रहतु है । मैं अब बूझी कि तेरो मन और नारी सों लाग्यो है । अधिक कहा कहौं । जब लौं आपनी सौत को करेजा न खवाऊंगी तब लौं अन्न पानी न करौंगी अरु प्राण दै मरौंगी । यह सुनि डरि मगर दीन ह्वै

बोल्यो प्यारी हौं तेरे पाँय परतु हौं । तू जिन रिसाय । यौं सुनि वाहि अधीन भयो जानि आँखनि में आँसू भरि बोली अरे धूर्त्त कन्त आज लौं तो तें मेरे अनेक मनोर्थ साधे पर अब तू और सों स्नेह करि मेरो निरादर करतु है । यातें तेरो पाँयन को परिबो दूनों उर दाहतु है । अरु जो तेरो प्रेम वासों नाहीं तो क्यों न मेरो नेम पूरो करै । पुनि वह निज मन में कहनि लाग्यो कि साधु जन सांच कहतु हैं ॥

दोहा,

पाहन रेरव रु तरुनि हठ कुक्कुट क्रोध सुभाय ॥
नीलरंग सम ना मिटै कीनेहु कोटि उपाय ॥

तातें मोहिं याके मनोर्थ को यत्न करनों बन्यों । यह बिचार ह्वांतें उठि बानर के पास जाय मगर अनमनो ह्वै बैठि रह्यो । पुनि मर्कट ने वाहि उदासी देखि कह्यो अहो आज कहा है जो तुम कछु भाषत नाहिं अरु चिन्तित होय बैठि रहे हो । मगर बोल्यो मित्र आज तेरी भाभी ने मोसों निठुर बचन कहि कह्यो कि तू कृतघ्नी है अरु काहू के उपकार कों न मानतु है न जानतु है । क्योंकि ऐसें उपकारी कों तू एक बेर हू आपने घर नाहीं ल्यावतु । पुनि निर्लज्ज होय वाके घर काहे रवाय रवाय आवतु है । अब अधिक कहा कहौं । जो तू मेरे उपकारी देवर कों न ल्यावेगो तो मोकों हू जीवतुन पावेगो । मित्र यातें मैं तो व्हां तें उदास होय इततेरे लेन कों आयो औं उत उन तेरे कारण कंचन रत्न तें घर सँवार पारस्वर छाय बिछाय नाना भांति के पकवान व्यंजन बनाय राखे होयगो अरु पौरि पर बैठि बापरी उत्कंठित बाट जोवति होयगी । बानर कही अहो मित्र भाभी ने यह बात तो ।

तुमतें सांचही कही कौंकि ऐसें औरहू ठौर कह्यो है। मित्रता के छह लक्षण हैं देनौं लेनौं निज दुख सुख कहिवो वाको सुनिवो वाके घर जीमनौं आपने गेह जिमावनौं। ये बातेंभी नि में आवश्यक चाहिये। पर हम बनवासी तुम जल निवासी। तातें मेरो जैवो तो ह्यां नाहीं बनतु। पै तुम कृपा करि भाभी कौं ह्यां ले आओ। तौ मैं वाके पाय परि आशीश लैंउ। मगर कही बन्धु हमारो गेह जल मांहिं नाहिं। जैसें समुद्र के कांठे इत तुम रहतु हो तैसें उत हम। अरु जौ तुम न जाओगे तौ हमारो गृह कैसें पवित्र होय गो। यातें तुम मेरी पीठ पर चढ़ि लेउ। मैं तुम्हें सुख सों ले चलौं। बहुरि बानर कही भाई जौ ऐसा है तौ अब बिलम्ब जिन करो बेगाही चलो। यह कहि वाकी पीठ पर चढ़ि बैठ्यो अरु वह ले नीर में पैठ्यो। पुनि औंड़े में जाय बेगा चलनि लाग्यो। तब बानर बोल्यो भाई धीरे चलो। पानी की तरंग मोहिं ठेलै देति है। यह सुनि मगर ने निज मन में बिचार्यो कि अब तौ यह बंदरा मेरी पीठ तें तिल भरहू नाहीं खिसक सकतु। तातें हौं आपनौं मनोर्थ कौं न कहौं जौ यह अन्त समय जानि आपनौं इष्ट देव भजै। ऐसें जी में ठानि उनि बनचर सों कही मित्र हौं स्त्री के कहे बिश्वास घातकरि तोहिं मारिवे कौं लिये जातु हौं। तुम आपनौं इष्ट देव भजो अरु जग की माया तजो। बानर कही भाई मैं भाभी कौ ऐसो कहा अपराध कियो जो तुम मोहिं मारनि कौं साथ लियो। मगर बोल्यो अहो तुम नित अमृत फल खातु हो। यातें तिहारो करेजा अमृत समान होय गो। यह जानि इन देवे कौ मनोर्थ कियो है। अरु वाके मनोर्थ पूजवे

कौं मैंहूं शिर पाप लियौ है। कह्यौ है अग्नि साख दै जाकौ कर गहिये ताकौ मन भायौ कार्य करिये। यह पुरुष कौ धर्म है। या बात कौं सुनि एक मुख बानर ने वाकी मूर्खता देखि उक्ति युक्ति सों वाके मनोर्थ पर मनोहर बचन सुनाये कि मित्र जो तेरी ऐसोही विचार हो तो तैं मो तें कहां हीं क्यों न कह्यो जो मैं आपनों करेजा जम्बतरु में न राखि। आवतो। वह तो मोपै भाभी के पाँव लागिवे की बड़ी भेंटही कह्यौ है राजद्वार देवद्वार गुरुद्वार सूने हाथ जैवो उचित नाहीं। पर हौं तो हृदय शून्य होय या अगाध जल में तेरी बोल चल्यौ आयौ। अरु सुनि सब प्राणी कौं भय होतु है क्योंकि भय को निवास देह में करेजा है। याही तें जीव शोच करि चलतु हैं। आगले पाय कौं ठौर करि पाछलो पग उठावतु हैं। औ हम बनचर धरती पगहू नधरैं। ताही तें हमारो नाम ब्रह्मा ने प्रसवासृग धर्यो है। सो आपने कुलधर्म सों भय को निवास जो करेजा ताहि निकार रूख के खोलर में धरि निर्भय ह्वै डार डार। दौरि दौरि कूदि कूदि फिरतु हौं। अरु अबहीं तेरे संग। आवत जामुन के खोडर में यत्न सों धरि आयौ। बिन हृदय तेरे साथ निर्भय ह्वै उठि धायौं। यद्यपि हमारो हृदय विधाताने संसार की रीतितें बनायो है पर वह हमारे काहू काम को नाहिं। अरु तुम सोई चाहतु हो। यातें उत्तम। कहा जो तिहारे कार्य आवे। कह्यौ है।

दोहा

धन दै कै जिय राखिये जिय दै रखिये लाज
धन दै जी दै लाज दै एक प्रीति के काज॥ ॥

इतनी बात के सुनतही मगर आनन्द सों बोल्यो अहो प्रीतम जौ ऐसी बात है तौ आपनौं करेजा मोहि दे जुवा दुष्ट पत्नी कौ हठ रहै अरु तेरौ जीव बचै मोहिं मित्र द्रोह कौ पाप न लागै। इतनौं कहि पाछौ फिर्यो। पुनि वे दोऊ आप आपनौं इष्ट सुमरण लागे। कह्यौ है अधर्मी कौ। मनोर्थ इष्ट देव भजेहू निष्फल होय। आगै बानर आपने पुण्य प्रताप सों तीर पै जाय मगर की पीठ तें उतरि लाँबी लाँबी डगें भरि जम्बू वृक्ष पर जाय बैठ्यो औ मन में कहनि लाग्यो कि मैं आज नयौ जन्म पायौ जु या दुष्टके हाथतें बचि आयौ। कह्यौ है कि जाको विश्वास जी में न आवै ताकौ विश्वास कबहू न कीजै। पात्र कुपात्र बिचारिये। जाकौ जैसौ स्वभाव होय तासों तैसेही निबाहिये अरु दुष्ट के मीठे बचननि पर न जाइये क्योंकि वह आपनी घातही सों कहै। यह तौ ऐसें विचार रह्यौ हौं। तासें मगर बोल्यो भाई बैठि काहे रह्यौ। वह करेजा मोहि दे। मैं तेरी भाभी कौं जाय देउं। बानर कही मित्र अथाह जलमें गये तें भ्रम भयौ है। तातें मोपै बोल्यो नाहीं जातु। मगर कही बन्धु पुरुष कौं कह्यौ है कि भ्रमजीत परमार्थ पुरुषार्थ करै। यह सुनि बानर रिसाय कै बोल्यो अरे मूरख बिश्वासघाती तोहिं औ तेरी मति कौं धिक्कार है क्योंकि काहू के है करेजा हू होतु हैं। अब तू जातें जा फेर जिन आवनौं। कह्यौ है जासों एक बेर जीव बचाइये पुनि वाहि कबहू न पतियाइये अरु जौ वाकौ बहुरि बिश्वास करै तौ निदान अनेक दुख भरि निस्सन्देह मरै। ये बातें बानर तें सुनि। मगर चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि मैं अभागे यह कहा

कियो जु काय विन भये आपनों कपट याके आगे कह दियो। अब काहू भांति यातें विश्वास उपजाय पुनि याहि दांवमें ल्याऊं तो भलो। ऐसें मनमें ठानि हँसके बोल्यो कि हे मित्र तेरी भाभी कों तो या बात तें कछु प्रयोजन न हो॥ पर हौं हेंसी की रीति तेरी प्रीति की परीक्षा लेतु हौं। तुम मन में कछु जिन ल्याओ औ मेरी गैल आओ। कपि कही अरे दुष्ट जलचर तू ह्यां तें जा। हौं आवन कों नाहिं। ऐसें संग दत्तहू ने कह्यो हो प्रियदर्शन तें कही कि फेर बंगदत्त कुआं में आवन कों नाहिं। मगर कही यह कैसी कथा है। पुनि मर्कट कहनि लाग्यो॥

काहू एक कुआं में बंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकन को राजा रहै। वाको कुटुम्ब तें बैर भयो। तब वह अरहट की माल पै बैठि कूप तें बाहर आय विचारन लाग्यो कि अब कौन उपाय तें बैरियन मारि निष्कंटक राज करौं। यह विचार करतु हो कि वानें एक कारो नाग बिल में पैठतु देख्यो अरु याहि वह प्यारो लाग्यो। तब बोल्यो कि या सों प्रीति करि शत्रुन को नाश करौं। कह्यो है कि रिपु मारिवे कों अति बलवन्त शत्रु सों स्नेह करिये औ ससा के मारिवे कों बाघ को बल धरिये। थोरो पराक्रम कबहू न करिये। ना तो अवश्य हारिये। ऐसें जीमें ठानि सर्प के बिल द्वार पै जाय पुकार्यो अहो प्रियदर्शन मेरो तुम कों प्रणाम है। बाहर आओ। यह सुनि वा सांप ने निज मनमें विचार्यो कि जो मोहिं बुलावतु है सो मेरो सजाती तो नाहिं क्योंकि सर्प को शत्रु नाहीं औ न काहू सों मित्राई। यातें प्रथम याहि भीतर बैठेही जानि लीजै तब बाहर पांय दीजै। कह्यो है

जाको शील स्वभाव न जानिये तासों वेगही न मिल बैठियो वह वृहस्पति को बचन है। अरु जो मैं तुरतही विन समझे बिलतें बाहर निकरौं तो न जानिये कि कोऊ वैरी मंत्रवादी। पकरै। तातें याहि जान्यो चाहिये। यों विचार ह्यां हीं तें बोल्यो अरे तू को है जो मोहिं टेरतु है। इन कही हौं गंगादत्त नाम मेंडुक मेंडुकन कौं राजा हौं। तो सों मेरी सहायता होवगी। यातें मित्रार्द्व करन आयो हौं। सर्प कही अहो यह अनमिल संग है। तृण अग्नि कैसी मित्रार्द्व। पर अब तू मेरे घर आयो। यातें मैं कहा कहौं। कह्यो है जासों आपनी मृत्यु जानिये ताके नेरे सपने हू न जाइये। ये तें ऐसी कहा बिचारी। गंगादत्त कही अहो यह तो सांच है अरु हम तुम जन्महीं के। वैरी हैं। पर हौं शत्रु को दबायो निरादर है तुम पास आयो। कह्यो है पगमें कांटो चुभै तो सुआ सों काढ़िये अरु शत्रु सों जब आपनो बिनाश जानिये तब सबल शत्रु को आसरो गहि प्राण धन राखिये। पुनि नाग बोल्यो तो सों शत्रुता कौन सों है। इन कही कुटुम्ब सों। उन पूंछ्यो तेरो निवास कूप तड़ाग वापी कहां है। इन कह्यो पाथरन तें बंधे कुआं में रहतु हौं। सांप बोल्यो तो तौन बनी क्योंकि तहां मोसों न गयो जायगो। कह्यो है अति मीठो भोजन होय। तोहू पेटभर खाइये अधिक लोभ न करिये। लोभ करे बिगार होय दुख पावे। पुनि गंगादत्त कही अहो ऐसो कह्यो है कि भेदी मिले कठिन ठौरहू सुगम ह्वै जातु है जैसें घर के भेदी लंका खोई। अब मैं तुम तें ह्यां को सारो भेद कहतु हौं। तुम चितदै सुनौ। वा कुआं के ऊपर रहट चलतु है। ताकी। माल तें लागि नीचे जाय एक खवाल में बैठि तुम हमारे

शत्रुनि निश्चिन्ताई सों खाओ अरु चैन सों बैरि मंडल गाओ। हौं तुम से आचार्य कौं आपनी गाढ़ में कछु समझही लिये जातु हौं। तासों तुम काहू भाँति की चिन्ता जिनकरो बेगा चलके मेरी राजधानी की रक्षा करो। इतिनी सुनि सर्पने बिचार्यो कि यह कोऊ भेद भागतें मोहिं आपने कुल को। अंगार आय मिल्यो है अरु मोहिं तो यातौर अहार हू नाहीं जुरतु। यातें वाठौर याके संग जाऊं तो बिन श्रम बैठ्यो अहार पाऊं। कह्यो है कि जब देह को बल घटै अरु कोऊ सहायक न होय तब पण्डित होय सो आपनी जीविका वृत्ति बिचारै। ऐसें सर्प ने निज मन में ठानि गंगदत्त सो कह्यो आज तें तू मेरो मित्र भयो। अब ह्यां ते चल। जाहि कहै गो। ताहि खाऊं गो। या रीति सों वातें बचन कहि नाग बिलतें बाहर आयो। पुनि दोऊ बतराय कूप पै आय रहट की माल में लागि बा मांहिं धसे औ रखवाल बीच बसे। आगे गंगदत्त ने आपने शत्रु चीन्ह चीन्ह बताये। उन बीन बीन खाये। जब बिन में तें कोऊ न रह्यो तब सर्प ने गंगदत्त सों कह्यो कि मित्र मैंने तेरो कैसो काम कर दियो जु शत्रुनि मारि निष्कंटक राज कियो। गंगदत्त बोल्यो भाई जैसें भले मित्र कार्य करतु हैं तैसें तुम कीनों अरु मोहिं सुख दीनों। पर अब याही अरहट की माल लागि आपने धाम पधारो। नाग कही हिनू यह कहा कहतु है। तें मेरो घर छुड़ायो मोकौं ह्यां ले आयो ह्यां औरही मेरी सजाती आनि रह्यो होइगो। सो मोहिं बिल में काहे बइन देयगो। ह्यां सों तें मोहिं आन्यों आपनों करि ठान्यों। अब मेरे अहार की चिन्ता कर जातो हम सों तुम सों न बनि है। कह्यो है अहारे व्योहारे

लज्जा न करे। यह बात सुनि गंगादत्त कौं ऊतर न आयौ। तब निज मन में पछतायौ कि मैं मूर्ख यह कहा कियौ। जु आपनौं घर दियाले दिखाय दियौ। अब यह बिरोध के बचन कहतु है। कह्यौ है कि सर्बस जातौ जानिये तौ आधौ दीजे बांट। तातें याके रेवे कौं आपनी बगर के मेंडुक तें एक एक नित दीजे। ऐसें मन में ठहराय बोल्यौ भाई तुम आपने अहार कौं मेरी बारवल तें एक दादुर नित लेहु अरु जैसें आपने घर रहियतु है तैसें रहौ। वह वाही भाँति रहनि लाग्यौ। एक दिन गंगादत्त कौ पुत्र सुमदत्त नाम वाके अहार में आयौ। तब गंगादत्त रोवत रोवत आपनी स्त्री के सम्मुख धायौ। ऊ न कह्यौ रे कुटुम्ब के मारन हारे अब कौं रोवतु है। तोहिं तौ कुटुम्ब कौ पाय लाग्यौ पर अब निज प्राण राखिवे कौ यत्न कर। यह बात सुनि गंगादत्त ने आपने कियौ कौ बहुत पछतावौ कियौ। आगै जब केवल गंगादत्तही रह्यौ तब प्रियदर्शन ने बिचार्यौ कि या मों सोंसो बोल बचन है। तातें यातें भोजन माँगौं। जब यह कहैगौ अब तौ हौं ही रह्यौ तब याहि छल करि खाऊंगौ। सर्प ने ऐसें मन में ठानि गंगादत्त सों कह्यौ रे प्रीतम अब तौं यहां मेंडुकनाहिं अरु मोहिं भूख लागी है। गंगादत्त बोल्यौ हे प्रीतम अब तौ हम तुम है भाई ही रहे पर आज्ञा करौ तौ दूजौ व्याह करौं औ प्रजा बसाय कुटुम्ब तें घर भरौं। तुम मेरी राजधानी कौं चिन्ता करौ औ मैं तिहारे अहार कौं। कहौं तौ अबहीं जाय। ताल के मेंडुकन बुलाय ल्याऊं अरु फेर ज्यों कौं त्यौं न गर बसाऊं। सर्प कह्यौ बन्धु यह तौ तुम नीकी विचारी।

यातें तौ तिहारी राजधानी रहे अरु मेरी जीविकाहू चले। सुनि। अबलौं तू मेरो भाई हो पर आज सों तू मेरे पिता की समान है। इतनी सुनि गंगादत्त रहट की माल लागि कुआँ के बाहर आय निज मन में कहनि लाग्यो कि मैं आज काल के गाल तें निकरि आयो सु मानों नयो जन्म पायो। ऐसें कहि एक सरवर में जाय रह्यो अरु ह्वो नागनि कितेक बेर लौं याकी बाट जोई। निदान घबराय के बोल्यो कि मैं अभागो यह कहा कियो जु वाहि जीवतु जानि दियो। सब दादुर कुआँ के रवाये पर जब लग गंगादत्त मेरी डाढ़ तरे न आयो तबलौं हौं नेक हू न अघायो। ऐसें कहि कूप माँहिं एक गोह रहत ही। इन तासों कह्यो। हे प्यारी तू मेरी संतुष्टता को कार्य करै तौ हौं तो सों एक बात कहौं। वह बोली कह। याने कह्यो कि गंगादत्त ताल में मेंडुक लैन गयो है। ताहि जाय कह कि दादुर लै वेग चल। अरु वे न चलें तौ तूही चल। तेरे देखेही वाकी भूख जैहै। कह्यो है भूख प्यास सही जाय पर मित्र को वियोग न सह्यो जाय। पुनि कहियो कि उन मोसों कह्यो है जु मोहिं भूख्यो जान मन में कछू भय न करै। जो मैं वासों द्रोह करौं तौ मेरे सब किये कर्म धोबी की नाद में परें। इतनौं कहि सो पने गोह कों बिदा कियो। वह कूप तें निकरि गंगादत्त के पास जाय नाग को संदेशो सुनाय बोली कि उन कह्यो है। अब दोऊ मित्र बैठि धर्म चरचा करिहैं। खेवे को शोच जि न करो। पूरण वारो कनकोरी श्री मन कुञ्जर कों देतु है। गोह तें सब बात सुनि गंगादत्त बोल्यो हे प्रिये कह्यो है भूख्यो कौन पाप न करै। नीच जीव निर्दयी होतु है। ताते तू प्रिय दर्शन तें जाय कह कि अब गंगादत्त कुआँ में आवन

को नाहिं। ऐसें कहि उन गोह कों विदा कियो। इतनी कथा कहि बानर ने मगर सों कह्यो अरे दुष्ट जलचर तू यहां तें जा। हौं गंगादत्त की भाँति फेर तेरे घर जान को नाहीं। पुनि मगर कही मित्र तुम्हें ऐसो करनों योग्य नाहिं। सुनों। जो तुम मेरो कृतघ्न दोष दूर न करि हो तो मैं तिहारे द्वार उपवास करि मरि हौं। बानर बोल्यो रे मूढ तू केतोऊ करि पर मैं लम्बकरन गदहा की भाँति फेर न जाऊंगो। मगर कही यह कैसी कथा है। तहां बानर कहतु है॥

काहू वन में एक कराल केश नाम सिंह। अरु ताको सेवक धूसर नाम स्यार रहै। सु काहू समय वह सिंह गज सों लर्यो। वाके शरीर में चोट लागी ऐसी कि वातें एक डग हू न चल्यो जाय। यासों वाहि अहार न जुर्यो। तब जम्बुक बोल्यो कि स्वामी मेरो तो मारे भूख के प्राण जातु है अरु तिहारो सों यह गति है जु डग भर हू नाहीं चल्यो जात। मैं सेवा कैसे करौं। सिंह कही अरे तू कहूं कोऊ जीव जाय देख। जो मेरी यह दशा है तोहू ताहि मारि हौं। यह सुनि स्यार हां तें चलि गांव के निकट आय देखे तो एक ताल के तीर लम्बकरन नाम गदहा चरतु है। वाहि देखि याने कह्यो मामा तोहिं मेरो प्रणाम है। आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारो दर्शन पायो अरु सब दुख पाप गँवायो। यों कहि वह धूर्त्त पुनि बोल्यो मामा अब के तोहिं अति दुर्बल देखतु हौं। सु कहा है। उन कही अहो भगिनी सुत कहा करौं। यह धुबिया बड़ो निर्दयी है। मो पे बहुत भार लादतु है अरु एक मूठी हू अनाज नाहीं देतु। हौं धूर मिश्रित रूखे सूखे तृण खाय रहतु हौं। तुमहीं बिचारो। तातें

देह कैसें पुष्ट होय। स्यार कही मामा जो तू ऐसी बिपत में है तो मेरे साथ चल। मैं तोहिं आछी ठौर लै जाऊं। तहां नदी के तीर मरकतमणि के वरणी हरी हरी दूब चरो औ आनन्द तें बिचरो। अरु हम तुम तहां बैठि आछी आछी बातें करें औ रहें। लम्बकरण बोल्यो अहो भगिनी सुत यह तौ भली बात कही पर तुम वनवासी हम नगर निवासी। तिहारी जीवि का मांस ते हमारी क्षुधा नाजतें। यातें हमारो तिहारो मेल कैसें बनै अरु वह भली ठाम हमारे कौन कार्य की। स्यार कही मामा ऐसें जिन कहो। वा ठौर तुम मेरी भुजानि के बलतें रहो। ह्यां काहू भाँति को दुख भय नाहीं। और हू गदहा अनेक आपनी आजीविका के लये रहति हैं सो पाहीं। औ ते आई हीं तब अति दुर्बल ह्वै रही हीं। तातें महाकुरूप दीसति हीं। मेरे आश्रम में आय उनि सुख पायो अहार सुख तो खायो। तासों वे पुष्ट होय चम्पकवरणी ह्वै रही हैं अरु वे काम की सतादीं मोसों निशंक आपनों मनोरथ आय आय कहति हैं। औ तामें आज प्रातही एक मामीने मोसें आय कही कि तेरो मामा सपने में मेरो पति भयो है। ताहि ल्याय मोसों मिलाय दै। यातें तुम बेग चलो। नातो वाहि कोऊ और लै जायगो। यह बात सुनि कामातुर होय लम्बकरण बोल्यो अहो भानजे जो ऐसी बात है तो आगा होय तो तू में चलौंगो। कह्यो है स्त्री में दै गुण एक अमृत औ दूजो विष। संयोग अमृत औ वियोग विष। पुनि जाको नाम लिये मनुष्य प्रसन्न होय ताको मिलन सुख तो अधिकही होयगो। आगे वह स्यार गदहा कों फुसलाय लै गयो। औ सिंह गदहा कों देखत

ही धायो। तब यह भयमानह्वै परायो औ वाके हाथ तो न आयो पर नाहर के हाथ की चोट याके शरीर में लागी। सिंह अकुलाय पकुलाय बैठ रह्यो। तब जम्बुक बोल्यो कि तुम यह कहा कियो जु गदहा छाँड़ि दियो। बस। देख्यो तेरो पराक्रम। जो याही कों न मार सक्यो तो हाथी कैसें मारेगो। नाहर कही अरे एक तो मेरी देह निर्बल दूजे वाको आवनो मैं न जान्यों। यातें वह निकरि गयो। नातो हाथी खेद माहीं। पुनि स्यार बोल्यो भलो जो भयो सो भयो। वाहि जानि देउ। अब हौं वाहि फेर ल्यावतु हौं। तुम सावधान होय बैठो। सिंह कही अरे जो मोहिं देखि गयो है सो फेर कैसें आवेगो। स्यार बोल्यो तुम आपने पराक्रम की बात कहो। वाहि ल्यावन की हौं जानौं। यह बात सुनि सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठ्यो औ स्यार तहां ते चलि नगर में पैठ्यो। वादहा के ढिगजाय हँसि के बोल्यो अरे मामा तू वहां तें कों बगादि आयो। उनि कही अहो भगिनी सुत तू मोहिं भली ठौर लै गयो जु मैं नीठ नीठ मीचके हाथ तें बचि आयो। वह कौन जंतु हो जाके हाथ की चोट मेरे शरीर में वज्र सम लागी। स्यारने मुसकराय के कह्यो मामा वह तो मामी ही। तोकों आवतु देखि अनुराग तें आतुर होय आलिंगन करिवे कों उठी ही। पर तू नपुंसक जो भाज्यो। सु वह सकुच करि वहां हीं बैठगई। कह्यो है जब स्त्री क्रीड़ा समय ढीठ होय ढिठाई करै अरु वाके भर्तार सों कछु कार्य न सरै तब वह आपनी ढिठाई तें आप लज्जित होय। अब वाने मोसों कह्यो है कि जाके शरीर में मेरो हाथ लाग्यो मैं ताही कों वरिहौं। ना तो लंघन करि करि मरिहौं। तूही ताके मन में बस्यो है। तेरे

ही बिरह सों वह बापरी दुख पावतिहै। यातें हौं कहतु हौं कि तू वेग चलि वाकी मनोर्थ पूरो कर। न जानिये जो बिरह बिथा तें वाकौं जीव निकरि जाय तो तोहिं स्त्री हत्या कौ पाप लागै। कह्यो है बालक स्त्री गौ ब्राह्मण की हत्यातें महानर्क भोगनौं होतु है। श्री भगवान ने संसार में नारी बड़ी वस्तु बनाई है। तोही तें सब कौं प्रियहै॥

दोहा

नारी नारी सब कहैं नारी नर की खान॥ ॥
अन्तकाल में देखिये नारी ही में प्रान॥ ॥

अरु जे स्वर्ग की इच्छा करि नारी कौं तजतु हैं तिनकौं कामदेव पीड़ा देतु है। देखो। कोऊ नग्न होय छार में लोटतु है। कोऊ आपने हाथ आपनौं शिर खसोटतु है। कोऊ जटा गरिव पंचाग्नि मांहिं बैठि जरतु है। कोऊ कपाली आसन मारि श्री उर्द्ध बाहु होय दुख भरतु है। पुनि कह्यो है नारी सब सुख की जरहै। इतनौं कहि बहुरि स्यार बोल्यो कि मामा हौं तिहारो हित होय कहतु हौं कैांकि तिहारे सुख तें हमें सुख है श्री दुखतें दुख। आवो गदहा स्यार को उपदेश सुनि कामांध होय हर्षि पुनि वाके साथ चल्यो। कह्यो है कि जब मनुष्य कर्म के वश होय तब खोटी बातको जानके हू न माने। बिन किये न रहै। पुनि ज्यों खर वहां गयो त्योंहीं सिंह ने मार लियो। आगे सिंह स्यार कौं गदहा के ढिग राखि आप नदी न्हैवे गयो। जो लौं वह स्नान ध्यान पूजा तर्पण करि आवै तौ लौं स्यार चंडार ने क्षुधा के मारे गदहा के कान नैन श्री हियो लै भक्षण कियो। सिंह आनि देखै तो वाको हृदय श्री नेत्र कछू नाहिं। तब उनि स्यार सों कह्यो अरे यह तें कहा।

कियो जो श्रांख कान श्रो हियो याको काढ़ि खाय लियो। तो
श्री झूठो मैं कैसें खाऊं। स्यार कही स्वामी ऐसो जिन कहो।
याजीव के कान श्रांख हियो होत नाहीं। क्योंकि कान होते तो
तिहारो नाम इन या बनमें सुन्यों होतो। श्ररु नेत्र होते तो तु-
म्हें देखि फेर न आवतो। श्रो हियो होतो तो तिहारे करकी
चोट खाय फेर न भूल जातो यह बात स्यार तें मुनि सिंहने गद-
हा बोट खायो। इतनी कहि बानर बोल्यो अरे जलचर हौं ल-
म्ब करण नाहिं जु तेरे साथ अब आऊं। क्योंकि तें प्रथम।
हीं मोसों कपट कियो। बहुरि युधिष्ठिर कुम्हार की भाँति।
सब भेद कहि दियो। मगर कही यह कैसी कथा है। तहां बा-
बर कहतु है॥

एक समय कहू देशमें अति बर्षा भई। तातें काल पर्यो।
तब वहांके तिनेक रजपूत कहूं चाकरी कों चले। तिनके साथ
युधिष्ठिर नाम एक कुम्हार हू हे लियो। वाके माथे में घाव
हो। कितक दिनमें काहू और देश मांहिं जाय एक राजा के
यहां चाकर भये। कुम्हार के लिलार कौ घाव देखि राजा ने
अपने जीमें बिचार्यो कि यह कोऊ बड़ो शूरहै जु याने स-
म्मुख चोट खाई है। यातें राजा वाहि वाके सब साथियन
तें अधिक माने। एक दिन वह नरपति आपने सब सुभटन
सहित सभामें बैठ्यो हो कि वाने यासों पूछ्यो अहो रावत
यह घाव तुम मस्तक पर कौन सी लड़ाई में खायो। इन क-
ही महाराज मेरो नाम युधिष्ठिर है। यातें हौं झूठ नाहीं बो-
लतु। मैं रजपूत नाहीं। जात को कुम्हार हौं। अरु यह घाव
मैंने रणमें नाहीं खायो। याको भेद कहतु हौं। सुनों कि मेरे
पिताके व्याह को उछाह हो। तहां मैंहू आपनी मण्डलीमें

भांग पी घर में दीख्यो। सु उरवट पर्‌यो। एक ठीकरा मूड़ में पै-ठ्यो। ताको यह चिन्ह है। इतनी बात सुनतही राजा रिस करि बोल्यो इन मोहिं धोखो दियो अरु याके लिये मैंने इन राज पूतन को अपमान कियो। अब याहि धकाय काढ़ौं। कु-म्हार कही महाराज ऐसें जिन कीजे। बरण युद्ध में मेरी परी-क्षा लीजे। राजा बोल्यो अरे सब गुण संयुक्त कुल में तू जन-म्यो नाहिं। ऐसें स्यार शिशु कौं सिंहनी ने हू कह्यो हो। कु-म्हार कही यह कैसी कथा है। तब राजा कहनि लाग्यो॥

काहू बन में एक सिंह औ सिंहनी रहैं। सु सिंहनी ने दोइ शि-शु जाये। तब वाको पति वाके लिये अनेक अनेक भांति के। जीव औ जन्तु मारि ल्यावै। एक दिन वह सारो दिवश फिर्‌यो। पै वाके हाथ कोऊ जन्तु न आयो। जब सूर्य अस्त भयो त-ब निराश हो घर कौं आवन लाग्यो। तहां गैल में एक स्यार। को सुत तुरत को जायो इन पायो। ताहि यत्न सों मुंह में धारि सिंहनी के ढिग जीवतु ल्यायो। वाहि देखि बाघनी बोली हे नाथ कहा आज और जन्तु न पायो। सिंह कही भद्रे सिगरो दिन भटक्यो पर कछु हाथ न आयो। अबहीं ड-गर में आवतु यह हाथ पर्‌यो। सु याहि बालक जानि मैं ना-हिं मार्‌यो। तेरे पथ्य के लिये ल्यायो हौं। सिंहनी बोली स्वा-मी यातें मेरो पेटहू न भरैगो। वृथा याहि क्यों मारौं। क-ह्यो हे बाला बाल ब्राह्मण ये तीनों अवध्य हैं। बिशेष आ-पने घर आवे ताहि तो कबहू न मारिये। बाघ बोल्यो जो तें ऐसी बिचारी तो यह कैसें जियैगो। उन कही याहि मैं आपनो दूध प्याय जिवाऊंगी। जैसें मेरे ये दोइ हैं तैसें तीसरो यह हू रहै। ऐसें कहि वह वाहि दूध प्यावन लागी। आगो

जदवे बड़े भये तो वे विन जाने इकट्ठे रहैं। अरु स्यार शिशु तिन में बड़ो भाई कहावे। एक दिन वा वनमें हाथी आयो। तब सिंह शिशु बोल्यो अहो यह गज आपने कुल को बैरी है। चलो याहि खेद मारैं। यह सुनि स्यार शिशु इतनों कहि भज्यो। कि भाई याके सन्मुख कहां जात हो। वाके साथ सिंह शिशु हू भजे अरु वे तीनों घर आये। कह्यो है कि युद्ध समय आगो शूर होय तो वाहि देखि औरन कों हू शूरता होय। अरु एक कायर संग्राम छोड़ भजे तो वाके संग सब भजैं। आगे सिंह शिशुनि आय माता सों कही कि मा यह हाथी देखि परायो अरु याके पाछे हम हूं। आपनी निन्दा सुनि स्यार को शिशु उनके मारिवे कों उठ्यो। तब सिंहनी बोली ये तो तें छोटे हैं। तू इनतें बड़ो है। यातें तोहि इनपै क्रोध करनो उचित नाहिं। उन कही ये मेरी निन्दा करतु हैं तो कहा हों इनतें कुल बरण पराक्रम में घाट हौं के हाथी नाहीं। सारजानतु। यह सुनि सिंहनी ने वाये दया करि वाहि एकान्त लै जाय कह्यो कि पूत तू सुन्दर औ बलवान है पर वा कुल में जनम्यो नाहिं जु हाथी मारै। अरे तू तो स्यार है। मैं तोहि दया करि आपनो दूध प्याय जिवायो है। सुये तोहि जानतु नाहिं। अरु अब इनतें तोतें विरुद्ध भयो। ये तोहि विन मारे न रहैंगे। यातें हों कहति हौं कि तू अब आपने सजातियन में जाय रह। ना तो जीवतु न बचैगो। इतनों सुनि वह ह्यांतें उठि पूछ दबाय धाय आपने सजातीन में जाय मिल्यो। यह प्रसंग कहि राजा ने कुम्हार सों कह्यो कि सुनि। तू वा कुल में उपज्यो नाहिं कि लोह की आंच झेलै। पुनि सभा तें उठायदियो। ना तें हौं कहतु हौं।

रे मूरख जलचर तें हूं युधिष्ठिर की भाँति कपट कहि दियो सु। यह कहा कियो। नीति तो यों है कि जहां सांच बोले तें कार्य बिगरै औ झूँठतें सुधरै तहां सांच सों झूँठही भलो। कह्योहै जु मिथ्या कहे काहू को जीव बचै औ आपनों महात्म रहै। तो राखिये। है ठौर झूँठ बोलिबे को दोष नाहिं। अरु बिन बोले कार्य सरै तो कबहू न बोलिये। औ हर काम में चपलता करि बिन स्वारथ न बोलि उठिये। देखो बगुला सुनि धर्म साधे निज कार्य करै औ चपल होय सुआ बोलि बन्धमें परै। इतनों कहि पुनि बानर बोल्यो अरे मूढ तें स्त्री के संतोष के लये ऐसो अधर्म बिचार्यो कि मोहिं मारन। कों उपस्थित भयो। कह्योहै नारी को मनभायो सहज में होय तो करिये अरु वाके कहे मूरख होय निज धर्म न बिसारिये। क्योंकि स्त्री जन आप स्वार्थी होति है। बिन की प्रतीत कबहू न कीजे कीजे तो जैसें एक ब्राह्मण प्रतीतिकरि पछतायो तैसें पछतावनों होय। मगर पूछो यह कैसी कथा है। तहां बानर कहनि लाग्यो॥

काहू गाँव में एक ब्राह्मण रहै। ताकी नारी अति सुन्दर चन्द्रमुखी चम्पकवरणी मृगनैनी पिकबैनी गज गौनी। कट केहरी अरु जाके कर पद कोमल कमल से नाहंगी सम कुच बार श्याम घटा की समान दांत हीरा कीसी पांति ओठ बिम्बाफल जान भौंह धनुषमान। पुनि कीर कीसी। नाक कपोत को सो कंठ औ कर्तार ने वाहि ऐसी सँवारीकि मानों सांचे की सी ढारी। वाके रूप की ईर्षा सब कुटुम्ब की नारी रखायो करैं। जब यह चरित्र वाके पति ने देख्यो तब वह घर की माया छोड़ वाके आधीन होय वाहि साथलै।

परदेश कौं चल्यौ। कितेक दूर जाय वाकी स्त्री ने कह्यौ हे स्वामी मोहिं प्यास लागी है। उन कही प्रिये तू ह्यां बैठि हौं जल लेवाजि ल्याऊं। यह कहि वह तौ पानी लेवाधन गयौ औ ह्यां प्यासके मारे याको प्राण निकरि रह्यौ। वह आय याहि मरो देखि अति बिलाप करनि लाग्यौ। तद आकाश बाणी भई कि अरे याकी तौ आयु पूरी भई। पर जौ तेरो यासों अधिक स्नेह है तौ तू आपनी आयुर्बल याहि दे। ऐसें सुनि। विप्रने हाथ पाँय धोय आचमन करि पवित्र होय आधी वैस वाहि दई। वह झट उठि बैठी भई। जल पीय दोऊ आगे चले। औ काहू गाँव के निकट जाय एक माली की बारी मांहिं उतरे। जद ब्राह्मण गाँव में सीधौ लैन गयौ तद ब्राह्मणी बारी में फिरन लागी। तहां देखे तौ एक पंगु कुआँ। पै बैठ्यौ गाय गाय रहट कौ बर्धं हांकि रह्यौ है। वाको। गान सुनि ब्राह्मणी रीझि ताके निकट जाय कहनि लागी अरे मेरो मन तोसों अटक्यौ। मेरो मनोर्थ पूरो कर। उन कही अरी घर गई हौं पंगु। तू मोहिं कहा करेगी। इन कही दई मारे निगोड़े तोही या बातसों कहा काम। जो मैं कहौं सो तू कर। अरु जो तू मेरो कह्यौ न करैगी तौ मैं तोहि हत्या दूंगी यह सुनि वाने वाको मनोर्थ पूरो कियो। तब ब्राह्मणी प्रसन्न होय बोली आज तें यह जीव तेरो दियो है। आगे सीधौ लै विप्र आयो। अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजन कौ बैठे तब ब्राह्मणीने पंगुहू कौं जिमायो। पुनि जद व्हांतें चलिवे कौं भये तद ब्राह्मणी ने आपने पति सों कह्यौ कि हे स्वामी जा बेर तू मोहिं छाड़ि सीधौ लैन नगर में जानु है वा समय हौं अकेली रहनि हौं। यातें यह लूलो माली कौ।

देहलुआ है औ आछो गावनु है याहि संग लीजै तौ मेरे निकट रह्यो करैगो। उन कही प्रिये एक तौ गैल में आपनी देह निवाहनो कठिन है दूजे या पंगु कौं कैसें ले चलैंगे। इन कही स्वामी एक पिटारो आनि देउ। तामें राखि याहि हौं निज मूड़ पर आछी भांति ले चलि हौं। तुम या बात की चिन्ता जिन करो। यह सुनि उन पिटारो आनि दियो। इन वाहि वामें राखि शिर धर लियो। आगे एक वन में जाय ब्राह्मणी ने निज मन मांहिं विचार्यो कि यह ब्राह्मण जब लौं रहैगो तब लौं हौं या पंगु सो निर्भय होय भोग न कर सकौंगी। ऐसें बिचारि समय पाय विप्र कौं कूप में डारि पंगु को पिटारो शिर लै। ज्यों एक नगर में बढ़ी त्यों राजा के सेवक याहि पकरि नगर पति पै ले गये। उन पिटारो खुलवाय पंगु कौं देखि कह्यो यह को है। इन कह्यो महाराज यह मेरो पति है। याके शत्रुन के भयतें आपने मूड़ पै लिये डोलति हौं। अब तिहारी शरण आनि लई है। जैसो जानो तैसो करो। राजा कही तू मेरे नगर में रहि। हौं तेरी आजीविका करे देतु हौं। तेरो शत्रु आवै तौ मोसों कहियो। इतनौं कहि राजाने गांव २ में वाकी चुंगी कर दई। वह वाहि ले वहां सुख सों रहन लागी। आगे दई के योग कोऊ बनजारो वा बन में आय निकस्यो। ताने वा ब्राह्मण कौं कुआँ सों काढ़्यो। कह्यो है जु आयु न पूरी होय तौ बाघ बैरी आनि जलहू के मुख तें बचै। पुनि वह ब्राह्मण वाही नगर में आयो जहां ब्राह्मणी ही। जब ब्राह्मणी ने आपनौं पति देख्यो तब उन राजा सों जाय कह्यो महाराज मेरे स्वामी को रिपु आयो। यह सुनि राजा ने वाहि पकरि मँगायो अरु कह्यो रे विप्र तू याहि कौं दुख देतु है

औ कहा मांगतु है। ऐसी बात राजा के मुखतें सुनि ब्राह्मण ने निज मनमें बिचार्यो कि जो इनहीं मेरी ममता त्यागी तौ मोकौं हू याकी प्रीति तजनी उचित है। क्यौंकि मन टूटो फेर। न मिले जौं फटिक कौ पात्र। ऐसें बिचार ब्राह्मण ने राजा सों कही कि पृथ्वीनाथ हौं यातें न कछु मांगौं न कहौं। पर मेरी या पै आधी आयु है सो दिवाय देव। राजा ब्राह्मण की बात झूंठ समझ चुप है रह्यो। अरु ब्राह्मणी आगलो भेद न जान बोल उठी कि धर्मावतार जा भांति यह कहै ता रीति सों या की आयु बल देउं। बहुरि विप्र बोल्यो हाथ पांय धोय आचमन करि पवित्र होय ऐसें कह कि मैं तेरी आयु लई ही सो पाछी दई। उन वैसेंही कह्यो। औ कहतही वाको प्राण घटतें निकरि गयो। राजा सभा सहित देखि भयचक रह्यो। पुनि वाको भेद पूंछ्यो। तब ब्राह्मण ने सब भेद कह्यो। या बातके सुनतही राजा ने ब्राह्मण कौं विदा कियो अरु आप नियम लियो कि नारी की बात कबहू सांची न मानिये। ताते हौं कहत हौं अरे मूरख जलचर स्त्री की बात को विश्वास कबहू न करिये। कह्यो है जो नारी के वश परे सो कहा न करै। जैसें राजा भोज औ पांडे वर रुचि कियो। मगर पूंछो यह कैसी कथा है। तहां बानर कहतु है॥

एक समय रात्र कौं राजा भोज की रानी राजा सों रिसानी। तब उन अनेक उपाय मनायवे कौं किये पर वाने याकी बात क्यौंहू न मानी औ कह्यो जो तुम घोड़ा बनि मोहिं चढाय। आंगन में ले फिरो अरु हौं एड़ करि चाबुक चटकाऊं तौ तिहारो गायो गाऊं। उन सुनि वैसेंही करि आपनों मनोर्थ साध्यो। औ वाही रात्रि पांड़े की पाणिडयानि हू रूठी। तब

पांडे ने कही तू काहू भाँति हू हठ छोंड़े। उन कही तू मेरो अपराधी है। यातें तोहि भद्र करों तौ मेरो क्रोध मिटै। कह्यो है जो अति चतुर होय सो रस रीति समझ प्रीति के वशपरै। आवो पांड़े ने दाढ़ी मूछ औ मूड़ मुड़वायो औ वाको गायो बायो। भोर भये जब राजा सभा में आय बैठ्यो तब पांड़े ने जाय अशीश दई। उन याहि देखि हँस के कही अहो बिप्र बिन पर्व भद्र कहां भये। इन विद्या के बल राज की बात बिचारि कह्यो। महाराज जहां मनुष्य घोड़ा की भाँति हीं से तहां बिन पर्वहू मुण्डन होय। यह सुनि राजा मौन गहि रह्यो। तातें हौं कहतु हौं अरे दुष्ट जलचर जैसें राजा औ पांड़े ने कियो तैसें तू हू कामान्ध होय स्त्री के बश भयो वे दोऊ ऐसें बनराय रहे हे कि वाही समय एक जलचर ने आय मगर सों कही भाई तेरी स्त्री मारे क्रोध के मरवे कौं ह्वै रही है अरु घर में तेरे एक और मगर आय रह्यो है। यह सुनि मगर दुख पाय बोल्यो हाय मैं अभागो यह कहा कियो जु ऐसी दुष्ट पत्नी के कहे आपनों धर्म कर्म खोय दियो। पुनि उनि बानर सों कह्यो कि मित्र तू मेरो अपराध क्षमा कर क्यों कि मैं अब या दुखतें प्राण छाड़ि हौं। बानर बोल्यो। अरे मूरख तेरे घर में बिगार होनों तौ युक्त हो हो। पर तोहि ऐसी दुष्ट स्त्री के गये उछाह करनों योग्य है। क्यों कि कह्यो है कलह कारनी नारी औ विष विपत की जर है। यातें जो आपनी आत्मा को सुख चाहै सो वासों विरक्त रहे तो ही भलो। वाके मन माने सो कहै औ करै। नारीन के चरित्र भाँति भाँति के हैं। ते कहां लौ कहौं। पर तू एती ही बात मेंजानियो कि जे चतुर औ सज्ञान हैं ते तिनके आधीन।

कबहू न होंयगो। मगर कही अहो मोतें है चूक भई। ताही तें इ
त मित्राई गई औ उत स्त्री जैसें एक नारी को जार भयो न भ-
र्त्तार। बानर कही यह कैसी कथा है। तहां मगर कहतुहै॥

एक किसानकी स्त्री तरुणी औ वह बूढ़ो फूस। तातें वा-
की मनोरथ पूजि न सकै। यह नित प्रति परपुरुष देख्यो करै।
औ कामके मारे याको मन धाममें न लागै। उदास रहै। ए-
क दिन कोऊ पराये वित्त चित को चोर याहि आनि मिल्यो।
वासों इन कही हे शुभ लक्षण मेरो पति बूढ़ो ह्वै रह्यो है।
जो तू मेरो जार होय तो मैं घर को द्रव्य ले तेरे संग चलौं। उन
कही तैं नीकी विचारी। भलो मैं होंऊगो। इन कही तो तू।
सकारे आइयो। हौं तेरे साथ चलौंगी। आधी भोर भये वह
आयो औ वाहि वित्त समेत ले नगर के बाहर कौं धायो। को-
स एक जाय मनमें बिचार करनि लाग्यो कि यह एक तो यौ-
वन वती दूजे याहि पर पुरुष की इच्छा है। कदाचित जैसें
यह मोहिं मिली तैसें काहू और सों मिल जाय। तो फेर मैं का
हा करौंगो। यह बिचारि एक नदी के तीर जाय बोल्यो भद्रे प्र-
थम नदी पार वित्त वस्त्र धरि आऊं। पाछे पीठ पर चढ़ाय ते-
हि ले जाऊंगो। वानें या बात के सुनतही बसन आभूषण।
की गाठरी दई। इन ले पार होय आपनी वाट लई सो लई।
अभिचारिणी नदी तीर पछताय नीची वार किये बैठ रही ही
कि एक स्यारनी मांस को लोथरा लिये तहां आई। अरुण
क माछरी हू पानी तें निकरि रेत पर बैठी ही। वाहि देखि।
स्यारनी लोथरा धरि माछरी पकरवे कौं दौरी। इत मांस ही
न ले गई औ उत माछरी याहि देखि जलमें कूदी। जब।
स्यारनी निराश होय चील की ओर तकनि लागी तब।

(अभिचारिणी)

व्यभिचारिणी बोली कि दोऊ गँवाय अब कहा देखति है। उन कही एक तो हौं चतुर अरु मोहू तें दूनी तू जु तेरो सर्वस्व गयो सो न जार भयो न भर्त्तार। इतनी कथा कहि मगर बोल्यो भाई मेरी हू वही दशा है। पर अब कौन उपाय करौं। नीति में तो कार्य्य साधवे कौं चार उपाय कहे हैं साम दाम दण्ड भेद। अब इन में तें मोहिं जो करनों योग होय सो कहो। बानर कही अरे मूढ़ कौं उपदेश कबहू न दीजे। बहुरि मगर बोल्यो मित्र हौं शोक समुद्र में बूड़तु हौं। तू मोहिं काढ़। तोहि यश धर्म होय गो। कह्यो है जो मूरख कार्य बिगारे तौहू चतुर सुधार लेय। मैं मूढ़ तू चतुर। तातें जा में मेरो भलो होय सो युक्ति बताय। वाकी दीनता देखि बनचर बोल्यो भाई तू आपने घर जा औ सजाती सों युद्ध कर। कौंकि जो जीति है तो घर पाय है औ मरिहै तो स्वर्ग। कह्यो है उत्तम जन सों सामउपाय कीजे। मनुहार करि कार्य लीजे। अरु अति बलवान कौं धन दै दाम उपाय करि आपनो कार्य संवारिये। पुनि दुष्टतें दंड उपाय के अपनपो राखिये। बहुरि समान सों भेदउपाय करि वाहि छल बल करि मारि नाखिये जैसें एक स्यार ने कियो। मगर कही यह कैसी कथा है। पुनि बानर कहतु है॥

काहू स्यार ने बन में एक मर्यो हाथी पायो। पर वाको कठिन चाम यातें काढ्यो न गयो। त्योंही एक सिंह आयो। यह देखतेही वाके सन्मुख उठि धायो औ हाथ जोर बोल्यो स्वामी या राज कौं आप अंगीकार कीजे। उन कही हौं काहू को मार्यो खातु नाहीं। मेरो यह धर्म है। यातें यह मैं तोही कौं दियो। इतनी कहि वह चल्यो गयो। पुनि एक

तेंदुआ आयो। वाहि देखि स्यार ने जीमें विचार्यो कि यह दुष्ट है। याकौं भेद उपाय करि डराइये। ऐसें मनमें ठानिय ह्वाके सन्मुख जाय गुमान सों हित्रू होय बोल्यौ अहो यहां कहां आवतु हौ। यह गज सिंह मारि मोहिं याकी रखवारी राखि के वांगा न्हाय गयो है। ज्योंही बघेला ने याकी बात सुनी अरु वाके चरणाचिन्ह देखे त्योंही पीठ दई। इतेकमें एक चीता आयो। ताहि निहारि जम्बुक ने विचार्यो जु यासों हाथी को चाम फड़वाय लीजे तो भलो। ऐसें बिचारि इन चीता सों कह्यौ अहो भगिनी सुत मेरे तोहिं अनेक दिन पाछे देख्यो। जो भूख्यो है तो यह गज सिंह मारि नदी न्हैवे कौं गयो है। जौलौ वह आवे तौलौं कलेवा करि चल्यौ जा। उन कही मामा हौं आपनौं मांस खैवो तो लाख सिंह को मार्यो गज कैसें खाऊं। स्यार बोल्यौ अरे हौं याको रखवारो हौं औ तेरे आड़े ठाढ़ो रहतु हौं। तू खा। जब सिंह आवे गो मैं पुकारौं गो। तब तू भाग जैयो। उन याकी बात मानि ज्योंहीं वाकी खाल फारि। कछु मांस मुख में लियो त्योंही स्यार पुकार्यो अरे भाग सिंह आयो। यह सुनत प्रमाण वह उठि दौर्यो। या भांति स्यार ने वासों दाम उपाय करि निज कार्य साध्यो। आगो सजातीन सों दाम उपाय करि युद्ध कियो। अरु वह हाथी काहू कौं न खान दियो। तातें हौं कहतु हौं कि साम दाम दण्ड भेद चार उपाय कहे हैं। पर जैसो जहां बूझिये तैसो तहां करिये। बहुरि मगर कही हौं विदेश जैहौं। बन्दर बोल्यो॥

अरे एक चित्रांगद नाम कूकर परदेश में जाय काहू

ग्रहस्थ के घर पैठ्यो। श्री आछो आछो खाय जब बाहर आयो तब वा गाँव के श्वाननि वाहि घेर अति मार दई पुनि इन दुख पाय निज नगर की बाट लई अरु घर आयो। तद याके कुटुम्ब ने पूँछ्यो कि बिदेश जैवे की अवस्था कहो जु वहां कैसे रहे। इन कही परदेश में और तो सब भलो पर सजाती देख नाहीं सकतु। जो कोऊ मोसों पूँछे तो मेरे जाने घरतें निकसनों उचित कोंहू नाहीं। अरे मगर तातें हौं कहतु हौं कि तेरी दुष्ट पत्नी तो बाई पे तू अबही सकाम है। यातें नयो ब्याह कर। कह्यो है कुआँ को नीर बड़ की छांह तुरत बिलोयो घी खीर को भोजन बाल स्त्रीये सब प्राणा कों पोषतु हैं। अरु अवस्था प्रमाण कार्य कीजे तो दोष नाहीं। बानर तें यह उपदेश सुनि मगर निज घर गयो श्री ऊन नयो बिवाह कियो घर माऊयो सब दुख छोंड्यो आनन्द सों रहनि लाग्यो। इतनी कथा सम्पूर्ण करि विष्णु शर्म्मा ने राज पुत्रनि कों आशीश दई कि तिहारी जय होय। श्री शत्रुन की हार। यह सुनि राजपुत्रन हू बस्त्र आभूषण द्रव्य मंगाय भेंट धरि पाँय लागा गुरू कों बिदा कियो अरु आप नीति मार्ग सों निज राज काज करनि लागो॥

राजनीतिः समाप्ता॥

॥ इति ॥

कठिन शब्दों का कोष

ना = नाम, वि० नाम = विशेषनाम, पु० = पुल्लिंग, स्त्री० = स्त्रीलिंग, वि० = विशेषण, अ० = अव्यय, स० नाम० = सर्वनाम, गु० वा० = गुण वाचक॥

अ

अवदीच, वि० ना० उपनाम, पु०
अजर, वि० जो बूढ़ा न होय, पु०
अमर, वि० जो मरे नहीं, पु०
अयोग्य, वि० जो लायक न होय
अनित्य, वि० जो हमेशः न रहे
अनमिल, गु० वा० जो मिला न होय
अशक्ति, गु० वा० जिसमें बल न होय
अजानबाहु, गु० वा० जिनकी भुजा गांठ तक लावे
अन्तर, वि० फ़रक़ भेद
अप्रिय, गु० वा० जो प्यारा न होय
असन्तोषी, गु० वा० जिस्को सबर न होय
असाहसी, गु० वा० जिस्में साहस न होय
अनपावनी, गु० वा० स्त्री० जो किसी ने न पाई होय
अधबर, वि० अधूरा, बीचों बीच
असाधु, गु० वा० पु० जो अच्छा न होय
अवज्ञा, गु० वा० अनादर
अहार, वि० ना० पु० भोजन
अकुलीन, गु० वा० जो कुल में कम होय
असमय, गु० वा० वक़्त खराब
अल्प, वि० थोड़ा
अहंकार, गु० वा० घमंड
अपमान गु० वा० बेइज्ज़त निरादर
अनत, गु० वा० दूसरी जगह
अस्त्र, वि० ना० पु० हथियार
अभिलाषा, वि० ना० स्त्री० इच्छा मनसा
असावधान, गु० व० बेहोश बेखबर—
अखण्ड, गु० वा० जिस्के टुकड़े न होंय-
अथ, अ० इस्के पीछे
अनागत, गु० वा० नहीं आया
असमर्थ, गु० वा० बे ज़ोर, नाताक़त
अनभई, वि० जो कभी नहीं हुई होय

अनर्थ, गु० वा० बुरा, बे वाजिब
अभयदान, क्रि० वि० डर छुड़ा देना
अधीर, गु० वा० मूर्ख जिसमें धीर न होय
अभागी, गु० वा० कम्बख़्त, बुरे नसीब के आदमी को क०
अम्बरीष, वि० ना० पु० राजा अम्बरीष, का नाम है
अधम, गु० वा० नीच
अस्थिर, गु० वा० ठहरा हुआ
अश्वमेध, वि० नाम पु० यज्ञका नाम है जिसमें घोड़े का बलिदान होय
अतिथिधर्म, गु० वा० मिहमानी
अहो, अ० विस्मयादि बोधक अ०
अवध्य, गु० वा० जो मारा न जाय
अगारी, गु० वा० पहिला
अटपटाना, क्रि० भूला जाना कठिनता
अदृष्टनर, गु० वा० छिपा हुआ मनुष्य
अनअवसर, वि० बे मौक़ा
अनभावना, गु० वा० उरबतानों
अनब्येरी, गु० वा० दूसरे घर का ग़ैर सदा
अनहित, गु० वा० जिसके मित्र न होय अर्थात् बे मुहब्बत
अप्रबीन, गु० वा० जो चतुर न होय

अभाग्य, गु० वा० बुरा नसीब
अविवेकता, वि० अज्ञानता
असन्तान, जिसके औलाद न होय
अप्रगट, जो ज़ाहिर न होय

आ

आसरो, क्रि० वि० सहारा
आपदा, आपत्य ना० स्त्री० दुःख
आगम, ना० पु० क़ानून शास्त्र, क़ायदा
आश्रम, ना० पु० स्थान
आदित्य, ना० पु० सूर्य्य का नाम
आलिंगन, क्रि० मिलना
आत्मद्रोही, वि० जो अपना बुरा चाहे
आभरण, ना० गहना ज़ेवर
आभरणा, क्रि० ढकना
आगता, स्वागता, गु० वा० आये हुये का आदर करना
आलस्य, गु० वा० अलसाजाना सुस्ती
आहट, ना० शब्द होना
आचार्य्य, ना० महंत, कर्म कराने वाला
आकाशबाणी, ना० जो आसमान से शब्द निकले
आत्मार्पिष, प्राण रखने के निमित्त सर्वस्व देना
आपस्वार्थी, गु० वा० मतलबी, खुदग़रज़ी

आधार, क्रि० वि० सहारा
आगलो, गु० वा० आगेका, पहिलेका
दू०
दूनेक, सर्व्व० नाम दूतना
इंद्रियन, ना० वा० इन्द्रियां
इहिं, स० ना० यह
ई
ईंदुर, ना० वा० चूहा
उ
उजागर, ना० पु० प्रकाशकरना
उच्चपद, गु० वा० ऊंचादर्जा
उपाधि, ना० झगड़ा
उदयाचल, वि० ना० पु० एकपर्वत का नाम
उर, वि० ना० पु० हृदय
उपकारार्थ, गु० वा० बिगने काम के लिये
उलट, क्रि० लौटना, पलटना,
उपायक, गु० वा० तदबीर करने वाला
उन्मत्त, गु० वा० मतवाला
उपस्थित, गु० वा० मौजूद
उपन्यास, क्रि० वा० रखना
उपग्रह, क्रि० वा० लेना
उच्छिन्न, गु० वा० कटा
उत, अ० उधर
उतावलो, गु० वा० जल्दी
उत्कंठित, क्रि० वा० जिसको चाह होय
उत्पन्नमति, गु० वा० बुद्धिवान
उत्साह, ना० वा० पु० आनन्द
उदोत, क्रि० वा० उदय होना
उपहार, ना० वा० भेट
उलंघनो, क्रि० वा० लांघना
ऋ
ऋण, ना० वा० उधार
ए
एकान्त, ना० अकेला
एकमति, गु० वा० एक सलाह
एकलो, भा० वा० अकेला
ओ
ओछी, गु० कम
औ
औगुण, गु० वा० बुराई, दोष
औषध, ना० वा० दवाई
क
कृपानिधान, गु० वा० मेहरवान
कवि, ना० वा० शायर
कपार, ना० वा० माथा
कान्चन, ना० वा० सोना
कुपात्र, गु० वा० बुरा
कीट, ना० वा० कीड़ा
काव्य, भा० वा० शायरी
कलह, ना० वा० झगड़ा
कपोत, ना० वा० कबूतर
कौतुक, ना० वा० खेल
कंकण, ना० वा० हाथका गहना

कंटक, ना० वा० पु० काँटा
कुशल, गु० वा० अच्छा
काष्ठा, ना० वा० नियम, दिशा
कनक, ना० वा० सोना, सुवर्ण
कथ, क्रि० वा० कहकर
कुदिष्ट, गु० वा० बुरी नज़र
कामातुर, सा० वा० कामी
कामान्ध, सा० ना० काममें अन्धा हो रहाहो
क्रीड़ा, ना० वा० खेल
कलंक, ना० वा० ऐब
कदाचित्, अ० कभी अगर
कंदर्पकेतु, वि० ना० मनुष्य का नाम है
कटु, गु० वा० कड़वा
कपाल, ना० वा० माथा
कुबेला, गु० वा० बुरा समय
कूकड़ो, ना० वा० कुत्ता
कौशांबी, ना० वा० नगर का नाम है

ख

खटकति, क्रि० वा० खटकना
खोंड़र, ना० वा० बिल को कहते हैं
खनानों, क्रि० वा० खोदना
खवानों, ना० वा० खिलाना

ग

गजमुख, ना० वा० देवका नाम है
गणाईश, वि० ना० देव का नाम है
ग्रंथ, ना० वा० पुस्तकों को कहते हैं
गीलकुस्त, ना० वा० उपनाम है
गुणनिधान, गु० वा० गुणकीजगह
गुप्त, वि० छिपा, पोशीदह
गृहकूप, वि० ना० घरका कुआ
गूढ़, गु० वा० कठिन
गांठ, ना० वा० गिरह
गँवार, ना० वा० जो गांवमें रहे निर्बुद्धि होय
गृध्रकूट, ना० वा० पहाड़ का नाम है
गम्भीर, गु० वा० गहरा
गवंद, ना० वा० गैंद
गृहस्थाश्रम, ना० वा० गृहस्थी
गन्धमादन, ना० वा० पर्वत का नाम है
गम्य, गु० वा० जानेके योग्य
गर्दभ, ना० वा० गधा
गार, ना० वा० गड़हा
गारुड़, ना० वा० जो सांपोंका मंत्र जाने
गुननों, क्रि० वि० बिचार करना
गुरभाई, गु० वा० जो अपने गुरू का लड़का वा शिष्य होय
गुह्य, गु० वा० छिपा हुआ
गृहच्छिद्र, गु० वा० घरका भेद
गौतमारण्य, गौतम ऋषि का बन

घ

घात, ना० वा० मौक़ा मारना
घृत, ना० वा० घी
घटनों, क्रि० वा० कमहोना
घालनों, क्रि० वा० मिलाना
घुमड़नों, क्रि० वा० फिर आना
घुसायन, क्रि० वा० घुसना
घोंसुआ, ना० वा० घोंसला

च

चतुर, वि० होशियार
चिन्ता, ना० वा० फ़िक्र
चित्रग्रीव, ना० वा० एक कबूतर का नाम है
चिचायकरि, क्रि० वि० चींचीं कर
चेष्टा, ना० वा० सूरत नज़र
चिरंजीवि, वि० आशीर्व्वाद हमेशः रहे
चान्द्रायन, ना० वा० एक महीने का व्रत
चन्द्र भागा, ना० वा० नाम है नदी का
चम्पावरणी, गु० वा० चम्पा का सा बदन
चपलाई, गु० वा० तेज़ी
चाणक, ना० वा० ग्रंथ का नाम है
चिचानों, ना० वा० चींचीं करना
चित्रांगद, ना० वा० गंधर्व का नाम है कुरु का नाम
चूड़ाकरण, ना० वा० मुण्डन, नाम
चारुदन्त, गु० वा० सुन्दर दाँत

छ

छाँड़े, क्रि० वा० छोड़ना
छोनानि, ना० वा० बच्चे
छलछिद्र, ना० वा० कपट
छिन्न, गु० वा० कटा
छेगए, गु० वा० छेगुना
छाँड़नों, क्रि० वा० छोड़ना
छानों, क्रि० वा० यांचना

ज

जड़, वि० पु० मूरख
जन्म, ना० वा० जनम
योग, ना० वा० फ़क़ीरी
ज्योतिष, ना० वा० एक विद्या का नाम
जलचर, ना० वा० जल का जीव
जाचक, गु० वा० माँगने वाला
जम्बु, ना० वा० गीदड़
जम्बुकेल, ना० वा० एक जानवर का नाम
जलकुण्ड, वि० ना० तालाब

झ

झलना, क्रि० वा० टसहना

ट

टेलर, वि० ना० पु० साहिब का नाम है
टरत नटारे, क्रि० वा० हटाये नहटे
टेरनों, क्रि० वा० बुलाना

टिटोर, क्रि० वा० टटोलना टटोरी का नर

ठ

ठाम, ना० वा० जगह
ठिठको, क्रि० वा० रुकना
ठानि, क्रि० वि० विचार कर

ड

डोकरा, भा० वा० बूढ़ा
डरन्यो, क्रि० वा० डरना
डहडह्यो, गु० वा० हरा भरा

ढ

ढारनों, क्रि० वा० ढालना
ढिंगा, गु० वा० पास

त

तेजस्वी, गु० वा० प्रतापी
तृषावन्त, गु० वा० प्यासा
तृण, ना० वा० तिनका
तद, अ० तब
तरुण, गु० वा० जवान
त्यागत, क्रि० वा० छोड़ना
तुंग, गु० वा० ऊंचा
तरंग, ना० वा० लहर
तुष्ट, गु० वा० संतोषी
तिरस्कार, गु० वा० अनादर
तत्काल, अ० उसीसमय
तपोवन, गु० वा० तप की जगह
तितेक, स० वा० जितने
तिस, स० ना० तिन्हे
तुंगबल, गु० वा० ऊंचाई का बल
तुल्य, ना० वा० बराबर

थ

थांभ, क्रि० वा० रोकना
थमानों क्रि० वा० थमाना, देना

द

दाता, गु० वा० देने वाला
दाहक, गु० जलानेवाला
दयासागर, गु० वा० दया का समुद्र
दिनहारी, गु० वा० देनेवाली
दृढ़, गु० वा० मज़बूत
दरेर, क्रि० वा० दीखे
दुराचारी, गु० वा० बदचलन
दहदल, ना० वा० कीचड़
दुरदिन, गु० वा० मेहवर्षने का दिन
द्रव्यहीन, गु० वा० दरिद्री
दामिनी ना० वा० बिजली
दमक, क्रि० वा० चमकना
दूरदर्शी, गु० वा० दूरन्देश
दिग्विजय, दिशाओं का जीतना
दण्डकारण्य, ना० वा० दंडक वन
दडूकनों,
दपटनों, क्रि० वा० धमकाना
दिनकटी, क्रि० वा० दिनकाटना
दुर्दंत, गु० वा० बड़े दाँत

ध

धीमान, गु० वा० बुद्धिमान
धर्मार्थ, वि० धर्मका काम
धूर्त, गु० वा० मूर्ख, ज़िद्दी

धनाढ्य, गु० वा० धनवान
धनान्ध, गु० वा० धन से अन्धा हो रहा हो, अभिमानी
धरानों, क्रि० वा० धरवाना
धर्मराय, ना० वा० धर्मपन
धवनि, ना० वा० धौंकनी
धूसर, ना० वा० धूम्रवर्ण

न

निपट, गु० वा० बिलकुल
निपुण, गु० वा० प्रवीन, चतुर
नवो नवो, गु० वा० नया नया
नीति मार्ग, गु० वा० नीतिकारस्ता
नान्हें, गु० वा० छोटा
निरखर, स० ना० जल्दी
नख, ना० वा० नोंह
निन्दा, ना० वा० बुराई
निमित्त, ना० वा० बहाना
नितिप्रति, ना० वा० हररोज़ अ०
निदान, अ० आखिर
नरपति, ना० वा० राजा
नासिका, ना० वा० नाक
निश्चिन्त, वि० छुट्टी पायाबेचिन्त
निकर, गु० वा० पास
निंदक, कि० वि० बुराई करने वाला
नगनता, भाव वा० नंगापन
नरनाह, ना० वा० राजा, सर्दार
नरेन्द्र, ना० वा० राजा
नारवनों, क्रि० वा० डाला
नाठा, वि० जिस्के कोई न होय
निकटवर्ती, वि० पास रहनेवाला
निरादर, गु० वा० जिस्का आदर न होय
निर्लोभ, गु० वा० जिस्के लोभ न होय
नीठ, गु० वा० बिगड़ जाना
न्योर, गु० वा० बिनती
नरहटी, ना० वा० गर्दन

प

प्रतापी, गु० वा० तेजस्वी
प्रजापालक, गु० वा० प्रजाका पालने वाला राजा
प्रवीन, गु० वा० चतुर
प्रथम, गु० वा० सं० पहिला
प्रतिष्ठा, ना० वा० इज्ज़त
प्रवेश, क्रि० वा० घुसना, पैठना
पात्र, ना० वा० बर्तन
प्रकार, अ० तरह
प्रीति, ना० वा० सनेह
पुण्यवान, गु० वा० पुण्यकरने वाला
प्रकाशें, जो दीखे
प्रभुता, भा० वा० हुकूमत
पुरुषार्थ, ना० वा० ताक़त.
पेरे, क्रि० वा० आज्ञा करना
पुहुप, ना० वा० फूल

परसे, क्रि० वा० छुओ
परम, वि० ज़ादा
पथिक, ना० वा० मुसाफिर
प्रातस्नान, ना० वा० सवेरे का नहाना
प्रतीति, ना० वा० निश्चय
पाखण्डी, ना० वा० जो पाखंड करे
पथ्य, ना० वा० औषधि, वा पर हेज़
प्रयोग, ना० वा० नियम
पराक्रम, ना० वा० ताक़त
प्रभाकर, ना० वा० सूर्य्य
पालन, क्रि० वि० परवरिश
पवित्र, गु० वा० साफ़ मुतबर्रिक
परमार्थ, ना० वा० जो दूसरे के लिये उपकार
परम्पराय, गु० वा० हमेशः से
प्रमाण, ना० वा० अन्दाज़
प्रार्थना, ना० वा० विनती
परिश्रम, ना० वा० मेहनत
प्रधान, गु० वा० मुख्य, अफ़सर
पगार, ना० वा० महल
प्रतिबिम्ब, ना० वा० परछाहीं
प्राचीन, ना० वा० पुराना
पोरियन, ना० वा० द्वारपर रहने वाले
पत्नी, ना० वा० स्त्री
परक्रिया, समास दूसरे की क्रिया

पुष्ट, गु० वा० मोटा
पंडियान, ना० वा० पण्डित की स्त्री
पद्मकलि, ना० वा०
परन्दूषण, समास दूसरे का ऐब
पुरुषाकार, अपने योधाओं को साथ लेकर मिले इस सन्धि को कहते हैं॥
प्रतीकार, ना० वा० बदला

फ

फड़वानो, फड़वाना
फुरनो, क्रि० वा० सत्य होना
फुल्लोत्पल, यो० वा० फूला हुआ कमल

व

व्रज भाषा, ना० वा० व्रज की बोली
बखानत, क्रि० वा० बयान करना
व्योहार, ना० वा० व्यवहार
बिद्या रूपी, गु० वा० इल्म की सूरत
बृद्ध, ना० वा० बूढ़ा
बिग्रह, ना० वा० लड़ाई
बाँझ, ना० वा० जिस स्त्री के सन्तान नहोय
ब्रत, ना० वा० एक प्रकार का नियम
बित, ना० वा० धन
व्याधि, ना० वा० बीमारी
बृहस्पति, वि० ना० देवताओं के गुरु
बिशेष, गु० वा० अधिक मुख्य
बिलाव, वि० ना० बिल्ली
बिलूरवे, ना० वा० पु० मूसा, चूहा

बिनती, गु० वा० नम्रता आजिज़ी
बटोही, ना० वा० राह चलने वाला
विप्र, ना० वा० जातिका नाम ब्राह्मण
बध्यो, क्रि० वा० मारना
ब्रह्मचर्य्य, गु० वा० वेद का आचरण
बन्धन, ना० बा० क़ैद
बसीठ, ना० वा० मंत्री
बँदरा, ना० वा० बंदरका बहु बचन बहुत बन्दर
बन्धु, गु० वा० भाई
बगर, ना० वा० बग़ल
बढवार, ना० वा० बढ़वार
बिरुद्ध, भा० वा० झगड़ा
बिसन, गु० वा० शोक

भ

भागवान, गु० वा० नसीबवर
भाषत, क्रि० हो० कहता हुआ
भाँति, गु० वा० तरह
भृङ्ग, ना० वा० पक्षी विशेष
भक्षण, क्रि० वा० खाना
भविष्य, का० वा० आनेवाला समय
भार, ना० वा० बोझा
भिक्षा, ना० वा० भीख मांगना
भर्तार, गु० वा० स्वामी
भिक्षुक, गु० वा० भिखारी
भोजनार्थ, सं० का खाने के लिये
भिन्न, गु० वा० जुदा
भेदी, गु० वा० जासूस

म

महाराजाधिराज, गु० वा० शाहंशाह
मारक्किस, गु० वा० उपनाम
मति, ना० वा० समझ
मंद, गु० वा० निर्बुद्धि
महाजान, वि० ना० उपनाम
मर्य्यादा, ना० मर्याद
मर्कत, ना० रत्नका नाम है
मणिमाणाक, ना०
महिमा, ना० माहात्म्य
मृग, ना० वा० हरिण
मनोर्थ, ना० मनकी चाह
मृतक, गु० वा० मुर्दा
मादकता, भा० वा० नशाह की अवस्था
मर्म, ना० भेद
मयूर, ना० मोर
मस्तक, नाम माथा
मिस, ना० वा० बहाना
मर्कट, ना० बन्दर
मर्दन, धातु वा० मलना
मंथरक, गु० क० सुस्त
मदोत्कट, ना० वा० एक सिंह विशेष घमण्डी
मुनीश्वर, ना० वा० मुनिश्रेष्ठ

य

युद्ध, ना० वा० लड़ाई
युक्ति, ना० वा० तदबीर
यथायोग्य, क्रि० वि० जैसा चाहिये
यत्न, ना० वा० इलाज
यद्यपि, अव्यय अगर
यूथपति, ना० वा० झुण्ड का मालिक
यद्भविष्य, गु० वा० होनहार
युधिष्ठिर, ना० वा० राजा का नाम

र

रसमूल, ना० वा० रसकी जड़
रंजन, ना० वा० पु० आनन्द
रमनों, ना० वा० रमना
रीस, ना० वा० ईर्षा
रुकमांगद, वि० ना० सुनहरी भुजा का
रस, ना० वा० पु० जल

ल

लक्षण, ना० वा० चिन्ह
लखवानों, धा० वा० देख पड़ना
लघुपतनक, वि० ना० कौवे का नाम
लहनों, ना० वा० लेना
लाँबा, पु० वा० लम्बा
लाजवन्ती, गु० वा० स्त्री शर्म वाली
लार, ना० वा० यूंक
लावण्यवती, गु० वा० स्वरूप वाली स्त्री
लीलावती, ना० वा० स्त्री खेल करनेवाली
लूम्र, ना० वा० गर्म्म हवा
लौठिया, ना० वा० लकड़ी
ल्यानों, ना० वा० लाना
ल्यावनों, ना० वा० लाना

व

व्यासमुनि, ना० वा० नामहै मुनिका
विष्णुशर्म्मा, ना० वा० नामहै मनुष्यका
विश्राम, क्रि० वा० बैठना, सुस्ताना
विप्र, ना० वा० ब्राह्मण
विश्वास, ना० वा० भरोसा
वधिक, क्रि० वा० शिकार मारने वाला
वर्त्तमान, क्रि० वा० मौजूद
विसारदे, वि० क्रि० भुलादेना
वत्सल, गु० वा० प्यारा
व्याकुल, भा० वा० घबराहट
व्याभिचारी, ना० वा० बुराकाम करनेवाला
विलम्ब, गु० वा० देरी
वृथा, गु० वा० बे फायदे
वियोग, ना० वा० क्रि० वि० अलग होना
वररुचि, वि० ना० एकपंडितका नाम

वर्जित, क्रि० वा० मनेकरना
विरुद्ध, ना० वा० बैर
वृद्धापन, भा० वा० बुढ़ापा
विषाद, ना० वा० दुख

श

शम्भूसुत, ना० वा० महादेव के लड़के
शुभचिन्तक, गु० वा० अच्छा चीतने वाला
शृंगार, ना० वा० शिंगार
श्रीवान्, गु० वा० लक्ष्मीवान् धनी
शूरता, भा० वा० बीरता
शरणागत, वि० शरण मेंआया

स

सुरवाणी, वि० देवताओं की बोली
समतूल, ना० वा० चौड़ाव लम्बाव में एकसा
सुपात्र, गु० वा० पु० बहुत योग्य वा अच्छा वर्त्तन
सज्जन, गु० वा० पु० अच्छामनुष्य
सूरता, ना० वा० बहादुरी
संयोग, ना० वा० मिलावट
सन्तोष, ना० वा० सबूरी
समाचार, ना० वा० हाल
समीप, ना० वा० निकट व नेरे
सहाय, वि० ना० पु० मदत
साध्यो, ना० वा० बनाया
सुवर्ण, वि० ना० पु० सोना
साक्षात, अ० हूबहू
सन्यासियन, ना० वा० संन्यासी
संचरनो, ना० वा० चलना
संतुष्ट, गु० वा० पु० जो बहुत न चाहे
सौभाग्यवती, गु० वा० स्त्री, सुहाग वाली
संजीवक, वि० ना० पु० जिलाने वाला
सुपथ, वि० ना० पु० अच्छारास्ता
सपरिये, क्रि० तैयार होना
सर्वश्व, वि० ना० पु० सबधन
साधु, गु० वा० सीधा मनुष्य
स्वामिभक्ति, वि० ना० स्त्री० मालिककी सेवा
सत्यवन्त, गु० वा० पु० सच कहनेवाला
सहगामिनी, वि० ना० स्त्री० साथ चलनेवाली
स्वेच्छा, वि० ना० स्त्री० अपने मनकी बात
सुदृष्टि, वि० ना० स्त्री० अच्छी नज़र
संतुष्टता, गु० वा० स्त्री० जिसके होनेसे मनुष्य कम चाहना करता है
समुद्रांत, समुद्र तक
सामर्थता, वि० ना० स्त्री जिससे

सब हो सकै
सात्विकी, गु० वा० पु० सतो-गुणी
सुकृ मारना, गु० वा० स्त्री सुकृ-मारी
सुसेवित, वि० ना० पु० जिसकी अच्छी सेवा हो
सुदर्शन, वि० ना० पु० विष्णुजी का हथियार, मनुष्य का नाम भी होता है
सुवर्ण, गु० वा० स्त्री० जिस का अच्छा रंग हो

ह

हीन, वि० ना० पु० कम
हृष्ट, गु० वा० पु० खुश
हेतु, वि० ना० पु० सबब
हिंडोरा, वि० ना० पु० हिंडोला वा हिंडोलना
हिरण्यक, ना० वा० नाम है एक पशुका
हर्षनों, क्रि० वि० प्रसन्न होना

क्ष

क्षुधित, गु० वा० भूखा
क्षमायुक्त, गु० वा० शान्ति सहित बरदाश्त करने वाला, सहने वाला
क्षमावन्त, गु० वा० शीलवन्त माफ़ करने वाला

ज्ञ

ज्ञाता, गु० वा० पण्डित, जो सब जानता होय

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
छन्दोर्णवपिंगल	किस्सा हातमताई	दोहावली	अपराधभञ्जनस्तो-
कविकुलकल्पतरु	अपूर्व्वकथा	बालाबोध	कायस्थकुलभास्कर
रसराज	किस्सागुलसनोवर	विद्यार्थीकीप्रथमपु-	कायस्थधर्म्मनिरूप
सतसई मूलतथास-	सहस्त्ररजनीचरित्र	किताबजंत्री	तथाछेरा
सभाविलास	रविन्सनकाइतिहास	गरिगतकामधेनु	मथुरासभा
तुलसी शब्दार्थप्र-	सीताहरण	लीलावती	भाषातत्वप्रकाश
भजनावली	सतीविलास	पटवारियोंकीपुस्त-	ज्योतिष
भेमरत्न	मुतफ़र्क़ात	वैद्यक भाषा	मुहूर्तगणपति
युगलविलास	शनिश्चरकीकथा	निघण्ट	मुहूर्त्तचिंतामणिका
चित्रचन्द्रिका	ज्ञानमाला	अमरविनोद	मुहूर्त्तचिंतामणिभा-
बारहमासाबलदेवप्र-	गोपीचंदभरतरी	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तमार्त्तण्डस-
मनोहरलहरी	कथाश्रीगंगाजी	औषधिसंग्रहकल्प-	मुहूर्त्तदीपक
गंगालहरी	अवधयात्रा	वल्ली	वृहज्जातकसटीक
यमुनालहरी	भरतरीगीत	अमृतसागरबड़ावल्ली	जातकालङ्कारस-
जगद्विनोद	दानलीलावनगलीला	वैद्यमनोत्सव	जातकाभरण
शृंगारबत्तीसी	दोहावली रत्नावली	ज्योतिषभाषा	होरामकरन्द
राग	गोकर्णीमहात्म्य	जातकचन्द्रिका	संस्कृतउर्दूटी-स-
रागप्रकाश	श्रीगोपालसहस्रनाम	जातकालंकार	मनुस्मृति
लावनी	कथासत्यनारायण	दैवज्ञाभरण	विष्णुहारीत
किस्सावैगैरह	हनुमानबाहुक	ज्ञानस्वरोदय	महिम्नस्तोत्र
नानार्थनामसंग्रहावली	जनकपच्चीसी	रमलसार	व्रतार्क
ब्रह्मसार	हरिहरभगुण निर्गुण	चन्द्रजात	याज्ञवल्क्यस्मृति
शिवसिंहसरोज	पद्मावली	संस्कृतकीपुस्तकें	संस्कृतभाषाटी-
भक्तमाल	बनयात्रा	लघुकौमुदी	अमरकोष
इन्द्रसभा	कायस्थवर्णनिर्णय	सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति
विक्रमविलास	बिहारवृन्दावन	अमरकोषतीनोंकास-	संध्यापद्धति
वेतालपच्चीसी	समरबिहारवृन्दावन	पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क
सिंहासनबत्तीसी	कल्पभाष्य	निर्णयसिन्धु	भगवद्गीताटी-हृ-वं-
पद्मावतीखंड	दरसी	सङ्कल्पशिरोमणि	भगवद्गीताटी-श्रा-गि-
शुकबहत्तरी	अक्षरावली	भगवद्गीतासटीक	गीतगोविंद
बकावलीसुमन	स्वयम्बोध	दुर्गापाठमूलतथास-	कथासत्यनारायण
चहारदरवेश	ज्ञानचालीसी	विष्णुभागवत	परमार्थसार

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शार्ङ्गधरसंहिता	भोज प्रबन्धसार	किष्किन्धाकाण्ड	२६ सन् १८६१ ई०
पाराशरी सटीक	भाषालघुव्याकरण	सुन्दरकाण्ड	मजमूआ एक्ट अव-
श्रीधरबोध सटीक	१भाग तथा २भा-	लंकाकाण्ड	धलगान २६ सन्
लघुजातक	भाषातत्वदीपिका	उत्तरकाण्ड	१८६८ ई०
षट पञ्चाशिका	भाषाचन्द्रोदय	गुटका १भा-२ख३	पुरखादारी २६
सामुद्रिक	भूगोलदर्पण	हिदायतनामामुर्दारी	सन् १८६६ ईसवी
गरुड पुराण	भूगोल तत्व	सान	वगैरह
रामविवाहोत्सव	दुलिहासतिमिरनाश-	पशुचिकित्सा	ऐक्ट स्टाम्य दस्ता वे-
सीरियल तालीम की	क १भाग २ व ३भा-	पट्टावस्तकेथी	ज़ात सन् १८६६ ई०
पुस्तकें	ग्रवध देशीय भूगोल	तथा क़ानूलियत	ऐक्ट नाम्बुक दारान्
संस्कृत	दुलिस्तानका दुतिह्य-	रजिस्टरशमिलखारि-	मक़रूज़ ग्रवध २४
ऋजुपाठ १भा-२ख३	हितोपदेशिका	जनुलवा मर्दसा	सन् १८७० ई०
धात्वर्णव	बाला बोधक	रजिस्टरहाज़िरीपाठ-	ऐक्ट चोपायों का
नागरीकेथी	पद्यसंग्रह	शाला	मद्दाख़लत बेजा २
वर्णमालाकेथी १भा-	भाषाकाव्यसंग्रह	क़ानून केथी	सन् १८७७ ई०
ख २भाग	कवित्तरत्नाकर १भा-	पटवारियोंके क़ायदे	ऐक्ट मजमूआज़ा-
तथाकेथी फ़ारसी	तथा २भाग	उर्दूकेथी महाजनीटिक	बिना फ़ौजदारी १०
नागरी	मंगलकोश	ढके लादुमन्सका ऐक्ट	सन् १८७२ ई०
हरूफ़ सुफ़र्दात	अंकप्रकाश	२ सन् १८७८ ई०	ऐक्ट मालगुज़ारी
अक्षरारम्भ	गणितप्रकाश १भा-	नागरी	मग़रबीवशिमाली
वर्णप्रकाशिका १भा-	तथा २भा-३ख४	ऐक्ट लगान मग़रबी	२६ सन् १८७३ ई०
तथा २भाग	गणितक्रिया	वशिमाली १० सन	तरमीम मजमूआ
सूर्य्यपुरकीकहानी	क्षेत्रप्रकाश	१८५६ ई०	ज़ाबिता फ़ौजदारी
धर्म्मसिंहकावृत्तांत	क्षेत्रचन्द्रिका २भा-	इंडियनपिनल कोर्ट	२१ सन् १८७४ ई०
शिक्षावली	सकील दायरा	मजमूआज़ाबिता फ़ौ-	तक़ावीके क़ायदे
शिशुबोध	रेखागणित १भाग	जदारी ऐक्ट २५ सन्	सवालवजवाब
पत्रहितैषिणी	तथा २भाग	१८६१ ई०	पुलिस
पत्रदीपिका	बीजगणित १भाग	ऐक्ट रजिस्टरी १० सन	ग्रवध रुहेलखंड
विद्याचक्र	रामायणतुलसीकृ-	१८६६ ई०	रेलवे का दस्तूरुल
विद्यांकुर	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	ग्रमल
पदार्थविद्यासार	ग्रयोध्याकाण्ड	१८६२ ई०	इति
पदार्थज्ञानविटप	ग्रारण्यकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प ग्रदालत